Excellant - Worth reading

॥ ओ३म् ॥

. ाला पुष्प सं० १०

ः लिंग पूजा क्यों ?

लेखक—

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला के समस्त ग्रन्थों के प्रणेता)

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

ख्रजा वेद प्रचारिणी सभा,

होशियारपुर

प्रकाशक

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

ार]   सन् १९७२ ई०   [मूल्य 2) ३५

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर 2889
पु. परिग्रहण क्रमांक .....

॥ ओ३म् ॥

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० १०

शिवलिंग पूजा क्यों?

(परिवर्धित संस्करण)

गुरुकुल कांगड़ी
सन्दर्भ पुस्तकालय 4819
परिग्रहण क्रमांक ....
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

लेखक—
(खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला के समस्त ग्रन्थों के प्रणेता)
आचार्य डा० श्रीराम आर्य
कासगंज (एटा), उ० प्र०

…लाल भारतीय

प्रकाशक
वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

संख्या 3680
विषय ......
दिनांक ....

दयानन्दाब्द १४८
पंचम बार] आर्य संवत १९७२९४९०७३ [मूल्य 2) ३५
सन् १९७२ ई०

श्री डा० श्रीराम आर्य के प्रसिद्ध ग्रन्थ शिवलिंग पूजा रहस्य के मुकद्दमे का विवरण

हमारे उक्त ग्रन्थ का प्रकाशन मार्च १९५९ में हुआ। पौराणिकों द्वारा घोर विरोध करने पर उत्तर प्रदेश सरकार ने अप्रेल सन् १९५९ में उसे जब्त कर लिया।

ग्रन्थ जब्ती की खबर समाचार पत्रों में ता० १-५-५९ को छपी। पुलिस दल ने तलाशी के लिए डाक्टर साहब के यहां ता० २६-५-५९ को छापा मारा।

ता० १-९-५९ को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा डाक्टर साहब के विरुद्ध मुकद्दमा जिला जज एटा की अदालत में दायर किया गया तथा बिना जमानती वारन्ट जारी हुआ।

ता० ७-९-५९ को डाक्टर साहब जमानत के लिए जज साहब के सामने उपस्थित हुए जिला जज ने जमानत न लेकर उनको जिला जेल भेज दिया तथा जमानत की अर्जी पर विचार करने के लिये ता० ९-९-५९ नियत करदी।

ता० ९-९-५९ को जिला जज ने सरकारी दावा खारिज कर दिया व मौखिक खेद प्रकट करते हुये डाक्टर श्रीराम जी आर्य को ससम्मान जेल से बरी कर दिया।

मुकद्दमा नं० १ सन् ५९-स्टेट बनाम डा० श्रीराम आर्य

ता० १८-९-५९ को प्रान्तीय सरकार ने पुनः जुडीशियल मजिस्ट्रेट श्री के० सी० सक्सेना की अदालत में केश दफा २९५ अ के अन्तर्गत दायर कर दिया।

राज्य सरकार की ओर से कुल १० गवाह इस केस में पेश किये गये जिनमें पांच पौराणिक विद्वान, ४ सरकारी गवाह मय

सुपरिन्टेन्डेट पुलिस के थे। तथा एक गवाह श्री ए० एम० कुलश्रेष्ठ महोदय—अन्डर सैक्रेटरी होम डिपार्टमेंट राज्य सरकार उत्तर प्रदेश के लखनऊ से गवाही देने आये थे। लगभग २५ पेशियां हुईं।

ता० २५-३-६० को मजिस्ट्रेट ने केस को सेशन सुपुर्द कर दिया। सेशन में केस की तारीख १०-११ व १२ अक्टूबर सन् ६० निश्चित की गई। परन्तु प्रान्तीय सरकार ने ता० ८-१०-६० को विशेष आदेश द्वारा मुकद्दमे को अदालत सेशन्स से वापिस ले लिया। विद्वान जज श्री एम० सी० गोयल महोदय ने डाक्टर श्रीराम आर्य को मुकद्दमे से बरी कर दिया।

इस ग्रन्थ में जिन ग्रन्थों के—

उद्धरण दिये गये उनकी सूची

१	यजुर्वेद	वैदिक यन्त्रालय अजमेर छापा
२	सामवेद	,,
३	कैवल्योपनिषद्	
४	श्रीमद्भागवत पुराण	गीता प्रेस गोरखपुर
५	विष्णु पुराण	,,
६	गरुड़ पुराण	बम्बई छापा
७	लिङ्ग पुराण	,,
८	सौर पुराण	आनन्दाश्रम पूना छापा
९	भविष्य पुराण	बम्बई
१०	शिव पुराण	,,

११	पद्म पुराण	कलकत्ता छापा
१२	नारद पञ्चरात्र	
१३	शब्द कल्पद्रुम कोष	कलकत्ता
१४	महाभारत	गोरखपुर
१५	देवी भागवत पुराण	काशी
१६	कुलार्णव तन्त्र	
१७	वृद्ध हारीत स्मृति	कलकत्ता छापा
१८	महाभागवत पुराण	गुजराती प्रेस बम्बई छापा
१९	शिव पुराण भाषा	न० कि० प्रेस लखनऊ
२०	धर्म संहिता	,,
२१	भाव प्रकाश निघण्टु	लाहौर
२२	केदार कल्प पुराण	बम्बई
२३	मत्स्य पुराण	न० कि० प्रेस लखनऊ
२४	ब्रह्मवैवर्त पुराण	कलकत्ता
२५	बाल्मीकि रामायण	बम्बई
२६	सुभाषित रत्न भण्डागार	काशी
२७	अत्रिस्मृति	इटावा
२८	संक्षिप्त स्कन्द पुराण	गोरखपुर
२९	चाणक्य नीति	आगरा
३०	अध्यात्मक रामायण	गोरखपुर
३१	मनुस्मृति	मेरठ
३२	स्कन्द पुराण	कलकत्ता
३३	कूर्म पुराण	कलकत्ता

ज़िला [illegible] प्रचारिणी सभा,
होशियारपुर

ग्रन्थ की विषयानुक्रमणिका

१	विषय सूची आदि	१ से ८ तक
२	प्राक्कथन	६
३	एक ईश्वर के अनेक नाम हैं।	१२
४	महादेव जी ब्रह्मा जी के बेटे थे।	१३
५	विष्णु व ब्रह्मा महादेव जी के बेटे थे।	१४
६	ब्रह्मा विष्णु व महादेव को एक मानने वाले नरकगामी होंगे।	१४
७	पुराण में शिव की महानता का वर्णन	१६
८	वाम मार्ग का भैरवी चक्र।	१८
९	सती अनसूया से व्यभिचार चेष्टा व लिंग पूजा का शिव को शाप।	२१
१०	जलहरी क्या है ?	२४
११	शिवलिंग शिव की मूत्रेन्द्रिय ही है।	२४
१२	जननेन्द्रियों की पूजा का विधान।	२५
१३	शिवलिंग व जलहरी का स्पष्टीकरण।	२५
१४	नाभि युक्त लिङ्ग पूजा का विधान।	२५
१५	शिव का स्वरूप योनिलिंग होगा भृगु ऋषि का शाप।	२६
१६	शिवलिङ्गों की पैदायश का इतिहास।	२९
१७	मन्दिरों की लूट का नमूना।	३१
१८	शिवलिङ्ग ब्रह्मचर्य में स्थित है।	३२
१९	शिवलिङ्ग के उपस्थेन्द्रिय होने का खुला सबूत।	३३
२०	शिवलिङ्ग के छू जाने वाली वस्तु अपवित्र होती है।	३५

२१	शिव का प्रसाद शराब मांस व विष्टा के समान है।	३६
२२	शराब मांस व रज वीर्य से शिवजी का पूजन करो।	३७
२३	मन्दिरों में देव पूजन व हवन का निषेध।	३७
२४	शिव के भक्त पाखण्डी व अछूत हैं।	३६
२५	शिव प्रसाद की निन्दा।	४०
२६	शिव को पूजने वाला ब्राह्मण शूद्र होता है।	४०
२७	शिव को पूजने वाले टट्टी के कीड़े बनेंगे।	४०
२८	शिव का स्वरूप	४१
२९	दुर्गा का स्वरूप	४३
३०	दुर्गा की उपाधियां	४४
३१	दारुवन की कथा शिव पुराण से	४५
३२	शिवलिङ्ग के साथ वृषण भी कटे थे	४८
३३	शिवजी दारुवन में विष्णु को औरत बनाकर साथ में ले गये थे।	४९
३४	दारुवन की कथा भाषा शिव पुराण से	५०
३५	शिवलिङ्ग पर बेल पत्र व जल चढ़ाने का रहस्य	५२
३६	सोना चांदी की उत्पत्ति शिव वीर्य से मोहिनी अवतार	५४
३७	शिव वीर्य से हनूमान का जन्म	५६
३८	शिव वीर्य से पारे की उत्पत्ति	५७
३९	पार्वती रज से गन्धक की उत्पत्ति	५७
४०	इलावृत देश का हाल	५८
४१	हर समय शिवजी कामिनी पाश में बंधे रहते हैं	५९
४२	शिव के पास अप्सरायें क्रीड़ा करती हैं	५९
४३	मर्दों को औरत बनने के शाप की कथा	६०
४४	शङ्कर का वेश्यानाथ अवतार व वेश्या गमन	६२
४५	आडिबक की कथा	६३

४६	शंकर का पार्वती को विष्णु से कुकर्म कराने का आदेश	६५
४७	शंकर का शिव दूती को अन्डकोष खाने का आदेश	६६
४८	शंकर का १०० वर्ष तक पार्वती से रति करना	६७
४९	शंकर का १००० वर्ष तक पार्वती से रमण करना	६७
५०	पुराणों में शंकर के लिए 'लम्पट व धूर्त' शब्द का प्रयोग	६९
५१	पुराण बनाने वालों को धूर्त बताया है	७०
५२	पुराण बनाने वालों को उपाधियां	७०
५३	भ्रष्ट लोग भागवत पढ़ते हैं	७०
५४	पौराणिक पण्डितों का सच्चा स्वरूप	७१
५५	पुराण पाठक का पूर्ण बहिष्कार करने का आदेश	७२
५६	पुराण में अंग्रेजी	७३
५७	पुराण शूद्रों के लिये बने	७३
५८	क्या शिवजी ने कामदेव को भस्म किया था	७४
५९	बैकुण्ठ और कैलाश की स्थिति का निर्णय	७४
६०	एक विचित्र मूर्ति	७६
६१	मूर्ति पूजा कम अक्लों के लिये है	७७
६२	पत्थर का लिङ्ग शूद्र पूजते हैं	७८
६३	मूर्ख लोग मूर्ति को ईश्वर समझते हैं	७८
६४	जलमय तीर्थ व मिट्टी के देवता नहीं होते	७८
६५	मूर्तिमें पूज्यबुद्धि व जलमें तीर्थबुद्धि मानने वाले गधे हैं	७८
६६	शिव पूजकों के लिये व्यवस्था	८०
६७	त्रिपुण्ड्रधारी पतित होता है	८०
६८	शिव भक्त पाखण्डी भ्रष्ट तथा नरकगामी है	८०
६९	शिवलिङ्ग पूजकों को घोर दुःख मिलेगा	८१
७०	क्या राम ने शिवलिङ्ग पूजा की थी	८४
७१	शंकर व पार्वती राम का चिन्तन करते हैं	८५

७२	शंकर द्वारा राम की स्तुति	८५
७३	रामचन्द्र जी के दर्शन से शिवजी तर गये	८५
७४	नैतिक पतन की पराकाष्ठा	८८
७५	शङ्कर का जुआ खेलना	८९
७६	रावण द्वारा शिवलिङ्ग की पूजा	९०
७७	हनुमान जी द्वारा शिवलिङ्ग पूजने की गप्प	९१
७८	राम के युग में मूर्ति पूजा नहीं थी	९१
७९	शिवलिङ्ग पूजा के महात्म्य व चेले फांसने का जाल।	९२
८०	उपसंहार-शिव माया के चमत्कार	९८-१०४
८१	ईश्वरोपासना का वैदिक प्रकार	१०४
८२	परिशिष्ठ (अनेक महत्त्वपूर्ण विषय निम्न प्रकार)	१०९
८३	शिवजी का ऋषि पत्नियों से व्यभिचार व मारपीट	११०
८४	शिव मूत्रेन्द्रिय की नकल की पूजा का आदेश	११०
८५	शिव उपस्थेन्द्रिय का लिङ्ग नाम पड़ने का कारण	११२
८६	शिव जी के चार मुँह का रहस्य	११७

प्राक्कथन

इस ग्रन्थ को लिखने का हमारा प्रयोजन किसी सम्प्रदाय विशेष पर चोट करना अथवा किसी का दिल दुखाना नहीं है, और न हम इस ग्रन्थ को किसी भी प्रकार की साम्प्रदायिक कटुता को उत्पन्न करने के उद्देश्य से प्रकाशित कर रहे हैं। वरन् हमारा लक्ष्य अपने हिन्दू समाज में वर्तमान धार्मिक कुरीतियों व अन्ध विश्वासों के प्रति अपने समाज को सजग करना है ताकि हमारे सहधर्मी लोग वह देख व समझ सकें कि किस प्रकार हमारे धर्माचार्य वर्ग ने हिन्दू-समाज की धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया है उसे ईश्वर के स्थान पर नर व नारी की जननेन्द्रियों की पूजा का भक्त बनाकर कुमार्गगामी बनाया है, उसके धार्मिक अन्ध-विश्वास के कारण मानवजीवन के पवित्र उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य से उसे विमुख बनाकर उसके जीवन को बर्बाद किया है आज जबकि स्वतन्त्र भारत में हमारी राष्ट्रीय सरकार भौतिक दृष्टि से देश के उत्थान में प्रयत्नशील है,बुद्धिमान व्यक्ति सामाजिक दोषों को दूर करने में अहर्निश प्रयत्नशील हैं। तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे समाज में से धार्मिक दोष भी दूर हो जावें और जनता धर्म के सही मर्म को समझ सके। दोषों को दूर करने के लिए उनको खोलकर जनता के सामने रखना परम आवश्यक होता है ताकि जनता की चेतना शक्ति जागृत हो व बुराइयों को लोग समझकर उनसे घृणा करने लगें। जब तक दोषों पर डटकर प्रहार नहीं किया जावेगा व बुराइयों से जनता को अवगत नहीं कराया जावेगा तब तक अन्ध विश्वासों

का विनाश नहीं होगा। रोगों को दूर करना ही खण्डन कहाता है। रोग दूर हो जाने पर ही स्वास्थ्यवर्धक औषधि का रोग ग्रसित शरीर पर प्रभाव होता है यह चिकित्सा शास्त्र का अटल सिद्धान्त है। पाखण्ड का खण्डन एवं सत्य बात का मण्डन करना यह मानव धर्म है। जो लोग अज्ञानतावश पाखण्ड खण्डन को बुरा कहते हैं वे चिकित्सा के मर्म को नहीं समझते हैं।

शिवलिङ्ग पूजा वास्तव में शङ्कर व पार्वती के गुप्तांगों की ही पूजा है, यह हमने दर्जनों प्रमाणों के आधार पर इस ग्रन्थ में सिद्ध किया है जिनका खण्डन पुराणों का मानने वाला कोई भी पौराणिक विद्वान नहीं कर सकता है। हिन्दू समाज के परम पूज्य फर्जी देवता शङ्कर के पतित जीवन की चन्द झांकियाँ आपको इसमें मिलेंगी और उनको पढ़कर आप देखेंगे कि क्या ऐसे गन्दे चरित्र वाले व्यक्ति की उपासना से किसी व्यक्ति या समाज का उत्थान हो सकता है। आज बाजार में शङ्कर व पार्वती, कृष्ण विष्णु आदि के कामोत्पादक सिनेमा स्टाइल के दूषित चित्र छाप-छाप कर बांटे व बेचे जा रहे हैं। शिव भक्तों को ही नहीं वरन् हमारी सम्पूर्ण हिन्दू (सनातनधर्मी) समाज के लिए चुनौती पेश करते हैं कि क्या हमारी सनातन धर्म सभायें या पौराणिक पंडितगण नशे में सो रहे हैं. जो इनके प्रकाशन के विरुद्ध कोई आन्दोलन नहीं करते हैं। हमें कहना है कि हमारी इस पुस्तक को पढ़कर यदि किसी हमारे पौराणिक बन्धु को कुछ अप्रिय लगे तो वे उन अश्लील पुराणों को जब्त कराने का उद्योग करें जिनके प्रमाणों के आधार पर इस ग्रन्थ की रचना हुई है। सनातन धर्म सभायें परम पूज्य अपने फर्जी देवताओं के अश्लील चित्र छापने वाली फर्मों के विरुद्ध आन्दोलन करें। योनि-लिंग पूजा के गन्दे स्थान शिव मन्दिरों को समाप्त करादें। जगन्नाथ

पुरी आदि के मन्दिरों को ठीक करावें जहां खुले व्यभिचार के नग्न चित्र सनातन धर्म के वाम-मार्गीय स्वरूप का प्रमाण उपस्थित करते हैं। हमारा यह ग्रन्थ पौराणिक जनता की आंखें खोलकर उसे हमारे प्राचीन धर्म में प्रचलित एक भयङ्कर भूल से सावधान करने का कार्य करेगा।,अतः इसका अधिक से अधिक प्रचार होना आवश्यक है। देश में खण्डन-मण्डन का कार्य बन्द हो जाने से सर्वत्र ही आजकल धार्मिक क्षेत्रों में पाखण्डों का प्रचार तेजी से हो रहा है आर्यसमाज के विद्वानों से हमें कहना है कि वे आर्य समाज की पवित्र वेदी पर से मतमतांतरों के पाखंडों के खण्डन व वैदिक सिद्धान्तों के मण्डन में लेखों व व्याख्यानों का अजय प्रवाह पुनः पूर्ववत जारी करें, जिसके लिये महर्षि ने समाज की स्थापना की थी। आर्य विद्वानों का अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना चाहिये। आशा है पाठक हमारे इस प्रयास (ग्रन्थ) का स्वागत करेंगे।

कासगंज (उ० प्र०)
दिसम्बर, १९६०

निवेदक
डा० श्रीराम आर्य

पाखण्ड खण्डन

एक ईश्वर के अनेक नाम हैं

पौराणिक (सनातन) धर्म में ब्रह्मा, विष्णु व महादेव तीन प्रमुख उपास्य देवता माने जाते हैं। कुछ पुराणों में कहीं-कहीं इन तीनों को एक ही माना है।

ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तीनों नाम एक ईश्वर के हैं।

गुणमय्या स्वशक्त्यास्य सर्ग स्थित्यप्य यान्विभो।
धत्से यदा स्वदृग्भूमन्ब्रह्म विष्णु शिवाभिधाम् ॥२३॥

(भागवत स्क० ८ अ० ७)

अर्थ—प्रभो ! अपनी गुणमयी शक्ति से इस जगत की सृष्टि स्थिति और प्रलय करने के लिए आप एक रस अनन्त होने पर भी ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि नाम धारण कर लेते हैं।

सृष्टि स्थित्यन्तकरणो ब्रह्मा, विष्णु, शिवात्मिकाम्।
स संज्ञायाति भगवान् एक एव जनार्दनः ॥६६॥

(विष्णु पुराण प्र० अंश अ० २)

अर्थ—वह एक ही भगवान जनार्दन जगत की सृष्टि स्थिति और प्रलय करने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव इन तीनों नामों को धारण कर लेते हैं।

इससे प्रकट होता है कि ये तीनों नाम एक सर्व व्यापक जगदाधार ब्रह्म के ही हैं। इन तीनों देवताओं का पृथक-पृथक कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। वैदिक साहित्य में एक ईश्वर को उसके गुण एवं कार्यों की अपेक्षा से अनेक नाम से पुकारा गया है।

तदेवाग्निस्तदा दित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रन्तद् ब्रह्म ता आपः सः प्रजापतिः ॥१॥

(यजु० अ० ३२)

सोमं राजानं वरुणमग्नि मन्वार भामहे।
आदित्यं विष्णु सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥
(सामवेद पूर्व० १-२)

स ब्रह्मा स विष्णु स रुद्रस्स शिवस्सोऽक्षरस्परमः स्वराट्।
स इन्द्रस्सकालाग्निस्सचन्द्रमाः ॥ (कैवल्योपनिषद)

अर्थात्—आदित्य वायु, चन्द्रमा शुक्र ब्रह्मा, आपः, प्रजापति सोम, राजा, वरुण, इन्द्र, कालाग्नि रुद्र, शिव, ओम स्वराट्, विष्णु सूर्यादि नाम ईश्वर के हैं। जगत का उत्पन्न कर्ता होने से ब्रह्मा, पालक होने से ईश्वर विष्णु हैं। कल्याणकारी होने से शिव नाम परमात्मा का है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने जगत्प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में प्रथम समुल्लास में ईश्वर के १०० नामों की व्याख्या में ये सभी नाम परमात्मा के सिद्ध किये हैं। परन्तु पौराणिक साहित्य में भागवत व विष्णु पुराण की एवं वेदों व उपनिषदों की उपरोक्त मान्यता के विपरीत वर्णन मिलता है। जिसमें इन सभी देवताओं का पृथक २ अस्तित्व माना है और एक दूसरे की निन्दा की है।

महादेव जी ब्रह्मा जी के बेटे थे

नरसिंह जी ने जो साक्षात् विष्णु के अवतार थे, कहा है—

मन्नाभि पङ्कजाज्जातः पुरा ब्रह्मा चतुर्मुखः।
तल्ललाट समुत्पन्नो भगवान् वृषभध्वजः ॥३१॥
(लिंग पु० पूर्वार्ध अ० ९६)

अर्थ—मेरी नाभि से कमल पैदा हुआ, उस कमल में से ब्रह्मा पैदा हुए। उस ब्रह्मा के माथे से शङ्कर जी का जन्म हुआ है।

इसके विपरीत अन्य स्थानों पर इसी पुराण में लिखा है कि-

विष्णु व ब्रह्मा महादेव जी के बेटे थे

अयं मे दक्षिणे पार्श्वे ब्रह्मलोक पिता महः ॥२॥
वामे पार्श्वे च मे विष्णु विश्वात्मा हृदयोद्भवः ॥३॥
(लिङ्ग पु० १६)

अर्थ—महादेव जी कहते हैं कि मेरे दाहिने पार्श्व से लोक पितामह ब्रह्माजी तथा बांये पार्श्व (पसली) से विश्व के आत्म स्वरूप हृदयोद्भवविष्णु जी पैदा हुये हैं।

एक प्रमाण और भी देखिए—

ब्रह्मा-विष्णु व महादेव को एक मानने वाले नरक गामी होंगे

विष्णु ब्रह्मादि रूपाणामैक्य जानन्ति ये मानवा।
ते यान्ति नरकं घोरं पुनरावृत्ति वर्जितम् ॥
(गरुण पु० ब्रह्मकाण्ड अ० ४)

अर्थ—जो लोग ब्रह्मा विष्णु व महादेव को एक ही मानते हैं वे मर कर घोर नरक में जाते हैं। उनका पुनर्जन्म भी नहीं होता है।

गरुण पुराण के श्लोक को पढ़ कर वे लोग अपनी आंखें खोल लें जो तीनों देवताओं को कुछ पुराणों के आधार पर एक ही बता दिया करते है। यदि गरुण पुराण की यह बात सच है तब तो भागवत व विष्णु पुराण बनाने वालों को घोर नरक मिला होगा। क्योंकि उन्होंने तीनों देवताओं को एक ही लिख दिया है।

इन चन्द उद्धरणों को देने से हमारा तात्पर्य यह है कि वैदिक साहित्य में ब्रह्मा विष्णु व महादेव को एक ही ईश्वर के भिन्न २

नाम माना है और भागवत व विष्णु पुराण ने भी किसी २ स्थल पर चाहे इन तीनों देवताओं को एक ही स्वीकार किया है, किन्तु अन्य पुराणों ने इन तीनों देवताओं का अस्तित्व पृथक २ ही माना है। हमें इससे कोई सरोकार नहीं कि इन तीनों में कौन किसका बाप है और कौन किसका बेटा है। यह देखना तो हमारे पौराणिक बन्धुओं के अपने घर की बातें है। इस लेख में हमें ब्रह्मा व विष्णु के सम्बन्ध में भी विचार नहीं करना है। हम आज अपने पाठकों को महादेव के सम्बन्ध में वास्तविक स्थिति से जानकारी कराना चाहते हैं। हमारे देश की धर्म प्राण हिन्दू जनता करोड़ों की संख्या में शिव भक्त बनी हुई है। अनेक पुराण एवं उप पुराण केवल शिव के वर्णन से भरे पड़े हैं। कहा जाता है कि शिवजी सपेरों के समान गले में सांपों को पहने रहते हैं, समुद्र मन्थन के बाद वे जहर को पी गये, और वह उनके गले में रखा है, इससे वह नील कण्ठ कहलाये। उन्होंने सती से विवाह किया। उसके मरने पर वे उसकी लाश को कन्धे पर डाल कर शोक में दिवाने हुए सर्वत्र भागते फिरे। विष्णु ने छिप २ कर लाश के अनेक टुकड़े कर दिये, वे टुकड़े जहां २ पृथ्वी पर गिरे वहां २ तीर्थ बन गये। इसी दीवानेपन में उन्होंने जो नांच किया, वही शिव का ताण्डव–नृत्य कहलाया। इसके बाद उन्होंने हिमालय राज की पुत्री पार्वती से विवाह किया। कामदेव को भस्म कर दिया। शिवजी के मस्तक से गंगाजी निकली हैं। दौज का चन्द्रमा शिवजी के सर पर निवास करता है। इत्यादि अनेक प्रकार की गाथायें उनके बारे में प्रसिद्ध हैं। इन्हीं कारनामों से प्रभावित होकर शिव के भक्त उनकी पूजा करते हैं। सौर पुराण में तो शिव के बारे में यहा तक लिखा है।

पुराण में शिव की महानता का वर्णन

शिव सामान्य वक्तारं शिव सामान्य दर्शिनम् ।
दृष्टवा स्नायात् सचैलं सन् शिव सामान्य सज्ञिनम् ॥
महेशस्यैव दासोऽयं विष्णुस्तेनानुकम्पितः ॥
श्रुतिस्मृति पुराणानां सिद्धान्तोऽयं यथार्थतः ।
इन्द्रोपेन्द्रादयः सर्वे महेशस्यैव किंकराः ॥
तेन तुल्यो यदा विष्णुं ब्रह्मा वा यदि गद्यते ।
षष्टिवर्ष सहस्त्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

(सौर पुराण अ० ४०)

अर्थ—जो मनुष्य शिवजी के समान विष्णु को देखता है व शिव के समान ब्रह्मा आदि देवताओं को बताता है, वह पापी है। उसे देखकर कपड़ों सहित स्नान करना चाहिए। विष्णु शिवजी का दास है, यह श्रुति, स्मृति, पुराणों का सिद्धान्त है। इन्द्रादि सभी देवता शिवजी के नौकर हैं। जो मनुष्य विष्णु-ब्रह्मा आदि को शिवजी के समान कहता है, वह ६० हजार साल तक मर कर पाखाने का कीड़ा बनेगा।

शिवजी की श्रेष्ठता प्रगट करने व अन्य सभी देवताओं की तुच्छता दिखाने के लिए कितने प्रबल शब्दों का प्रयोग किया गया है, यह पाठक ऊपर के प्रमाण में देखें। तीनों देवताओं को एक ही बताने वाले हमारे पौराणिक भाई भी अब कभी आगे मुंह खोलने का साहस न करें, वर्ना उन्हें पाखाने का कीड़ा बनना पड़ेगा अस्तु—

ऐसे महान् पौराणिक देवता की ऐसी प्रशंसा देखकर प्रत्येक समझदार व्यक्ति के हृदय में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब पौराणिक शास्त्रों में शिवजी की पूजा का विधान किया

गया तो अन्य देवताओं के समान उनके सर, धड़ या पैरों की पूजा छोड़कर उनकी उपस्थेन्द्रिय 'शिवलिंग' को ही क्यों पूजा जाता है। अन्य देवताओं की मूर्तियों की अपेक्षा शिवलिंग में ही क्या विशेषता है, जो सारा शिवोपासक सनातनी संसार उसकी उपासना में तल्लीन है, जब कि मूत्रेन्द्रिय किसी की भी पूजना या छूना संसार में कोई शराफत की बात नहीं है।

वास्तविक बात तो यह है कि महाभारत के युद्ध के बाद जब नाना प्रकार के मतों पन्थों का प्रादुर्भाव हुआ, एक ईश्वर के स्थान पर बहु देवतावाद की मान्यता व उनकी उपासना का प्रचार हुआ, स्वार्थ वश ब्राह्मण वर्ग ने अशिक्षित जनता को धर्म के नाम पर नाना प्रकार के ढोंग रच कर लूटना खाना प्रारम्भ किया। तो देश में दुराचारी लोगों के द्वारा एक शिश्नोपासक (मूत्रेन्द्रिय की उपासना करने वाले) वाम मार्गीय सम्प्रदाय का प्रसार हुआ। वैदिक आदर्शों के सर्वथा विपरीत व्यभिचार को ही अपना आदर्श मानने वाले, मद्य-मांस व मैथुन में रत रहने वाले इस वाम मार्गीय सम्प्रदाय ने शिव नाम के फर्जी देवता की कल्पना की, उसके नाम पर नाना प्रकार की मिथ्या कथायें गढ़ीं और तत्सम्बन्धी लिंग-शिव आदि पुराणों की रचना कर डाली। संस्कृत भाषा का उस समय देश में पण्डित वर्ग में प्रचार था। अतः शास्त्रों के नाम पर छन्दोबद्ध पुराणादि ग्रन्थों को बनाने में कठिनाई नहीं हुई। वैष्णवों ने विष्णु की प्रशंसा में पुराण बनाये तो शैवों ने शिव की प्रशंसा में अपनी मान्यता के आधार पर साहित्य तैयार कर दिया। अन्ध विश्वासी देश की जनता ने उनका अन्धानुकरण प्रारम्भ कर दिया। और यह अन्ध परम्परा अब तक देश में देवतावाद की पूजा के रूप में चली आ रही है। कोई भी आंख खोल कर यह नहीं देखता कि शिव लिंग को

पूजना धर्म है या पाप, उस पर जल चढ़ाना उचित है या अनुचित जहां देखो शिवलिंग पूजने को मन्दिर खड़े हैं, और स्त्री पुरुष धुआंधार उस पर सर पटकते रहते हैं। आज हमें अपने पाठकों को सनातन धर्म के ही मान्य शास्त्रों से शिव-लिंग पूजा का सम्पूर्ण रहस्य बताना है। हमारा उद्देश्य किसी के दिल को दुखाना नहीं है वरन् अपनी वैदिक धर्मी जनता में से मूत्रेन्द्रिय की पूजा के इस गन्दे आडम्बर को भ्रष्टाचार को दूर करना है और धर्म प्राण अपनी हिन्दू जनता को यह तथ्य बताना है कि ईश्वर के स्थान पर हमारे स्वार्थी अन्ध विश्वासी धर्माचारियों ने क्यों नारी के गुप्तांग सहित शिव लिंग की पूजा जारी कराई है। पौराणिक साहित्य के स्वाध्याय से हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि भारत के दक्षिण प्रदेश में सर्व प्रथम वाम मार्ग का उदय हुआ था। मद्य मांस व मैथुन उनके सम्प्रदाय का मूल आधार था। उन्होंने अपने देवता शिव की उपस्थेन्द्रिय की पूजा की अपने व्यभिचार प्रधान धर्म के प्रचार का साधन बनाया था।

वाम मार्ग का भैरवी चक्र

वाम मार्गीय सम्प्रदाय का प्रचार आज भी बिहार, बंगाल, आसाम व उड़ीसा प्रदेशों में पाया जाता है। इनके सामूहिक कार्यक्रम बन्द स्थानों में होते हैं जिनमें इसके सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों को प्रविष्ट नहीं किया जाता है। बहुत बड़े कमरे में इनका कार्यक्रम होता है। सभी सदस्य मर्द जोड़े के उसमें भाग लेते हैं। बिना स्त्री वाले को शामिल नहीं करते हैं। सर्व प्रथम मध्य में एक वेदी बनाई जाती है। उसके ऊपर एक घड़ा रखते हैं। घड़े पर नारियल रखते हैं। उपस्थित समूह में से कोई भी एक जोड़ा स्त्री व पुरुष सर्वथा नग्न हो जाते हैं वे अपनी

उपस्थेन्द्रियों को शराब से धोकर स्वच्छ करते हैं। पुरुष नारी के गुप्तांग की पूजा चावल आदि से करता है। नारी नर के गुप्तांग की पूजा करती है। सभी लोग ह्रीं २ क्लीं २ आदि का जाप करते हैं। पूजा के बाद शराब का एक एक पैग (प्रायः दो दो तोला शराब का) सबको मिलता है। सभी स्त्री पुरुष उसे पीते हैं। बाद को मांस मिलता है सभी खाते हैं। फिर दूसरी बार शराब मिलती है। फिर तीसरी बार मछली व शराब मिलती है। फिर दही-बड़े आदि मिलते हैं। फिर चौथी बार शराब मिलती है। एक बार पुनः पांचवी बार शराब का दौर चलता है। इस प्रकार मद्य मांस मीन (मछली) मुद्रा (पकोड़े) यह चार मकार हुए। इस सबके बाद रोशनी बन्द कर दी जाती है, और रात भर मैथुन का क्रम जारी रहता है। यह मद्य, मांस, मीन, मुद्रा व मैथुन वाम मार्गीय के धर्म के मूल पञ्च मकार कहलाते हैं। जिस पुरुष व स्त्री के गुप्तांग का पूजन होता है वे दोनों साधक व साधिका कहलाते हैं। मैथुन क्रम के दो रूप होते हैं। व्यक्तिगत एवं समष्टिगत व्यक्तिगत में हर जोड़ा अपने तक सीमित रहता है। समष्टिगत में सारी स्त्रियों की चोलियां उतरवा कर एक घड़े में डाल कर डंडे से घुमा दी जाती हैं। फिर हर आदमी उसमें हाथ डालकर एक चोली निकाल लेता है। जिस स्त्री की चोली जिस पुरुष के पास पहुंचती है वह रात भर उसी के पास रहती है। प्रातःकाल होने पर यह समारोह विसर्जित हो जाता है और हर जोड़ा अपने असली जोड़े से मिल जाता है। बनारस आदि जगहों में भी जो शिवजी के गढ़ हैं। इसकी शाखायें लगती हैं।

वाम मार्ग का स्वरूप प्रकट करने के लिए यह श्लोक काफी होंगे।

'मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुन मेवच।

एते पंच मकारा: स्युर्मोक्षदा हि युगे २ (कालीतन्त्र)
मातृयोनि परित्यज्य विहरेत सर्वयोनिषु ॥
(महनिर्वाण तन्त्र)

शराब, मांस, मछली, पकोड़े, तथा मैथुन ये पञ्च मकार हैं, जो मोक्ष देने वाले हैं। माता को छोड़ कर के प्रत्येक स्त्री से काला मुंह किया जा सकता है।

इतने ही से वाम मार्ग की असलियत पाठक समझ सकते हैं। व्यभिचार करते समय वाम मार्गी अपने को भैरव व स्त्री को भैरवी बताते हैं।

भारत के प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वानों ने भी बड़ी खोज के बाद यह निष्कर्ष घोषित किया है कि शिव द्राविड़ों का देवता था। जितनी भी मूर्तियां भारत के मूर्ति पूजकों द्वारा देवताओं की गढ़ी गई हैं, केवल शिव की ही ऐसी मूर्ति उनमें मिलती है जो सर्वथा नग्नावस्था में उपस्थेन्द्रिय का प्रदर्शन करती हुई दिखाई देती है। मथुरा में मसानी रोड पर गौकर्ण महादेव के मन्दिर की मूर्ति, काशी में नेपाल महाराज का मन्दिर जगन्नाथपुरी के मन्दिर व उत्तर प्रदेश के झांसी जिले में खजुराहो के मन्दिर में नर व नारी के सम्भोग करते हुए अश्लील आसनों से युक्त मूर्तियां आज भी उस वाम मार्गीय व्यभिचार प्रधान सभ्यता के गन्दे अवशेषों के नमूने के स्वरूप में देखी जा सकती हैं। भारतीय सभ्यताभिमानी राष्ट्रीय सरकार भी इन भ्रष्टाचार के प्रचारक गन्दे मन्दिरों का संशोधन करने का साहस नहीं कर सकती है, यह कितने दुःख की बात है।

उस मध्य काल में आज से प्रायः २॥ हजार वर्ष पूर्व के समय में वाम मार्गियों ने अपने गन्दे आदर्शों को प्रमाणिक बनाकर जनता को सत्य मानने का प्रभाव डालने के लिए अनेक प्रकार

की कहानियां गढ़-गढ़ कर पुराणों में देवताओं के कार्य, कलापों के रूप में लिख डाली थीं। जनता को शास्त्रों एवं देवताओं के नाम पर खूब बहकाया गया। जो पाप के प्रति शङ्का व भय जनता में था उसे पाप युक्त कार्य-कलापों को आदर्श में दिखाकर जनता को पाप के भय से मुक्त कर दिया गया। जिस कर्म को देवता करते हों तो वह पाप कैसे हो सकता है? महापुरुषों के चरित्र तो सदैव अनुकरणीय होते हैं, इस प्रकार का विश्वास जनता में पण्डित वर्ग ने पैदा करा दिया। व्यभिचार को पाप न माना जावे, इसके लिये ब्रह्मा, विष्णु, महेश व इन्द्रादि देवताओं की कल्पना की गई व उनको व्यभिचारप्रिय परस्त्री गामी बनाने के लिये सैकड़ों प्रकार की कहानियां गढ़ २ कर पुराणों की रचना की है। हम पुराणों में देखते हैं कि जितना पतित चरित्र की दृष्टि से इन त्रिदेवों को पुराणकारों ने शान के साथ प्रस्तुत किया है, कदाचित रावण व कंस का चरित्र अपेक्षा कृत कहीं अधिक श्रेष्ठ उन्होंने दिखाया है। हमारा विषय यहां शिव लिंग की पूजा के सम्बन्ध में तथ्य उपस्थित करना है। अतः हम विषयान्तर में न जाते हुये चन्द प्रमाण उन घटनाओं के प्रस्तुत करते हैं, जिनके आधार पर शिवलिंग पूजा की परिपाटी जारी की गई बताई जाती है।

कहा जाता है कि एक बार ब्रह्मा-विष्णु व महादेव ने अत्रि की पत्नी सती अनसुया से व्यभिचार की चेष्टा की थी। उसकी कथा संक्षेप में हम पुराण में से नीचे प्रस्तुत करते हैं।

सती अनसूया से व्यभिचार की चेष्टा व लिंग पूजा का शिव को शाप

कदचिद्भगवानत्रिर्गंगाकूलेऽनसूयया।
सार्धं तपो महत्कुर्वन्ब्रह्मध्यानपरोऽभवत् ॥६७॥

तदा ब्रह्मा हरिश्शंभु स्व स्ववाहन नास्थिताः ।
वरं ब्रूहिति वचनं तमाहुस्ते सनातनाः ॥६८॥
इति श्रुत्वा वचस्तेषां स्वयंभू तनयो मुनिः ।
नैवकिञ्चिद्वच प्राह संस्थितः परमात्मनि ॥६९॥
तस्य भावं समालोक्य त्रयो देवाः सनातनाः ।
अनसूयां तस्य पत्नीं समागम्यवचोऽब्रुवन् ॥७०॥
लिंग हस्तः स्वयं रुद्रो विष्णुस्तत्रसवर्धनः ।
ब्रह्मा काम ब्रह्मलोपः स्थितस्तस्यावशं गतः ।
रतिं देहि मदाधूर्णे नो चेत्प्राणांस्त्यजाम्यहम् ॥७१॥
पतिव्रताऽनसूया च श्रुत्वा तेषां वचोऽशुभम् ।
नैव किञ्चिद्वचः प्राह कोपभीता सुरान्प्रति ॥७२॥
मोहितास्तत्र ते देवा ग्रहीत्वा तांबलात्तदा ।
मैथुनाय समुद्योगं चक्रुर्मायां विमोहिता ॥७३॥
तदा क्रुद्धासती सा वै तां शशाप मुनि प्रिया ।
मम पुत्राभविष्यन्ति यूयं काम विमोहिताः ॥७४॥
महादेवस्य वैलिंग ब्रह्मणोऽस्य महाशिरः ।
चरणौ वासुदेवस्य पूजनीया नरैस्सदा ।
भविष्यन्ति सुरश्रेष्ठा उपहासोऽयमुत्तमः ॥७५॥
(भविष्य पुराण प्रति सर्ग ख० ४ अ० १७)

अर्थ—कभी भगवान अत्रि मुनि अपनी पत्नी अनसूया के साथ गङ्गा किनारे रहते थे और घोर तप करते हुए ब्रह्म के ध्यान में मग्न रहते थे ॥६७॥ वहां पर ब्रह्मा-विष्णु व महादेव अपनी अपनी सवारियों में बैठकर पहुंचे और उनसे सनातन श्रेष्ठ वचन बोले ॥६८॥ इनकी बातों को सुनकर मुनि ने कोई उत्तर न दिया और परमात्मा के ध्यान में तल्लीन रहे ॥६९॥ उनके भावों को देखकर तीनों देवता मुनि पत्नी अनसूया से समागम के लिए कहने लगे

॥७०॥ (लिङ्ग) अपनी उपस्थेन्द्रिय को (हस्तः) हाथ में धारण किये हुये। (स्वयं रुद्रो) महादेवजी (विष्णुस्तद्रसवर्धनः) विष्णु जी उसमें रस बढ़ाते हुए (ब्रह्मा) ब्रह्माजी (काम) कामदेव के प्रभाव से (ब्रह्मलोपः) ज्ञान का लोप करते हुए, मोहित होकर (स्थित तस्या वशं गतः) उसके वश में हो गये, असक्त होगये (रति देहि मदावृणें) हे मस्त आंखों वाली ! हमें अपने साथ रति करने दें। (नो चेत्प्राणांस्त्यजाम्यहम्) वरना हम प्राणों को छोड़ते हैं, तेरे सर हत्या देते है ॥७१। पतिव्रता अनसूया उनके इन अशुभ वचनों को सुनकर कुछ न बोली और तीनों देवताओं के प्रति बड़ी क्रोधित हुई ॥७१। (मोहितास्तत्रतेदेवाः) काम से मोहित हुए उन देवताओं ने (गृहीत्वा तां बलात्तदा) उसे बल पूर्वक पकड़ लिया (मैथुनाय समुद्योगं चक्रुर्माया विमोहितः) महादेवजी की माया से विमोहित होकर वे जबरदस्ती मैथुन की चेष्टा करने लगे ॥७३। (तदाक्रुद्धा ... प्रिया) तब क्रोधित होकर मुनि प्रिया अनुसूया ने उनको शाप दे दिया ।) मम विमोहिता) काम से विमोहित हुए तुम मेरे पुत्र बनोगे ॥७४॥ (महादेवस्य वैलिंग) महादेव की उपस्थेन्द्रिय । (ब्रह्मणोऽस्य महाशिरः) ब्रह्मा का यह बड़ा सर (चरणो वासुदेवस्य) विष्णु के चरण (पूजनीया नरैः सदा) मनुष्यों के द्वारा सदैव पूजे जाया करेंगे। और (भविष्यन्ति सुर श्रेष्ठा उपहासोऽयमुत्तमः) हे श्रेष्ठ देवताओ ! तुम्हारी सदा खूब मजाक बना करेगी ॥७५॥

पुराण के इस प्रमाण से स्पष्ट है कि अत्रि ऋषि के ब्रह्म के ध्यान में तल्लीन होने की व्यवस्था में अवसर पाकर गङ्गा के किनारे तीनों देवताओं ने बल पूर्वक पकड़ कर उनकी सती-साध्वी पत्नी अनुसूया के साथ बलात्कार की चेष्टा की थी उस पर मुनि पत्नी ने शिवजी को लिंग की पूजा का शाप दिया था और तभी

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक .....
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

से शिवजी की उपस्थेन्द्रिय की पूजा अनसूया के शाप के कारण प्रचलित हुई है। एक सती के साथ तीनों देवताओं की इस बेजा हरकत को कोई भी व्यक्ति कमीनी एवं पाप पूर्ण कहे बिना न रहेगा। अस्तु शिव लिंग पूजा का यह भी एक रहस्य हुआ।

जलहरी क्या है ?

शिव लिंग की मूर्ति के चारों ओर एक नाली सी बनी होती है इसे जलहरी कहते हैं। यह जलहरी वास्तव में क्या है, यह बहुत कम लोग जानते हैं। पौराणिक सिद्धांतानुसार जलहरी शिवलिंग के साथ पार्वती के गुप्तांग की प्रति मूर्ति (नकल) रूप में पूजी जाती है। इसके लिये पुराण का निम्न प्रमाण द्रष्टव्य है।

गिरिजां योनि रूपां च बाणं स्थाप्य शुभपुनः।
तत्र लिंगं च तत्स्थाप्यं पुनश्चैवाभिमन्त्रयेत् ॥३७॥
(शिव पु० कोटि रुद्र संहिता अ० १२)

अर्थ—(गिरजा) पार्वती के (योनि रूपां) नारी जनेन्द्रिय के आकार की (शुभं बाणं स्थाप्यं) शुभ जलहरी बनाकर (पुनः) फिर (तत्र लिंगं) उसमें शिव उपस्थेन्द्रिय को (तत्स्थाप्य) स्थापित करके (पुनश्चैवाभि मंत्रयेत्) फिर उसकी पूजा करो।

शिव लिंग शिव की मूत्रेन्द्रिय है

प्रत्यक्ष मिह देवेन्द्र पश्य लिंगं भगान्वितम्।
देवदेवेन रुद्रेण सृष्टि संहार हेतुना ॥२२७॥
(महा० अनु० पर्व अ० १४)

अर्थ—हे देवेन्द्र ! (सृष्टि संहार हेतुना) सृष्टि और संहार के कारण भूत (देव देवेन्द्र रुद्रेण) देवाधि देव शिवजी ने (लिंग भगान्वितम्) पुरुष व नारी जननेन्द्रिय से चिन्हित लिंग मूर्ति धारण की है (प्रत्यक्ष मिह पश्य) उसे आप प्रत्यक्ष देखें।

इस प्रमाण से स्पष्ट है कि शिव लिंग की मूर्ति नर व नारी की जननेन्द्रियों की संयुक्त प्रति मूर्ति (नकल) है।

जननेन्द्रियों की पूजा का विधान।

भगेन सहितं लिंगं भगं लिंगेन संयुतम्।
इहामुत्र च भोगार्थं नित्य भोगार्थ मेव च ॥१०४॥
भगवंतं महादेवं शिव लिंगं प्रपूजयेत् ॥१०५॥
स्वचिन्ह पुजनात्प्रीत श्चिन्ह कार्यं नवीयते।
चिन्ह कार्यं तुजन्मादि जन्मादयं विनिवर्तते ॥१०८॥
(शिव० विन्धे० सं० अ० १६)

अर्थ—नारी जननेन्द्रिय सहित पुरुष जननेन्द्रिय और पुरुष जननेन्द्रिय सहित नारी जननेन्द्रिय यही दोनों भोग के निमित्त और नित्य भोग के लिए हैं ॥१०४॥ भगवान महादेव को लिंग रूप से पूजन करे ॥१०५॥ शिवजी अपने पुरुष चिन्ह को पूजने से प्रसन्न हो जाते है। इससे चिन्ह कार्य नहीं प्राप्त होता है (अर्थात् मोक्ष हो जाती है) चिन्ह कार्य जन्मादि का कारण है। चिन्ह (लिङ्ग) पूजने से जन्मादि से निवृत्ति हो जाती है ॥१०८॥

शिव लिंग व जलहरी का स्पष्टीकरण

लिंगवेदी महादेवी लिंगं साक्षान्महेश्वरः ॥१३॥
तयोः सम्पूजना देव सं च सा समर्चितौ ॥१४॥
(शिव० पु० वायु सं० उत्तर खं० अ० ३४)

अर्थ—लिङ्गवेदी (जलहरी) पार्वती है और लिङ्ग साक्षात् शिवजी हैं। इनके पूजन से दोनों का पूजन हो जाता है।

शिव नाभि युक्त लिंग पूजा का विधान

शिव नाभि मयं लिंगं प्रति पूज्यं महर्षिभिः।

श्रेष्ठञ्च सर्व लिंगभ्यस्तस्मात् पूज्यं विशेषतः ॥

शब्द कल्पद्रुम कोष लिंग शब्द की व्याख्या पृ० २२० खं० ४)

अर्थ—(शिव नाभि मयं लिंग) शिव की नाभि से युक्त लिंग (प्रति पूज्य महर्षिभिः) महर्षियों द्वारा पूजा जाता है। (श्रेष्ठञ्च सर्व लिंग) वह सब लिंगों में श्रेष्ठ होता है। (तस्मात्) इसलिये (पूज्यं विशेषतः) विशेष रूप से उसका पूजन करना चाहिए। इससे स्पष्ट है कि केवल शिव लिंग पूजने की अपेक्षा शिव की नाभि युक्त उपस्थेन्द्रिय की पूजा विशेष उपयोगी होती है।

इन प्रमाणों से स्पष्ट हो गया कि शिव लिंग पूजा के रूप में नर व नारी की उपस्थेन्द्रियां शिवलिंग व जलहरी के रूप में मन्दिरों में पूजी जाती हैं। पाठक पूछ सकते हैं कि शिव को उपस्थेन्द्रिय पूजा का शाप अनुसूया से व्यभिचार की चेष्टा करने पर लगा था, पर पार्वती को उसके साथ क्यों घसीटा गया है। इस विषय में पुराणों में एक विस्तृत कथा दी है। हम संक्षेप में उस कथा को यहां उद्धृत करते हैं।

शिव का स्वरूप योनि लिंग होगा—भृगु का शाप

दिलीप उवाच—महा भागवत श्रेष्ठो ! रुद्रस्त्रिपुर घातकः।
कस्माद्विगर्हितं रूपं प्राप्तवान् सहभार्यया ॥
योनि लिङ्ग स्वरूपञ्चकथं स्यात् सुमहात्मनः।
पञ्चवक्त्रश्चतुर्बाहुः शूल पाणिस्त्रिलोचनः ॥

अर्थ—राजा दिलीप ने वशिष्ठ से प्रश्न किया—'त्रिपुर दैत्य को मारने वाले पांच मुँह, चार हाथ व तीन नेत्र वाले त्रिशूल धारी शिव का पार्वती सहित गर्हित स्वरूप योनि लिङ्ग कैसे हो गया ? इस शङ्का का समाधान कीजिए।

इस पर वशिष्ठ जी ने बताया कि एक बार मुनियों की बैठक में यह निश्चय हुआ था कि इन तीनों देवताओं में कौन-सा देवता

सत्वगुण वाला है, इसका निर्णय किया जावे। इसके लिये सबने भृगु ऋषि को नियत किया, और उन्हें तीनों देवों ब्रह्मा, विष्णु व महादेव की परीक्षा लेने को भेजा। इस निश्चय के अनुसार भृगु ऋषि के शङ्कर के यहां जाने का वर्णन पुराणकार ने जो किया है उसे हम संक्षेप में यहां देते हैं।

एव मुक्तोभृगुस्तूर्ण कैलासं मुनि सत्तमः।
जगाम वायु मार्गेण यत्रास्ते वृषभध्वजः ॥२६॥
गृह द्वार मुपागम्य शंकरस्य महात्मनः।
शूल हस्तं महारौद्रं नान्दिं अब्रवीद्विजः ॥२७॥
सप्राप्तोअहं भृगुविप्रो हरं द्रष्टुं सुरोत्तमम्।
निवेदयस्व मां शीघ्रं शंकराय महात्मने ॥२८॥
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा नन्दी सर्व गणेश्वरः।
उवाच पुरुषं वाक्यं महर्षिमगितौ जसम् ॥२९॥
असान्निध्यः प्रभोस्तस्य देव्या क्रीडति शंकरः।
निवर्त्तस्व मुनिश्रेष्ठ! यदि जीवितुमिच्छसि।३०।
एवं निराकृतस्तेन तत्राष्ठिन्महातपाः।
बहूनि दिवसान्यस्मिन् गृह द्वारि महेशितुः।
तत्र क्रोध समाविष्ठो भृगुशापमदान्मुनिः ॥३१॥
निविष्टस्तमसा मूढो मां न जानाति शंकरः।
नारी संगम मत्तोऽसौ यस्मान्मामवमन्यते ॥३२॥
योनि लिंग स्वरूपं वैरूपं तस्मात्तस्य भविष्यति ॥३३॥
रुद्रभक्ताश्चये लोके भस्म लिङ्गास्थिधारिणः।
ते पाखण्डत्वमापन्ना वेद वाह्या भवन्तुवै ॥३६॥

(पद्म पुराण उत्तर खण्ड अ० २५५ कलकत्ता)

भावार्थ—ऋषियों से विदा होकर भृगु ऋषि कैलाश पर गये जहां महादेव जी रहते थे। शंकर के द्वार पर पहुंच कर भृगु जी ने शूल धारण किये महारौद्र रूप नन्दी को देखा। और वे उससे

बोले। मैं भृगु ब्राह्मण हूँ, शङ्कर जी को देखने (मिलने) आया हूँ। अतः मेरे आने की बात शङ्करजी से जाकर शीघ्र ही कह दो। नन्दी उनके वचन सुनकर उनसे बोला कि शंकर जी एकांत में पार्वती के साथ क्रीड़ा (रमण) कर रहे हैं। अतः तुम जीवित रहना चाहते हो तो यहां से तुरन्त भाग जाओ। इस प्रकार नन्दी की बात सुनकर भृगुजी वहीं शंकर के द्वार पर बैठ गये, और बहुत दिनों तक बैठे रहे। बहुत दिन होने पर भी जब उनसे शिव जी नहीं मिले तो अत्यन्त क्रोधित होकर भृगु जी ने शंकर को शाप दिया कि तामस में फंसा हुआ शंकर मुझे नहीं जानता है, वह नष्ट हो जावेगा। नारी के साथ समागम में तल्लीन शंकर ने मेरा अपमान किया है अतः उसका स्वरूप भी योनि लिङ्ग हो जावेगा, शंकर के भक्त लोग जो लोक में भस्म लिङ्ग व हड्डी धारण करेंगे वे सब घोर पाखण्डी एवं वेद से बहिष्कृत होंगे।

हमने ऊपर के प्रमाण में देखा कि शिव की 'योनि लिङ्ग' स्वरूप में पूजा होने का कारण भृगु ऋषि का शाप है जो उन्होंने शिव को पार्वती के साथ रमण में तल्लीन होने के कारण दिया था। महाराजा दिलीप के प्रश्न के उत्तर में शिव के इस गर्हित स्वरूप का यह एक मुख्य कारण बताया है। अतः शिव लिङ्ग पूजा के द्वारा शिव की जो पूजा की जाती है वह वास्तव में शिव पार्वती की जननेन्द्रियों की ही पूजा होती है शिव लिंग व जलहरी शिव व पार्वती की जननेन्द्रियों की ही प्रति मूर्ति हैं, यह इस प्रमाण से भी स्पष्ट हो जाता है। कितनी लज्जा की बात है कि लोग इस वास्तविकता को न समझ कर शिव लिंग पूजा के रूप में इस भ्रष्ट जननेन्द्रिय पूजा की वाम मार्गीय सभ्यता का अन्धानुकरण कर रहे हैं, जो कि देश में वास्तव में दुराचार के प्रचार के लिये प्रारम्भ की गई थी। इसी सम्बन्ध में पौराणिक साहित्य

में एक कथा और भी आती है कि जगत में जो असंख्य शिव-लिङ्ग मिलते हैं, वह कैसे पैदा हुए हैं। कथा इस प्रकार है—

शिव लिंगों की पैदायश का इतिहास

संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'शब्द कल्पद्रुम कोश' चतुर्थ काण्ड खण्ड १ व २ में लिंग शब्द की व्याख्या में लिखा है कि राजा दक्ष की पुत्री सती से विवाह होने के बाद—

गताः सर्वे महेशोऽपि सत्या सह तदा ग्रहम् ।
जगामरेमे सत्या च चिरं निर्भर मानसः ॥
अथ काले कदाचित्तु सत्या सह महेश्वरः ।
रेमे न शेके तं सोढु सती श्रान्ता भवत्तदा ॥
उवाच दीनयावाचा देवदेव जगद्गुरुम् ।
भगवन्नहि शक्नोमि तवभारं सुदुः सहम् ॥
क्षमत्व मां महादेव कृपां कुरुजगत्पते ।
निशम्य वचनं तस्या भगवान् वृषभध्वजः ॥
निर्भरं रमण चक्रे गाढ़ निर्दय मानसः ।
कृत्वा सम्पूर्ण रमण सती च त्यक्त मैथुना ॥
उत्थानाय मनश्चक्रे उभयोस्तेजः उत्तमम् ।
पपात धरणीं पृष्ठे तैः व्याप्तऽखिलं जगत ॥
पाताले भूतले स्वर्गे शिव लिंगास्तदाभवन् ।
तेनभूत्वा भविष्याच्च शिवलिंगाः सयोनियः ॥
यत्र लिंग तत्र योनिर्यत्र योनिस्ततः शिवः ।
उभयोश्चैव तेजोभिः शिव लिंग व्यजायत ॥
(इति शिव लिंगोत्पत्ति कथनमिति नारदपंचरात्रान्तर्गत
तृतीय रात्रे प्रथमाध्याये नारद ब्रह्म सम्वादः)

अर्थ—सती के विवाह के बाद सब देवता गण अपने-अपने

घरों को चले गये और शंकर भी अपनी चिरकाल की मनोकामना पूर्ण करने के लिये सती के साथ रमण करने के लिए अपने गृह में प्रविष्ट हो गये। उस काल में जब शंकर के साथ रमण करने से सती थक गईं। तो शिवजी से बोलीं, हे जगत गुरु! आपके दुःसह बोझ को मैं सह नहीं सकती हूँ, हे जगत्पते! मुझे क्षमा करो। तब महादेव जी ने बड़ी निर्दयता के साथ अपने मन को सन्तुष्ट करने के लिए खूब रमण किया। सम्पूर्ण रमण कर चुकने पर छोड़ी हुई सती ने उठने की इच्छा की तो दोनों का उत्तम शुक्र पृथ्वी पर गिर पड़ा, और उससे सारा जगत व्याप्त हो गया। उस वीर्य से तीनों लोकों में योनियों समेत शिव लिंग पैदा हो गये तथा आगे होंगे, वे योनियों सहित इसी तेज से पैदा हुए हैं तथा होंगे, (यत्र) जहां (लिंग) नर उपस्थेन्द्रिय होगी (तत्र योनिः) वहां नारी जननेन्द्रिय होगी तथा (तत्र योनिः ततः शिवः) जहां नारी जननेन्द्रिय होगी वहां शिव लिङ्ग अवश्य होगा (उभयोश्चैव तेजोभिः) इन दोनों के तेज से ही (शिव लिंग व्यजायत) शिव लिंग उत्पन्न हुए हैं।

इस प्रकार जगत में जो शिव लिंग मिलते हैं उनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में पौराणिक शास्त्रकारों ने उपरोक्त कथा अपने ग्रन्थों में लिखकर यह बताया है कि उनकी उत्पत्ति भी शिव व सती के समागम के पश्चात् हुये शुक्र व रजः पात के तेज से हुई है। गत पृष्ठों में हमने बताया है कि शिव लिंग वास्तव में शिव की उपस्थेन्द्रिय तथा जलहरी निश्चित रूप से पार्वती की जननेन्द्रिय की प्रति मूर्ति है। भारत का कोई भी पौराणिक विद्वान इन प्रमाणों का खण्डन नहीं कर सकता है। जो लोग शिव लिंग को ज्योतिर्लिंग व जलहरी को कारण सहित प्रकृति बता बैठते हैं, वे जनता को धोखे में डालने की गलत बात कहते हैं। उपरोक्त

प्रमाणों का दूसरा अर्थ किया ही नहीं जा सकता है। भारत में जो पुरानी मूर्तियां मिली हैं, उनमें मध्ययुग की प्राचीन शिव प्रतिमायें भी मिलती हैं जिनमें शिव की उपस्थेन्द्रिय की पूजा का विधान स्पष्ट प्रतीत होता है। हिन्दुओं के प्राचीन तीर्थ जगन्नाथ पुरी आदि के मन्दिरों में उस बर्बर पौराणिक सभ्यता के युग की नग्न प्रतिमायें नर व नारी की शिश्नेन्द्रिय की पूजा का खुला प्रदर्शन करती हैं। जिन्हें देखकर प्रत्येक भारतीय सभ्यताभिमानी का सर लज्जा से नीचा हो जाता है, जिन्हें देखकर विदेशीय पर्यटकों (यात्रियों) ने भारतीय सभ्यता व संस्कृति को संसार की निगाह में काफी बदनाम किया है। परन्तु हमारे देश में धर्म के अन्ध भक्त लोग बजाय इसके कि इस उपस्थेन्द्रिय पूजा की गन्दी प्रथा को बन्द करें, उसके प्रचार के लिए निरन्तर शिव मन्दिर बनवाते जा रहे हैं। हमारे देश का करोड़ों अरबों रुपया जो शिक्षा व धर्म प्रचार आदि राष्ट्रोत्थान के कार्यों में व्यय किया जाना चाहिए था, इन 'मूत्रेन्द्रियों' की गन्दी पूजा के लिये शानदार मन्दिर बनवाने में उनके पीछे जायदादें लगाने में बरबाद किया जाता रहा है। जिन्हें देखकर मौहम्मद बिन कासिम महमूद गजनवी, तैमूरलंग जैसे विधर्मी एवं विदेशी सदा भारत भूमि पर आक्रमण करते व उसे लूटते रहे पर हमारे देश के पण्डित पुजारियों को भी समझ नहीं आई। आज भी इस ज्ञान-विज्ञान के युग में हमारे देश की जनता मूत्रेन्द्रियों की पूजा उपासना करने वाली बनी रहे यह कितने दुःख की बात है।

मन्दिरों की लूट का नमूना

सन् ७१२ में मौहम्मद बिन कासिम ने भारत पर आक्रमण किया और राजा और दाहिर को मार कर नरायण कोट का प्रसिद्ध मन्दिर लूटा था उसमें ४० देगें सोने की, जिनमें १७२००

मन सोना भरा था, ६०० सोने की विशाल मूर्तियां, जिनमें एक-एक मूर्ति ३०-३० मन की थीं, कई ऊँट भर कर हीरा, पन्ना, मोती, मणियां आदि लूट कर ले गया। इसके लगभग ३०० वर्ष बाद महमूद गजनवी ने नगरकोट का मन्दिर लूटा इसमें ७००८ सोना, २००८ चांदी, २०८ हीरे, मोती व जवाहिरात उसके हाथ लगे। अकेली एक जंजीर जिसमें घण्टा लटक रहा था, और जो ४०८ सोने की थी, सोमनाथ के मन्दिर में से हाथ लगी थी। इस मन्दिर से असंख्य हीरा मोती मणियां सोना, चांदी वह लूट कर ले गया इस प्रकार भारत के हजारों मन्दिर की न जाने कितने (काल्पनातीत) मूल्य का माल विदेशी आक्रमणकारी सदा लूट २ कर भारत से ले जाते रहे हैं। सोमनाथ के शिव मन्दिर के शिव लिङ्ग का एक टुकड़ा आज भी उसी समय का गजनी की मस्जिद की सीढ़ियों पर लगा है, जिस पर पैर रख कर नमाजी यवन मस्जिद में जाया करते हैं। और वह टुकड़ा उनके चरण स्पर्श किया करता है। मौहम्मद गौरी ने जब कन्नौज को लूटा तो १००० मन्दिर विध्वंस करके उनकी लूट का सोना, चांदी व जवाहिरात ४०० ऊँटों पर लाद कर अफगानिस्तान को ले गया था। भारत में विदेशियों द्वारा लूट का इतिहास इतना बड़ा है। कि उस पर एक स्वतन्त्र विशाल ग्रन्थ लिखा जा सकता है। हमने यहां चन्द नमूने मात्र पेश किये हैं।

शिव लिंग शिवजी की मूत्रेन्द्रिय ही है यह ऊपर के प्रमाणों से भली प्रकार सिद्ध है। हम महाभारत ग्रन्थ से दो प्रमाण इसकी पुष्टि में और देते हैं।

शिव लिंग ब्रह्मचर्य में स्थित है

नित्येन च ब्रह्मचर्येण लिंगमस्य यदास्थितम्।
महन्त्यस्य लोकांश्च प्रियं ह्येतन्महात्मनः ॥१५॥

विग्रहं पूजमेद्यो वै लिंगवापि महात्मनः ।
लिंगपूजायिता नित्यं महतीं श्रियमश्नुते ॥१६॥
ऋषयश्चापि देवाश्च गन्धर्वाप्सरसस्तथा ।
लिंगमेवार्चयंतिस्म यत्तदूर्ध्वं समास्थितम् ॥१७॥

(महाभारत अनुशासन पर्व अ० १६१)

अर्थ—महादेव की उपस्थेन्द्रिय सदा ब्रह्मचर्य में स्थित रहती है और उसको लोग पूजते हैं। महात्मा को यही प्रिय है। जो महात्मा की उपस्थेन्द्रिय को पूजता है, या महात्मा के शरीर को पूजता है वह बड़ी भारी सम्पति को पाता है। ऋषि और देवता गन्धर्व व अप्सरायें सदा उसी उपस्थेन्द्रिय को पूजते हैं जो सीधा ऊपर को खड़ा है।

इस प्रमाण में बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में बताया है कि शिवजी की उपस्थेन्द्रिय ब्रह्मचर्य में स्थित है। ब्रह्मचर्य का सम्बन्ध जनेन्द्रिय के संयम द्वारा वीर्य की सुरक्षा से है। अतः साधारण बुद्धि वाला मनुष्य भी यह समझ सकता है कि शिव लिंग शिवजी की मूत्रेन्द्रिय के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। हम इससे भी स्पष्ट प्रमाण एक और देते हैं।

शिव लिंग का उपस्थेन्द्रिय होने का खुला सबूत।

न शुश्रुम यदन्यस्यलिङ्गमभ्यर्चित सुरैः ॥२३०॥
ऋस्यान्यस्य सुरैः सर्वं लिङ्ग मुक्त्वा महेश्वरम् ।
अर्चयेऽचितपूर्वा ब्रूहियद्यस्ति ते श्रुतिः ॥२३१॥
यस्य ब्रह्मा च विष्णुश्च त्वं चापि सह देवतैः ।
अर्चयेथा सदालिंगं तस्माच्चेष्टत मोहितः ॥२३२॥
न पद्मांका चक्रांका न वज्रांका यतः प्रजाः ।
लिंगांका च भगांका च तस्मान्माहेश्वरी प्रजाः ॥२३३॥

देव्याः कारणरूप भावजनिताः सर्वा भगांका स्त्रियोः ।
लिंगे नापि हरस्य सर्व पुरुषाः प्रत्यक्ष चिह्नकृताः ॥२३४॥
पुल्लिगं सर्वं मीशानं स्त्री लिंगं विद्धि चाप्युमाम् ।
ताभ्यां तनुभ्यां व्याप्तं हि चराचर मिदं जगत् ॥२३५॥
(महाभारत अनुशासन पर्व अ० १४)

अर्थ—हमने नहीं सुना कि देवताओं ने किसी और की उपस्थेन्द्रिय की पूजा की हो। महादेव को छोड़ कर दूसरे किसकी उपस्थेन्द्रिय की पूजा सब देवताओं ने पूर्व काल में या अब की है, कहिये ! यदि आपने सुना हो। जिसकी उपस्थेन्द्रिय को ब्रह्मा विष्णु व आप सब देवताओं के साथ सदा पूजते हैं, इसलिए वही इष्टतम है। जिस कारण से प्रजापद्म, चक्र या वज्र चिन्ह वाली नहीं है। अपितु सारी प्रजा लिंग तथा भग चिन्ह से अङ्कित है इसलिए सारी प्रजा महादेव की है। देवी ने कारण रूप भाव से भग के चिन्ह से अंकित सब स्त्रियां पैदा की हैं। जितने पुलिङ्ग हैं वे सभी महादेव हैं, तथा जो स्त्री लिङ्ग हैं, वे सभी पार्वती हैं। इन दोनों के शरीर से सारा जगत व्याप्त है।

जगत में सारे ही पुरुष (नर) जो पुल्लिङ्ग होने का चिन्ह धारण करते हैं, वही चिह्न शिव लिंग है। अर्थात् शिव लिङ्ग शिव जननेन्द्रिय के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, यह बात इस प्रमाण से नितान्त स्पष्ट है। कितने आश्चर्य की बात है कि ब्रह्मा और विष्णु भी शिव उपस्थेन्द्रिय की पूजा किया करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह तीनों देवता कभी वाम मार्गीय हो गये होंगे और भैरवी चक्र में यह सारी ऊटपटांग हरकतें किया करते होंगे।

भगवान परम पवित्र है ऐसा संसार के सभी मतवादी मानते हैं। अतः जो भी वस्तु सनातनी भगवान की प्रतिमा को छू जाने,

वह भी अति पवित्र हो जानी चाहिये, यह सब मत परस्तों का विश्वास है। इसी प्रकार शिवजी यदि देवता हैं तो उनको छू जाने वाली वस्तु, उनका मन्दिर, उनके नाम प्रसाद आदि सभी परम पवित्र माना जाना चाहिये। किन्तु पुराणों में इसके विपरीत वर्णन मिलता है और उससे भी यही सिद्ध होता है कि शिव लिंग शिवजी की उपस्थेन्द्रिय के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं है। हम चन्द प्रमाण इस विषय में भी उपस्थित करते हैं।

शिव लिंग को छू जाने वाली वस्तु अपवित्र होती है

स्पृष्ट्वा रुद्रस्य निर्माल्यं सवासाआप्लुतः शुचिः।

(शिवांक पृ० १८३)

अर्थ—शिव लिंग पर चढ़ी हुई वस्तु को कोई छू भी ले तो कपड़े सहित स्नान करने पर शुद्ध होता है।

अनर्हममूनैवेद्य पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
मह्यम् निवेद्य सकलं कूप एवं विनिक्षिपेत् ॥२०४॥

(पद्म पुराण पाताल खण्ड अ० ११४ कलकत्ता)

अर्थ—शिवजी कहते हैं कि मेरे नैवेद्य पत्र, पुष्प फल और जल कोई भी ग्रहण करने योग्य नहीं हैं। मेरे ऊपर चढ़ाया हुआ नैवेद्य (परशाद) कुएँ में फेंक दो।

"शिव लिंग पर चढ़ा अन्न, पण्डा का अन्न और तीर्थों में दान देने वाले ब्राह्मण का अन्न निषिद्ध है।"

(देवी भागवत भाषा स्क० ६ अ० ८० पृ० ७५६)

लिंगो परिचयद् द्रव्यं तद् ग्राह्यं मुनीश्वरः।
सुपवित्रं च तज्ज्ञेयं यल्लिंगं स्पर्शं वाह्यतः॥

(शिव पुराण विन्ध्येश्वर सं० २२ श्लोक २०)

अर्थ – हे मुनीश्वरो ! शिव लिंग से जो छुई हुई न हो वह वस्तु ग्रहण करने योग्य और जो लिंग पर चढ़ा दी गई, वह ग्रहण करने योग्य नहीं है।

शिव प्रशाद शराब-मांस व विष्टा के समान है।

नान्यदेव तुवीक्षेत् ब्राह्मणो न पूजयेत् ।
नान्यं प्रसादं भुंजीत नान्यस्यायतनं विशेत् ॥७१॥
इतरेषांतु देवानां निर्माल्यं गर्हितं भवेत् ॥१०४॥
सकृदेव हि योऽश्नाति ब्राह्मणो ज्ञान दुर्बलः ।
निर्माल्यं शंकरा दीनां च चाण्डालो भवेध्रुवम् ॥१०५॥
कल्पकोटि सहस्राणि पच्येतें नरकाग्निना ।
निर्माल्यं भोद्विज श्रेष्ठाः रुद्रादीना दिवौकसाम् ॥१०६॥
रक्षोयक्ष पिशाचान्नं मद्य मांस समं स्मृतम् ॥१०७॥

(पद्म पुराण उत्तर खण्ड अ० २५५ कलकत्ता)

अर्थ – ब्राह्मण दूसरे देवता का न तो दर्शन करे और न पूजे, न उसके परशाद को खाय, न उसके मन्दिर में जाय न दूसरे देवताओं का परशाद ग्रहण करे। जो मूर्ख ब्राह्मण शिव निर्माल्य को खाता है, वह मानों विष्टा खाता है। शंकरादि के निर्माल्य को खाने वाला निश्चय चाण्डाल होता है। वह नरक की आग में करोड़ों कल्प तक पड़ा रहता है। हे ब्राह्मणो ! शिव आदि देवताओं का निर्माल्य शराब व मांस के तुल्य है।

इस प्रमाण में शिव लिंग के ऊपर चढ़े परशाद की कितनी प्रबल निन्दा की गई है। यह शिव भक्त लोग आंख खोल कर देखें और सोचें कि शिव लिंग जिसकी वे रात दिन पूजा किया करते हैं कितनी अपवित्र वस्तु है। शंकर के ऊपर चढ़ा परशाद

खाना महा पाप है। उसे खाने वाला चाण्डाल होगा, यह पुराण का फतवा है। अब हम दिखाते हैं कि शिवजी की वास्तविक पूजा शिवजी के वास्तविक भक्त वाम मार्गी लोगों ने किस चीज से करने का विधान किया है।

शराब मांस व रज वीर्य से शिवजी का पूजन करो शिवजी का आदेश जारी

मधु कुम्भसहस्रैस्तु मांसभार शतैरपि।
न तुष्यामि वरारोहे ! भगलिंगामृतं बिना ॥
(कुलार्णव तन्त्र उल्लास ८)

अर्थ—शिवजी कहते है कि हे पार्वती ! हजारों घड़े शराब तथा सैकड़ों भार मांस से भी मेरी पूजा की जावे तो भी मैं भग लिंगामृत (रज-वीर्य) के बिना कभी सन्तुष्ट नहीं होता हूँ।

शिव मन्दिर में देव पूजन व हवन का निषेध।

देवालयेषु सर्वेषु वर्जयित्वा शिवालयम्।
देवानां पूजनं राजन्नग्नि कार्येषु वा विभो ॥५५॥
(भविष्य पुराण ब्रह्म पर्व अ० २१०)

अर्थ—हे राजन् ! शिवालय को छोड़ कर बाकी सब मन्दिरों में देव पूजन व हवन जैसे पवित्र कार्य करने चाहिए।

इन प्रमाणों के आधार पर हमने आपको बताया कि शिव लिंग वास्तव में शिव मूत्रेन्द्रिय ही है, अतः बड़ी गन्दी वस्तु है। सनातन धर्म की शाखा वाम मार्ग के शास्त्रों में विधान है कि शराब मांस आदि से शिवजी की पूजा की जानी चाहिए। जो वस्तु शिव लिंग को छू जावे, उसे छूना भी पाप है। शिव लिंग

पर चढ़ी हुई सभी वस्तुयें अशुद्ध हो जाती हैं। उन्हें कोई भी न छूए, उन चीजों को कुंए में डाल दे। तब फिर हम पूछते हैं कि शिव लिंग को पूजना-उस पर सर टेकना, उसे चन्दन लगाना, उस पर फल फूल-दूध आदि चढ़ाना उस पर गङ्गाजल छोड़ना, बेल पत्र चढ़ाना आदि पाप नहीं तो क्या है ? सनातन धर्म के अनुसार शिवजी ने गङ्गा को सर पर धारण किया था। गङ्गा को शिव तनया (शिव पुत्री) भी कहते हैं। तो ऐसी पवित्र गंगा के जल को शिव लिंग पर चढ़ाना यह क्या कोई बुद्धिमानी की बात है ? शिव मन्दिर में भजन पूजन व हवन का निषेध पुराण ने किया है, तब फिर शिव मन्दिरों को बनवाना, उनमें भजन करना सनातन धर्म के शास्त्रों के विरुद्ध होने से पाप कर्म क्यों नहीं है ? भजन तो पवित्रता पूर्वक पवित्र स्थान में किया जाता है। शिव मन्दिर तो पुराणों ने अपवित्र स्थान बताये हैं उनमें जाकर धूप, दीप नैवेद्य शिव लिंगों पर चढ़ाना क्या कोई अक्ल-मन्दी की बात है। चन्दन व दूध आदि को मूत्रेन्द्रियों पर चढ़ाना यह पागलपन नहीं तो क्या कहा जावेगा। शिवजी का परशाद शराब, मांस व विष्टा के समान पुराण ने बताया है। तब फिर पौराणिक बन्धु ऐसा गन्दा प्रसाद क्यों बांटते हैं ? शराब, मांस, रज व वीर्य से शिव जी की पूजा का विधान है तो क्या शंकर कोई अघोरी सम्प्रदाय का लीडर था जो उसे इन घृणित चीजों से नफरत नहीं थी ? हमें कहना है कि सनातनी ब्राह्मण तो स्वार्थ में अन्धे बने हुए है। पत्थर पूजते २ उनकी अक्ल पत्थर हो गई है वे न तो पुराणों को पढ़ते हैं, न अक्ल से सोचने का काम लेते हैं। सदा जनता को स्वार्थ वश बहकाते रहते हैं। पर जनता को भी इतना अन्ध-विश्वास नहीं होना चाहिए कि जो भी चाहे उसे चाहे जैसे धर्म के मामले में मूर्ख बनाता रहे और वह भेड़ों के समान उसके पीछे चले जाकर अपने जीवन को नष्ट करती रहे।

कुछ ठीक है इस शरारत का कि हमारे धर्म के ठेकेदारों ने ईश्वर के स्थान पर शिवजी की मूत्रेन्द्रिय की पूजा (बकौल पुराणों के) शिव लिङ्ग के रूप में देश में जारी करा दी और भोला हिन्दू उसे ही ईश्वर मानकर पूजने लगा। मेरे देश के भाग्य फूट गये उस दिन से जब से यहां के निवासी ईश्वर को भूलकर योनि लिंग की प्रति मूर्तिशिव लिङ्ग को ईश्वर की जगह पूजने लगे। मेरे देश वासियो ! तुमको अपनी इस भोली अक्ल पर अब तो जरा लाज आनी चाहिए। तुम्हारे इस भोलेपन के कारण मेरा भारतवर्ष बड़ा कलंकित हुआ है।

पुराणों ने शिव के भक्तों की भी बहुत निन्दा की है। उसका मुख्य कारण शिवजी को चरित्र की दृष्टि से बहुत ही आपत्ति-जनक रूप में उपस्थित करना है। जब विद्वानों ने शिव लिंग पूजा के प्रचार की ओर ध्यान दिया तो उन्होंने इस बुराई को रोकने के लिए जनता को सचेत किया था। यहां हम चन्द प्रमाण इस सम्बन्ध में उपस्थित करते हैं जिनसे आप यह देख सकेंगे कि शिव के इस गर्हित स्वरूप में पूजन को देखकर शिव की निन्दा की गई है।

शिव के भक्त पाखण्डी व अछूत हैं

यस्तु नारायणं देव ब्रह्म रुद्रादि देवतैः।
समत्वं नैव वीक्षेत स पाखण्डी भवेत सदा ॥११॥
किमत्र बहुनोक्तेन ब्राह्मणा वैष्णवाः।
न स्पृष्टव्या न वक्तव्या न दृष्टव्या कदाचन् ॥१३॥

(पद्म पुराण उत्तर खन्ड अ० २३५)

अर्थ—जो लोग विष्णु को शिव व ब्रह्मा के समान बताते हैं, वे सब पाखण्डी हैं। जो ब्राह्मण वैष्णव नहीं है, जो शिव के उपासक

हैं, उनको न तो छूना चाहिए, न उनसे बात करनी चाहिए, और न उनकी शक्ल ही देखनी चाहिए।

शिव प्रशाद की निन्दा

शिव निर्माल्य भोक्तारश्शिव निर्माल्य लंघकाः।
शिव निर्माल्य दातारः स्पर्शस्तेषां ह्यपुण्यकृत ॥२९॥
(शिव पुराण रुद्र संहिता सृष्टि खं० अ० १८)

अर्थ—शिव के प्रसाद को खाने वाले, शिव प्रसाद का उलंघन करने वाले, शिव प्रसाद को देने वाले इन सबको छूना भी पाप को देने वाला है।

शिव को पूजने वाला ब्राह्मण शूद्र होता है

रुद्रार्चनाद् ब्राह्मणस्तु शूद्रेण समतां व्रजेत।
यक्षभूतार्चनात् सद्यश्चाण्डालत्वमवाप्नुयात् ॥
(वृद्ध हारीत स्मृति २।४७)

अर्थ—शिव की पूजा करने से ब्राह्मण शूद्र तुल्य हो जाता है, यक्ष तथा भूतों की पूजा करने से तत्काल चाण्डाल बन जाता है, (यक्ष व भूत शिवजी के गण बताये जाते हैं।)

शिवादि के पूजने वाले टट्टी के कीड़े बनेंगे

वैष्णवः पुरुषो यस्तु शिव ब्रह्मादि देवतान्।
प्रणमेयेद्यचये द्वापि विष्टायां जायते कृमिः ॥२६१॥
(वृद्ध हारीत स्मृति)

अर्थ—यदि विष्णु का उपासक भूलकर भी शिव ब्रह्मा आदि को प्रणाम अर्चना करता है, तो वह मर कर पाखाने का कीड़ा बनेगा।

शिवजी की तब तो पूजा करने वाले वैष्णवों की और भी बड़ी दुर्गति होगी। इन प्रमाणों से सिद्ध है कि शङ्कर के घोर

भक्त घोर पाखण्डी व धर्म विरोधी हैं। सनातन धर्म के शास्त्र की व्यवस्था है कि यदि विष्णु भक्त शिव को प्रणाम भी कर बैठे तो विष्टा का कीड़ा बनेगा।

इन प्रमाणों से एक बात अत्यन्त स्पष्ट हैकि शैवों ने जब देश में शिव लिङ्ग पूजा के रूप में घोर दुराचार फैलाने का प्रयत्न किया था तो उसकी प्रतिक्रिया बड़ी प्रबल हुई थी। लोग शिव के उस स्वरूप को सहन नहीं कर सके थे। वास्तव में शिव का वह स्वरूप सहन करने योग्य भी नहीं था। पुराणों एवं महाभारत में शिव की प्रशंसा में जो विशेषण दिये गये हैं उनसे शिव के स्वरूप का एक चित्र सामने आ जाता है। हम उसे यहां उपस्थित करते हैं। आप इस पर विचार करें और सोचें कि क्या यह स्वरूप एक देवता या ईश्वर का हो सकता है अथवा भयङ्कर आकृति वाले किसी राक्षसादि व्यक्ति का होगा।

शिव का स्वरूप-

शिव का शरीर (नील लोहित) नीले वर्ण का है, वह (शूल धर) त्रिशूल धारण करता है, उसके नेत्र (विरूपाक्ष, रक्त नेत्र, उन्मत्त लोचन) भयानक, लाल एवं उन्मत्तों जैसे रहते हैं, उसकी (कुटिल भ्रकुटी धरः) भ्रकुटी कुटिल हैं उसके (उन्मत्त केश) बिखरे हुए बाल, व (जटी जटाधर) लम्बी २ जटायें हैं, वह (कपाली कपाल विलसद हस्तः) हाथों में खप्पर धारण करता है, वह (विवासा) नङ्गा रहता है, वह (कोपीन वासा) केवल कोपीन पहनता है, वह (नीलकण्ठः) नीले कण्ठ वाला है, उसका शरीर (महाकाय) बहुत विशाल है, वह (भस्मोद्ध ल विग्रहः) अपने शरीर पर भस्म रमाता है, (भस्म प्रिय) वह भस्म से प्रेम करता है, (भस्म शायी) भस्म में लोट लगाता है, भस्म भी साधारण नहीं बल्कि (चिता भस्म संलिप्त-

श्चिताभस्म परायणः) मरघट की चिता की भस्म लपेटता है, (चिता प्रमोदी) चिताओं से उसे प्रेम है, वास्तव में वह (श्मशानाधिपतिः) मरघटों का ही स्वामी है (शमशानास्थ, श्मशान-निलयस्तिष्ठति) मरघट में ही रहता है, मरघट वासी है वह (निशाचर) रात में विचरता है (प्रेताचारी) भूत प्रेतों के साथ विचरने वाला है, (पिनाकी) पिनाक नाम का तीर कमान धारण करता है (व्याली) वह गले व बाहों में सांप लपेटे रहता है, (राहु, शनिः) राहु व शनिश्चर के समान संसार को पीड़ा देने वाला है, (कमण्डल धरो) हाथों में कमण्डल धारण करता है, (काया चारी, कामुकवरः) बहुत विषयी व कामियों में भी शिरोमणि, (महा लिंग) बड़ी उपस्थेन्द्रिय वाला है, (उर्ध्व लिंग) वह ऊपर को लिंग वाला है, (कामी) बड़ा कामी है, (कामदेव) साक्षात् कामदेव की मूर्ति है, (उग्र) बड़ा क्रोधी है, (उन्मत्त वेषः) पागलों जैसा भेष रखता है। (भयदाता) वह बड़े भयङ्कर स्वरूप वाला है (कामातुर) वह हर समय विषय भोग की इच्छायें मन में रखता है, व्यभिचार में पकड़े जाने से दारु वन में लिंग कट जाने से लिंग हीन हो गया है, इसलिए उसका नाम (षण्ड) हिजड़ा नपुंसक या मुखन्नस हो गया है, परेशानियों के कारण (सर्वदोन्मत्त मानसः) सदैव उसके दिल-दिमाग में उन्मत्तता, पागलपन सवार रहता है। इस पर भी वह (मकरन्द प्रिय) खुशबू से प्रेम करता है। वह (वृष वाहन) बैल की सवारी करता है, वह (मृग व्याध) व्याध के समान भोले भाले हिरणों का वध शिकार किया करता है। शङ्कर के इस स्वरूप को देखकर पुराणकारों ने उसे (धूर्त) शब्द से सम्बोधित किया है।

शङ्कर के उपरोक्त कोष्टकों के अन्दर के उपनाम वाची शब्द

महा भागवत, स्कन्द पुराण, सौर पुराण, शिव पुराण तथा महा भारत में बड़े गौरव के साथ दिये गये हैं। इसी प्रकार शिव की पत्नी पार्वती जिसे दुर्गा भी कहते हैं, उसके स्वरूप का वर्णन करते हुए पुराणकार ने लिखा है।

दुर्गा का स्वरूप

निशुंभ शुम्भ संहर्त्री मधु मांसासव प्रिया॥
(शिव पुराण वायु० सं० अ० ३१ श्लो० ६०)
उग्र दंष्ट्रा चोग्र दन्डा कोटवी च पयौ मधु॥३॥
जगर्ज साट्टहासं च दानवा भय मापयु:॥१२॥
दानवानां बहूनां च मांसं रुधिरं तथा॥३६॥
भुक्त्वा पीत्वा भद्रकाली शंकरान्तिक माययौ॥३७॥
(शिव पुराण रुद्र सं० युद्ध खं० अ० ३८)
जयति दिगम्बर भूषा सिद्ध बटेशा महालक्ष्मी:॥१३॥
दिग्वसना विकृत मुखा विकराल देहा रौद्रभावस्था॥१४॥
जयति भुजगेन्द्रमणि शोभितकर्णा महातुण्डा॥१७॥
सिंहारूढ़ा विनिर्गत्य दुर्गाभि: सहिता पुरा॥२४॥
कुमारी विंशतिभुजाघन विद्युल्लतोपमा॥२५॥
(भविष्य पुराण उत्तर खण्ड अ० ६१)

अर्थात दुर्गा–निशुम्भ–शुम्भ को मारने वाली, मधु-मांस सेवन करने वाली, तेज दांतों वाली, कठोर डण्डे वाली–शराब पीने वाली गर्जने वाली, अट्टाहास करने वाली–मांस व रुधिर का भोजन करने वाली, नर मुण्डों को पहिनने वाली चण्डी–नङ्गी–कुरूपा–विकराल देह वाली डरावनी बिजली की सी चमकने वाली–कानों में सर्प मणि–लम्बी–चोंच–सिंह की सवारी करने वाली–कुमारी–बीस भुजा वाली–इत्यादि स्वरूप वाली है।

इसके अतिरिक्त दुर्गा को निम्न उपाधियां पुराण में और दी हैं—

उन्नतस्तनी, घनस्तनी, बलि प्रिया मांसभक्षया, रुधिरासव-भक्षिणी भीम रावा सहस्य सा रण नृत्यपरायणा-छिन्न मस्तका, छाग मांस प्रिया, छाग बलि प्रिया-भुजंगी-तामसी वक्ता, तमोगुण वती-रक्त नयना-रक्ते क्षणा-रक्त भक्ष्या-रक्तमत्तोरणाश्रया-रक्त दन्ता-रक्त जिह्वा-रक्त भक्षण तत्परा-रक्त प्रिया-रक्त तुष्टा-रक्त पानासुतत्परा:-अष्ट हस्ता-दश भुजा वा अष्टा दश भुजान्विता सिंह पृष्ठ समारूढ़ा, सहस्रभुजराजिता, कामातुरा, काममत्ता, काम मानस सत्तनु:-युवती यौवनोद्रिक्ता-स्वैरिणी-स्वेच्छ विहरा योनिरूपा–योनि पीठ स्थिता-योनि स्वरूपिणी कामा लसिता-चावांगी-कटाक्ष क्षेप मोहिनी-मैनका गर्भ संभूता-इत्यादि।

(महा भागवत पुराण अ० २३)

उपरोक्त स्वरूप को देखकर यह सोचा जा सकता है कि यह स्वरूप किसी दिव्य गुण धारी सौम्य स्वभाव वाली निष्कलङ्क सात्विक प्रकृति वाली आदर्श देवी का हो सकता है अथवा किसी भयानक तामसी प्रकृति की राक्षसी का यह स्वरूप है। शङ्कर व दुर्गा की कल्पना वाममार्गीयों एवं तान्त्रिकों ने की है। हमारी इस स्थापना का समर्थन शङ्कर व दुर्गा के स्वरूप को देखने से हो जाता है। देवता या देवी का स्वरूप इतना पवित्र प्रेममय आकर्षण-निर्दोष–तेज स्वरूप–शान्ति आदि दिव्य गुण धारी होना चाहिये जिसे देखकर भक्त में प्रेम व निर्भयता उत्पन्न हो उसे प्राप्त करके भक्त उसके आनन्द में सराबोर हो जावे। उपासक में उपास्य के गुण आते हैं ऐसे तामस प्रकृति के शिव दुर्गा की उपा-सना करने वालों में वैसे ही सारे दुर्गुण समाविष्ट होंगे, निश्चित

ही है। यह वही दुर्गा है जिसकी भक्ति में नवदुर्गों में हिन्दू दिन-रात तन्मय रहता है।

इस प्रकार हमने दिखाया कि शिव व पार्वती अपने स्वरूप से देवता की श्रेणी में नहीं आते हैं। शिव की कल्पना वैदिक नहीं है। शिव लिंग की पूजा शिव व पार्वती की जननेन्द्रियों की ही पूजा है। पार्वती के उपनाम 'महा भागवत पुराण' में योनि रूपा ""योनि पीठस्थिता, स्वैरिणी"" योनि 'स्वरूपिणी' आदि दिये हैं जो इसी बात को पुष्ट करते हैं कि शिव लिंग में जलहरी पार्वती जननेन्द्रिय की प्रति मूर्ति हैं। अब हम चन्द प्रमाण शिव के चरित्र सम्बन्धी और आगे उपस्थित करते हैं जिन्हें देखकर आप यह अनुमान लगा सकेंगे कि पुराणकारों ने फर्जी शिव के जीवन की कथायें पुराणों में लिख २ कर शङ्कर को 'संसार की निगाहों में चरित्र की दृष्टि से कितना नीचे गिराया है। हम सर्व प्रथम प्रसिद्ध दारुवन की घटना प्रस्तुत करते हैं।

दारुवन की कथा

दारु नाम का एक उपवन था जिसमें भृगु ऋषि का आश्रम था। उसमें बहुत से शिव भक्त तपस्वीजन निवास करते थे। एक दिन वे लोग यज्ञ के लिये समिधायें लेने वन में गये हुए थे।

एतस्मिन्नन्तरे साक्षात् शङ्करो नील लोहितः।
विरूपं च समास्थाय परीक्षार्थं समागतः ॥९॥
दिगम्बरोऽति तेजस्वी भूति भूषण विभूषितः।
सचेष्टां सकदक्षां च हस्तेलिंगंविवारयन्- ॥१०॥
मनसा च प्रियं तेषां कर्तुं वै वनवासिनाम्।
जगाम तद्वन प्रीत्या भक्त प्रीतोहरः स्वयम् ॥११॥
तंदृष्टवा ऋषि पत्न्यस्ताः परं त्रास मुपागताः विह्वला।
विस्मिता श्चान्यास्समाजग्मुस्तथा पुनः ॥१२॥

आलिलिंगुस्तथाचान्याः करं धृत्वा तथा परः ।
परस्परन्तु संघर्षात्संमग्नास्ताः स्त्रियस्तदा ॥१३॥

अर्थ—इसी समय में साक्षात नील लोहित शंकर जी विकट रूप धारण किये उनकी परीक्षा के निमित्त वहां गये ॥९॥ वे साक्षात दिगम्बर (सर्वथा नंगे), अति तेजस्वी, विभूति रमाये हुए कामियों के समान(दुष्ट)चेष्टा करते हुए, हाथ में लिंग धारण किये हुए ।१०। भक्तों से प्रसन्न होकर उन बनवासियों की भलाई करने के लिए प्रसन्नता से वहां गये ॥११॥ उनको इस (नग्न) अवस्था में देखकर ऋषि पत्नियां बड़ी परेशान हुईं, व्याकुल हो गईं, कई विस्मित होकर वहां आ गईं ।१२। कोई हाथ से पकड़ कर उनसे परस्पर आलिंगन करने लगीं। इस प्रकार आलिंगन करने से वे स्त्रियां बड़ी प्रसन्न हुईं ॥१३॥

एतस्मिन्नेव समये ऋषि वर्य्याः समागमन् ।
विरुद्धं तं च ते दृष्ट्वा दुःखिता क्रोध मूर्छिताः ॥१४॥
तदा दुःख मनुप्राप्ताः कोयं कोयं तथात्र वन् ।
समस्ता ऋषयस्ते च शिव माया विमोहिताः ॥१५॥
यदा च नोक्त वान् किंचित्सोऽवधूतो दिगम्बरः ।
ऊचुस्तं पुरुषं भीम तदाते परमर्षयः ॥१६॥
त्वया विरुद्धं क्रियते वेद मार्ग विलोपियत् ।
ततस्त्वदीयं तल्लिंगं पततां पृथ्वी तले ॥१७॥

इसी अवसर में श्रेष्ठ ऋषि भी आ गये। इस विरुद्ध कार्य को देखकर वे बड़े दुःखी हुए तथा क्रोध से बेचैन हो गये ।१४। उस समय दुःखित हुए शिव की माया से मोहित ऋषि आपस में बोले, यह कौन है ? २ ।१५। पर वह नङ्गा अवधूत शिव कुछ न बोला, तो वे परम ऋषि उस भयंकर पुरुष से कहने लगे ।१६। तुम यह वेद मार्ग को लोप करने वाला विरुद्ध कार्य करते हो, इसलिए तुम्हारा यह लिंग भूमि पर पड़े ।१७।

सूत उवाच—इत्युक्ते तु तदा तैश्च लिंगं च पतितं क्षणात् ।
अवधूतस्य तस्याशु शिवस्याद्भुत रूपिणः ॥१८॥
तल्लिंगं चाग्नि वत्सर्वं यद्दाह पुरास्थितम् ।
यत्र यत्र च तद्यापि तत्र तत्र च दहेत्पुनः ॥१९॥
पाताले च गतं तच्च स्वर्गे चाति तथैव च ।
भूमौ सर्वत्र तद्यातं न कुत्रापिस्थिरं हि तत् ॥२५॥
लोकांश्च व्याकुला जाता ऋषयस्तेऽति दुःखिताः ।
न शर्मलेभिरे केचिद्देवाश्च ऋषयस्तथा ॥२१॥
दुःखिता मिलिताश्शीघ्रं ब्रह्माणं शरणं ययुः ॥२२॥
मुनीशांस्तांस्तदा ब्रह्मा स्वयं प्रोवाचवै तदा ॥३१॥
अराध्य गिरजां देवीं प्रार्थयन्तु सुरांश्शिवम् ।
योनि रूपा भवेच्चेद्वै तदा ततस्थिरतां व्रजेत ॥३२॥
पूजितः परयाभक्तया प्रार्थितः शंकरस्तदा ।
सुप्रसन्नस्ततो भूत्वा तानुवाच महेश्वरः ॥४४॥

सूत जी बोले—ऐसा उन ऋषियों के कहने पर उस अवधूत अद्भुत रूपधारी शिव का वह लिंग उसी समय कट कर गिर पड़ा ॥१८॥ और वह कटा हुआ लिंग अग्नि के समान जलने लगा ॥१९॥ वह जहां-जहां जाता था वहां-वहां आग लगा देता था ॥१९॥ वह लिंग पाताल में, स्वर्ग लोक में भी उसी प्रकार जलता हुआ भ्रमण करने लगा, कहीं पर भी स्थिर नहीं हुआ ॥२०॥ उससे सम्पूर्ण लोक व्याकुल हुए तथा वे ऋषि भी दुःखी हुए, कोई देवता या ऋषि कल्याण को प्राप्त नहीं हुए ।२५। दुःखी हुए वे सब मिल कर शीघ्र ही ब्रह्मा जी की शरण में गये ॥२२॥ तब ब्रह्मा जी उन ऋषियों से स्वयं कहने लगे ।३१। हे देवताओ ! देवी पार्वती की आराधना करके तत्पश्चात् शिव जी की प्रार्थना करो, यदि पार्वती साक्षात योनि रूपा हो जावे तो लिंग स्थिरता

को प्राप्त हो ॥३२॥ उस समय परम भक्ति से पूजित और सत्कृत हुए शिव जी अति प्रसन्न होकर ऋषियों से बोले ॥४४॥

शिव उवाच—हे देवाः ऋषयः सर्वे मद्वचः श्रणुतादरात् ।
योनि रूपेण मल्लिंगं धृतं चेत्स्यात्तदा सुखम् ॥४५॥
पार्वतीं च बिना नान्या लिंगं धारयितुं क्षमा ।
तयाधृतं च मल्लिंगं द्रुतं शान्तिं गमिष्यति ॥४६॥

सूत उवाच—तछ्रुत्वा ऋषिभिर्देवैस्सुप्रसन्नैर्मुनीश्वराः ।
गृहीत्वा चैव ब्रह्माणं गिरिजा प्रार्थिता तदा ॥४७॥
प्रसन्ना गिरजां कृत्वा वृषभध्वज मेव च ?
पूर्वोक्तं च विधिं कृत्वा स्थापितं लिङ्ग मुत्तमम् ॥४८॥
(शिव पुराण कोटि रुद्रसंहिता अ० १२)

अर्थ—महादेवजी बोले, हे देवताओ वं ऋषियो ! आप सब मेरे वचन को आदर से सुनो। यदि मेरा लिंग योनि रूप से धारण किया जावेगा तो शान्ति हो सकती है ॥४५॥ मेरे इस लिंग को पार्वती के बिना और कोई धारण करने में समर्थ नहीं है। पार्वती द्वारा धारण किया गया मेरा लिंग शीघ्र शान्ति को प्राप्त होगा ॥४६॥ सूतजी बोले, हे मुनीश्वरो ! यह सुनकर देवता तथा ऋषियों ने ब्रह्मा जी को साथ लेकर उस समय पार्वती की प्रार्थना की ॥४७॥ पार्वती तथा शिवजी को प्रसन्न करके पूर्वोक्त विधि के अनुसार शिव लिंग की स्थापना की गई ॥४८॥

लिंग के साथ वृषण भी कटे

शिव पुराण का एक खण्ड धर्म संहिता के नाम से प्रसिद्ध है। वह बम्बई से एक बार छपा था, शिव पुराण में से अब उसे न मालूम क्यों पृथक कर दिया गया है। उसमें लिखा है—

छित्वा सवृषणं लिंगं गुरुदार रतः स्वयं ॥१८६॥
शिश्ने स्यात् कर्तनं कार्यं नान्यो दण्डः कदाचन् ॥१६०॥
(धर्म संहिता अ० १०)

अर्थ—गुरु पत्नी (भृगु ऋषि की पत्नी) गामी शिव की उपस्थेन्द्रिय वृषण (अण्ड कोष) के साथ कटकर गिरी थी। शिश्न काटने के अतिरिक्त उत्तम दण्ड ऐसे व्यक्ति के लिए और हो ही क्या सकता था।

शिवजी दारुवन में विष्णु को स्त्री बनाकर साथ ले गये थे

उपरोक्त दारुवन की दुर्घटना के सम्बन्ध में सौर पुराण ने कुछ भिन्नतायुक्त निम्न प्रकार विवरण प्रस्तुत किया है।

एवं देव्यावचः श्रुत्वा भगवान्नील लोहितः।
विट्वेषमथाऽऽस्थाय ययौ दारुवनं प्रति ॥४८॥
स्त्रीरूपधारी विष्णुश्च शङ्करेण समागतः।
विष्णुना सह विश्वेशो देव दारुवनौकसः ॥४९॥
मोह यन्मायया शम्भुर्विचचार वनेतदा।
मुनिस्त्रियः शिवं दृष्ट्वा मदनानल दीपताः ॥५०॥
त्यक्त लज्जा विवस्त्राश्च ययुस्ता अनुशंकरम्।
स्त्री रूपधारिणं विष्णुं सर्वे मुनि कुमारकाः ॥५१॥
अन्वगच्छन्त देवर्षे कामबाण प्रपीड़िताः।
तदद्भुतं तदा ज्ञात्वा कुपिता मुनयस्तदा ॥५२॥
लिंग हीनं हरः कृत्वा गोपवेश धरः हरिः ॥५३॥

(सौर पुराण अ० ६९)

अर्थ—देवी के वचन सुन कर शंकर जी व्यभिचारी पुरुष का रूप बनाकर दारुवन में गये ॥४८॥ विष्णु जी स्त्री का रूप धर के शंकर जी के साथ-साथ गये ॥४९॥ वन में जाकर शंकर जी ने अपनी माया फैलाई। तो उसके प्रभाव में मुनियों की औरतें शिव को देखकर कामदेव की अग्नि से पीड़ित होकर ।५०।

लज्जा त्याग कर व कपड़े उतार कर (नङ्गी होकर) शंकर जी से जा चिपटीं, तथा सारे मुनियों के जवान लड़के स्त्री रूप धारी विष्णु जी को देखकर ॥५१॥ कामबाण से पीड़ित होकर उनसे जाकर भिड़ गये। इस अद्भुत दृश्य को देखकर क्रोधित होकर मुनियों ने शिवजी को लिंग हीन कर दिया ॥५२-५३॥

इस कथा को दो रूप में देखने पर हमको पता लगा कि शिवजी का दारुवन में जाकर ऋषि पत्नियों से दुराचार करना, विष्णु का औरत बनकर शिव के साथ वहां जाना तथा ऋषि कुमारों का विष्णु जी से उनके स्त्री रूप में व्यभिचार करना, मुनियों के शाप से शिवजी की अण्डकोष सहित शिश्नेन्द्रिय का कट कर गिरना व उसमें आग प्रगट होना, कटे हुए शिश्न का सर्वत्र भागते फिरना व आग लगना, और शङ्कर जी के परामर्श से पार्वती का उसे योनि रूप में धारण करना तथा तभी से शिव लिंग की पूजा जारी होना यह सब शिव लिंग (शिव मूत्रेन्द्रिय) पूजा का प्रारम्भ बताता है। लखनऊ के छपे भाषा शिवपुराण के खण्ड ८ अ० १६ पर पृ० ७४८ से ७५० तक यही कथा दी है। उसमें प्रारम्भ में नारद जी ने ब्रह्माजी से शिव लिंग पूजा का प्रारम्भ कब से हुआ है, यह पूछा है। तो ब्रह्मा जी ने दारुवन की सम्पूर्ण कथा बताते हुए अन्त में यह शब्द कहे हैं।

दारुवन की कथा भाषा शिव पुराण से

'शिवजी बोले ! गिरजा योनि रूप से लिंग को धारण करें तो हम शान्त होंगे। गिरजा के सिवाय तीन भुवनों में और कौन है जो हमारे लिंग को रोक सके। यह सुन के सब देवता आदि ने गिरजा को प्रसन्न किया जिसने योनि रूप होकर शिवजी का लिंग धारण किया जिससे सबको बड़ा आनन्द हुआ, और सबने बड़ी स्तुति की। पर संसार के माता-पिता को नग्न देखकर किसी

ने उनकी पूजा नहीं की। पर जब शिवजी ने आज्ञा दी कि हमारे लिंग की पूजा करो तो सबने उसी दशा में पूजा की और उसी दिन से लिंग की पूजा की चाल हो गई।"

इस सब विवरण को देखकर हम समझ सकते हैं कि मूत्रेन्द्रिय की पूजा का शिव लिंग के रूप में प्रचार किया गया है तथा शिश्नेन्द्रिय पूजा को उचित सिद्ध करने के लिए यह सब कथायें गढ़-गढ़कर पुराणादि ग्रन्थों में लिखी गई हैं। यदि पुराणों की इन कथाओं को सत्य माना जावेगा तो शिवजी पर अनेक प्रकार के प्रश्न लागू होंगे जिनका कोई उत्तर पुराणों को सत्य मानने वालों पर न बन सकेगा।

प्रश्न १—कटा हुआ शिव लिङ्ग क्या कभी पुनः शिवजी के शरीर में जोड़ा गया है या नहीं।

प्रश्न २—पुराणों में शिवजी को शिखण्डी व षण्ड क्या लिंग हीन होने से ही तो नहीं बताया गया है।

प्रश्न ३—सती अनुसूय्या के पास एवं दारुवन में व्यभिचारार्थ जब शिवजी गये तो निज 'लिंग' उपस्थेन्द्रिय को हाथ में ग्रहण करके ही क्यों गये थे। क्या इससे शिव चरित्र का पतन सिद्ध नहीं होता ?

प्रश्न ४—गङ्गा को शिव तनया (शिवपुत्री) कहते हैं। तो शिवपुत्री को शिव लिंग पर चढ़ाना क्या बुद्धिमानी का बात है।

प्रश्न ५—गङ्गा को मैया कहते हैं तो गङ्गा मैया को महादेव बाबा के ऊपर चढ़ाना क्या यह मैया का बाबा के साथ दुराचार करना नहीं होगा ?

प्रश्न ६—पराई स्त्रियों पर माया जाल डाल कर उन्हें कामोत्तेजित कर देना और फिर उनके पतियों की अनुपस्थिति

में व्यभिचार करना क्या यह सनातन धर्म का कोई विशेष अङ्ग है जिसे पालन करके शिवजी ने यह गन्दा आदर्श उपस्थित किया है।

प्रश्न ७—विष्णु जी को औरत बनाकर साथ में ले जाना तथा मुनियों के लड़कों का स्त्री रूप धारी विष्णु से व्यभिचार करना क्या यही विष्णु के भगवान होने का सच्चा प्रमाण है? विष्णु भगवान ने अपने साथ स्वेच्छा से व्यभिचार कराकर क्या भक्तों के लिए यह कोई अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है? और क्या यह कृत्य सनातन धर्म से अनुकूल माना जा सकता है? इसी प्रकार के अनेक प्रश्न पाठकों के मस्तिष्क में पैदा हो सकते हैं जिनका जवाब पुराणों को सर्वथा सत्य मानने वालों को देना पड़ेगा।

शिव लिंग पर बेलपत्र व जल चढ़ाने का रहस्य

शिव लिंग पर जल भी केवल इसलिए निरन्तर छोड़ा जाता है कि उसमें जो एक बार आग फूट निकली थी तो त्रैलोक्य को भस्म कर डाला था, यदि पुनः कभी उसमें ज्वालामुखी फूट निकला तो अब कौन उसे धारण करेगा। पहिले तो पार्वती जी ने धारण कर लिया था, अब इतनी सामर्थ किस स्त्री में होगी। अतः कटे हुए शिवलिंग की गर्मी शान्त बनी रहे इसके लिए हर समय शिव लिंग पर पानी छोड़ने के लिए जल के घड़े उसके ऊपर रखे जाते हैं। भक्त लोग दूर-दूर से जल लाकर शिव लिंग पर छोड़ा करते हैं। उन्हें हर समय उसी दारुवन में प्रगट हुई अग्नि का भय लगा रहता है। हमारे विचार से यदि जल छोड़ने का यही कारण हो तो शिवलिंग युक्त मन्दिरों को नगर से बाहर जंगलों में स्थापित करना चाहिये। ताकि कभी गड़बड़ हो जाने पर भयभीत भक्त लोग सुरक्षित रह सकें। अथवा हर मन्दिर

में फायर ब्रिगेड (आग बुझाने के ऐञ्जिन) रखने चाहिए ताकि समय पर आग ज्यादा न फैलने पावे ।

शिव लिंग पर जल व बेलपत्र चढ़ाने का आयुर्वेदिक कारण भी हो सकता है। जल की शीतल धारा शिश्नेन्द्रिय पर छोड़ने से समस्त शरीर की गरमी नष्ट हो जाती है, सम्पूर्ण रोग मिट जाते हैं, वीर्य कोष की उष्णता दूर होकर प्रमेह मिटते हैं, वीर्य स्वस्थ बनता है। सम्भव है शिव के स्वास्थ के लिए यह डाक्टरी क्रिया भक्त लोग किया करते हों। बेलपत्र भी वीर्य पौष्टिक एवं प्रमेह व मधुमेह नाशक होता है। इसके लिए बेलपत्र के चूर्ण को अथवा बेलपत्रों को घोट कर सेवन किया जाता है। आयुर्वेदीय चिकित्सकगण इसका बहुधा प्रयोग किया करते हैं। शिवलिंग पर बेल पत्र भी सम्भवतः इसी विश्वास के आधार पर अन्ध भक्त लोग चढ़ाते हैं कि शिवजी स्वस्थ रहें व उनका वीर्य पुष्ट होता रहे, पर वे यह नहीं समझ पाते हैं कि बेलपत्र खाने से प्रमेह नाशक एवं वीर्य पौष्टिक गुण करता है न कि शिश्नेन्द्रिय पर ऊपर से चढ़ाने से कोई लाभ होता है। जल चढ़ाने व बेल पत्र प्रमेह नष्ट करने को खाने का नुस्खा तो ठीक है पर शिव लिंग के सम्बन्ध में प्रयोग विधि दोनों की गलत है। हमारे विचार में यदि शंकर जी की चिन्ता त्याग कर भक्त लोग अपने ऊपर ये दोनों चीजें प्रयोग करने लगें तो उनका स्वास्थ्य भी सँभल जावे तथा उनका गृहस्थ जीवन भी सुखमय बन जावे।

हमने प्रारम्भ में लिखा है कि शिव की कल्पना वाममार्गीय सम्प्रदाय ने की है, जिनमें व्यभिचार प्रधान धर्म माना जाता है, उन्होंने शिवजी के चरित्र को भी अपने सम्प्रदाय की मान्यताओं के सांचे में ढालने का प्रयत्न किया है। हम कुछ घटनायें पुराणों से और यहां उपस्थित करते हैं, जिनसे आपको हमारी उपरोक्त स्थापना की पुष्टि में प्रमाण मिलेगा।

मोहिनी अवतार की कथा तथा सोना व चांदी की उत्पत्ति शिव वीर्य से

एक बार शिवजी ने विष्णु से अपना मोहिनी स्वरूप दिखाने को कहा तो विष्णुजी एक दम गायब हो गये। महादेवजी को सामने एक बाग में एक सुन्दरी स्त्री गेंद खेलती हुई नजर आई उसने शंकर को तिरछी नजर से देखा। शंकरजी कामान्ध हो गये और उसे पकड़ने को भाग पड़े। वह स्त्री भी भागी। वह आगे २ शिवजी उसके पीछे २ भागे चले जा रहे थे। भागने में उस स्त्री के वस्त्र हवा में उड़ गये। वह सर्वथा नङ्गी हो गई, और पेड़ों की आड़ में लाज के मारे छिपने लगी। शिवजी ने पीछे से दौड़कर उसके सर का जूड़ा पकड़ लिया। अब थोड़े से श्लोक भी देखिये—

तया हृत विज्ञानस्तत्कृतस्मर विह्वलः।
भवान्यापि पश्यन्ता गत ह्रीस्तत् पदं ययौ ॥२५॥
सा तमायान्तमालोक्य विवस्त्राव्रीडिता भ्रशम्।
निलीयमाना वृक्षेषु हसन्ती नान्वतिष्ठत ॥२६॥
तामन्वगच्छद् भगवान भवः प्रमुषितेन्द्रियः।
कामस्य च वशं नीतः करेणु मिवयूथपः ॥२७॥
सोऽनुव्रज्यातिवेगेन गृहीत्वानिछती स्त्रियम्।
केश बन्ध उपानीय बाहुभ्यां परिषस्वजे ॥२८॥

अर्थ—उस स्त्री ने शंकरजी की बुद्धि हर ली। वे उसके हाव भावों पर कामातुर हो गये, और भवानी के सामने लज्जा छोड़ कर उसकी ओर चल पड़े।२५। मोहिनी वस्त्र हीन तो पहले ही हो चुकी थी। शंकर को अपनी ओर आते देखकर बहुत लज्जित हो गई। वह शर्म के मारे एक वृक्ष से जाकर दूसरे वृक्ष की आड़

में जाकर छिप जाती और हँसने लगती, परन्तु ठहरती नहीं थी ।२६। शंकर जी की इन्द्रियां अपने वश में न रहीं । वे अत्यन्त कामोत्तेजित हो गये । अतः हथिनी के पीछे हाथी की तरह वे उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगे ॥२७॥ उन्होंने अत्यन्त वेग से उसका पीछा करके पीछे से उसका जूड़ा पकड़ लिया और उसकी इच्छा न होने पर भी उसे दोनों भुजाओं में भरकर हृदय से लगा लिया ॥१८॥

सोपगूढ़ा भगवता करिणा करिणी यथा ।
इतस्ततः प्रसर्पन्ती विप्र कीर्ण शिरोरुहा ॥२६॥
आत्मनं मोचयित्वांग सुरर्षभभुजान्तरात् ।
प्राद्रवत्साप्रथु श्रोणी माया देव विनिर्मिता ॥३०॥
तस्यासौ पदवीं रुद्रो विष्णोरद्‌भुत कर्मणः ।
प्रत्यपद्यत कामेन वैरिणेव विनिर्जितः ॥३१॥
तस्यानुधावतो रेतश्च स्कन्दामोघ रेतसः ।
शुश्मिणो यूथपस्येव वासिता मनुधावतः ॥३२॥
यत्र यत्र पतन्मह्यां रेतस्तस्य महात्मनः ।
तानि रूप्यस्य हेम्नश्च क्षेत्रण्या सन्महीपते ॥३३॥

(श्री मद्‌भागवत् पु० स्क० ८ अ० १२)

अर्थ – जैसे हाथी हथिनी का आलिंगन करता है, वैसे ही शंकर जी ने मोहिनी का आलिंगन किया । वह इधर उधर खिसक कर छुड़ाने की चेष्टा करने लगी । उसी छीना झपटी में उसके बाल बिखर गये ।२६। उस देव निर्मित माया सुन्दरी ने किसी प्रकार शंकर की भुजाओं के पास से अपने को छुड़ा लिया और बड़े वेग से भागी ॥३०॥ शंकर जी उस मोहिनी वेषधारी विष्णु जी के पीछे २ दौड़ते हुए चले गए। उस समय ऐसा जान पड़ता था कि मानो उनके शत्रु कामदेव ने उनके ऊपर विजय

प्राप्त कर ली है ।३१। कामुक हथिनी के पीछे दौड़ने वाले कामोन्मत्त मस्त हाथी के समान वे मोहिनी के पीछे दौड़ रहे थे। यद्यपि भगवान शंकर जी का वीर्य अमोघ है फिर भी मोहिनी की माया से वह स्खलित हो गया ।३२। शंकर जी का वह वीर्य पृथ्वी पर जहां जहां गिरा वहां वहां सौने चांदी की खानें बन गईं ।३३।

शिवजी की चारित्रिक दुर्बलता का यह भी एक दृष्टान्त हुआ। शिव वीर्य से सौने चांदी की खानें बनने के सिद्धान्त की परीक्षा पौराणिक वैज्ञानिकों को विज्ञान की कसौटी पर कसके सिद्ध करनी चाहिये। वरना आज का पढ़ा-लिखा जनसमुदाय इसे शिव को कलंकित करने के लिये वाममार्गीय पुराणकारों द्वारा रचित कोरी गल्प मानेगा। अथवा शिव को चरित्रवान व्यक्ति मानना छोड़ देगा। इसी शिव वीर्य से हनुमान की भी विचित्र पैदायश का नमूना देखिये

शिव वीर्य से हनुमान का जन्म

तद्वीर्यं स्थापयामासुः पत्रे सप्तर्षयश्चते ।
प्रेरिता मनसातेन राम कार्यार्थ मादरात् ॥५॥
तैर्गौतम सुतायां तद्वीर्यं शम्भोर्महर्षिभः ।
कर्णद्वारा तथांजन्या रामकार्यार्थ माहितम् ॥६॥
ततश्च समये तस्मात् हनूमानिति नामभाक् ।
शम्भुर्जज्ञे कपितनुर्महाबल पराक्रमः ॥७॥

(शिव पुराण शतरुद्र संहिता, अ० २०)

अर्थ—मोहिनी के साथ हुए शुक्र पात को आदर से रामचन्द्र के अर्थ मन से शिवजी के द्वारा प्रेरणा किये हुए इन सप्त ऋषियों ने उस वीर्य को पत्ते पर रख लिया ॥५॥ उन महर्षियों ने वह शिवजी का वीर्य गौतम की पुत्री के कान द्वारा अंजनी में

रामचन्द्र के कार्य के लिये प्रवेश किया ।६। उस समय उस वीर्य से महाबली तथा महा पराक्रम युक्त वानर के शरीर वाले हनूमान नामक शिवजी उत्पन्न हुए ।७।

कान में डालकर शिव वीर्य से सन्तान उत्पन्न होने के विचित्र प्रकार पर डाक्टरी के पौराणिक विद्यार्थियों को अपनी अनुसन्धानशालाओं में परीक्षण करने चाहिये।

इसी शिव वीर्य से वैद्यक ग्रन्थों में पारा पैदा होने की बात लिखी है।

शिव वीर्य से पारे की उत्पत्ति

शिवांगात्प्रच्युतं रेतः पतितं धरणी तले।
तद् ह तार जातत्वाच्छुक्ल मच्छम भूच्चतत् ॥
क्षेत्र भेदेन विज्ञेयं शिव वीर्यं चतुर्विधम्।
श्वेत रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत् क्रमात् ॥
(भाव प्रकाश निघन्टु)

अर्थ—शिवजी का वीर्य पृथ्वी पर गिरा, उससे पारा पैदा हो गया। वह पारा क्षेत्र भेद से सफेद-पीला-लाल व काला चार प्रकार का होता है।

मोहिनी के चक्कर में फँसकर शिव वीर्य गिरने से सोना, चांदी, हनूमान व पारा चार चीजें पैदा हो गई। शिव वीर्य का महान चमत्कार दिखाने के लिये पुराणकारों ने इस कथा का सविस्तार वर्णन किया है। इसी प्रकार गन्धक की भी विलक्षण उत्पत्ति लिखी है—

गन्धक

श्वेत द्वीपे पुरा देव्याः क्रीडन्त्या रजसाप्लुतम्।
दुकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीर नीर धौ ॥

प्रसृतं यद्रजस्तस्माद् गन्धकः समभूत्तदा ॥

(भाव प्रकाश निघन्टु)

अर्थ—श्वेत द्वीप में पार्वती देवी पहिले क्रीड़ा कर रही थीं। रजःकाल आने पर जब उनके वस्त्र रजःश्राव से भीग गये, तो कपड़ों सहित उन्होंने क्षीर सागर में स्नान किया। उस समय उस वस्त्र से जो रज फैला, उससे गन्धक की उत्पत्ति हुई।

यह सब कथायें पौराणिक अन्धकार के युग में गढ़ी गल्पें हैं। लंका जाते समय हनुमान के शरीर से पसीना गिरा, उसे मछली निगल गई तो उससे मकरध्वज नाम का लड़का पैदा हो गया यह गल्प प्राकृतिक नियम के विपरीत तुलसीदास जी ने उड़ाई थी, तो यहां पुराण व वैद्यक ग्रन्थकारों ने शिव व पार्वती के रज वीर्य से पारा गन्धक सोना चांदी की खान पैदा होना व हनूमान की विचित्र उत्पत्ति की गल्प ठोंक दी है। एक दृष्टि से यह भी उत्तम ही हुआ। यदि पुराणकार कहीं शिव वीर्य से शिवजी के सन्तानों की उत्पत्ति की गल्प ठोंकता तो वह अरबों खरबों से क्या कम होते ? और फिर उनके विवाह शादी आदि कराने की व्यवस्था शिवजी से कराने में उसे सैकड़ों प्रकार की तुकबन्दी और लगानी पड़ती। इन पुराणकारों ने शिवजी को अधिक से अधिक कामुक सिद्ध करने में कोई कसर उठा नहीं रखी है। एक स्थान पर लिखा है।

इलावृत देश का हाल

जहां शङ्करजी रहते हैं, वह इलावृत देश है। उस इलावृत वर्ष में एक मात्र शंकरजी ही पुरुष हैं, श्री पार्वती के शाप को जानने वाला कोई दूसरा पुरुष वहां प्रवेश नहीं करता है। क्योंकि वहां जो भी मर्द जाता है वह तुरन्त स्त्री बन जाता है। वहाँ पार्वती और उनकी अरबों खरबों दासियों से सेवा कराने वाले शङ्करजी रहते हैं।　　　　(भागवत पुराण स्क० ५ अ० १७)

इसीलिए इस विषय में दूसरे पुराणकार ने लिखा है—

हर समय शिवजी कामिनी पाश में बंधे रहते हैं

शिवोऽपि पर्वते नित्यं कामिनी पाश संयुतः ॥

(देवी भागवत स्क० १ अ० ११)

अर्थ—पर्वत पर शिवजी नित्य ही कामनियों के बाहु पाशों से फँसे रहते हैं ।

शिव के पास अप्सरायें क्रीड़ा करती हैं

रमा कोटि सहस्त्राणि हार केयूर भूषिताः ।
सर्व शृङ्गार शोभाढ्या नूपुरारावलंकृता ॥६॥
अक्षय यौवनां सर्वां उमया सदृशोपम ।
दिव्य वस्त्र परिधानं महा भोगपरिच्छदाः ॥७॥
सर्वं भोग समायुक्ताः क्रीडन्ति शिवसन्निधौ ।
यावत्तिष्ठति मेदिन्यां यावन्माक्षीर सागरे ॥८॥

(केदार कल्प पटल ३५)

अर्थ—सहस्त्रों कोटि अप्सरायें हार-बाजूबन्द आदि से भूषित नूपर पहिने-सम्पूर्ण शृङ्गार की शोभा से युक्त ॥६॥ अक्षय यौवन वाली पार्वती के सदृश्य दिव्य वस्त्र धारण किये (शिव के भोगने को) महा भोग सहित ॥७॥ शिव के समीप क्रीड़ा करती हैं, जब तक पृथ्वी तथा समुद्र में जल रहता है ॥८॥

यह हमने उस शिव लोक के हाल का वर्णन किया जहां शिव जी रहते हैं । उनके पास अरबों खरबों अप्सरायें रहती हैं वे शिव के साथ क्रीड़ा व आमोद प्रमोद किया करती हैं । यदि कोई अन्य मर्द भूल से भी वहां पहुंच जावे तो वह तत्काल स्त्री बन जाता है । मर्दों को औरत बनने का शाप कब क्यों दिया गया, इसकी भी एक कथा है जो नीचे दी जाती है ।

मर्दों को औरत बनाने के शाप की कथा

एकदा गिरीशं द्रष्टुं मुनयः सनकादयः ।
दिशो वितिमिराभाषा कुर्वन्तः समुपागमन् ॥१६॥
तस्मिंश्च समये तत्र शंकरः प्रमदा युतः ।
क्रीड़ा सक्तो महादेवी विवस्त्रा कामिनी शिवा ॥१७॥
उत्संगे संस्थिता भर्तुः रममाणा मनोरमा ।
तान्विलोक्यांबिका देवी विवस्त्रा व्रीडिता भृशम् ॥१८॥
भर्तुः रंकात्समुत्थाय वस्त्र मादायपर्यधात् ।
लज्जा विष्टा स्थिता तत्रैव मानातिमानिनी ॥१९॥
ऋषियोपि तयोर्वीक्ष्य प्रसंगं रमामरणयोः ।
परिवृत्य ययुस्तूर्णं नर नारायणाश्रमम् ॥२०॥
ह्रीयुता कामिनीं वीक्ष्य प्रोवाच भगवान्हरः ।
कथं लज्जातुराऽसि त्वं सुखं ते प्रकरोम्यहम् ॥२१॥
अद्य प्रभृतियो मोहात्पुमान्कोऽपि वरानने ।
वनं च प्रविशेदेतत्सर्वं योषिद्भविष्यति ॥२२॥

(देवी भागवत पु० स्क० १ अ० १२ तथा भागवत स्क० ६ अ० १)

अर्थ–एक समय सनकादिक ऋषि शिवजी के दर्शन को अपने प्रकाश से दिशाओं को निर्मल करते हुए आये । उस समय शिवजी पार्वती के साथ क्रीड़ा में आसक्त थे, कामिनी शिवा वस्त्रहीन थीं ॥१८॥ वह शिवजी की गोदी में स्थित हुई रमण करती थीं । उन ऋषियों को देखकर देवी बड़ी लज्जित हुई और वे स्वामी की गोदी से उठकर जल्दी से वस्त्र धारण करने लगीं । १८ व १९ । ऋषि भी उन रमण करने वालों का प्रसंग देखकर शीघ्र ही नर नारायण आश्रम को चले गये ।२०। तब पार्वती को लज्जित देखकर शिवजी बोले, तुम लज्जा क्यों करती हो ? मैं तुम्हारे लिये सुख का प्रबन्ध करूंगा आज से

यदि कोई पुरुष भूलकर भी इस वन में आवेगा तो वह स्त्री बन जावेगा।

पुराणों की उपरोक्त बात के गल्प होने में क्या सन्देह हो सकता है। इस पृथ्वी पर ऐसा देश भी क्या कहीं सम्भव है जहां अरबों खरबों औरतें रहती हैं। और उनके बीच में केवल एक ही मर्द शङ्कर जी विद्यमान रहकर दिन रात रमण करते रहते हैं। पृथ्वी की प्रायः डाई अरब की आबादी में १ अरब औरतें नहीं है, पर पुराण बनाने वालों ने केवल एक पहाड़ी वन में अकेले शङ्कर जी के लिए अरबों खरबों औरतें भागवत में पैदा कर दी हैं। पढ़े लिखे लोग शिव को महा व्यभिचारी बताने वाले इन पुराण बनाने वालों की मूर्खता पर हँसेंगे। कितने आश्चर्य की बात है कि आज भी ज्ञान विज्ञान के युग में जब पृथ्वी का कौना २ हवाई सर्वेक्षण से छान डाला गया है, इस प्रकार की गप्पों से भरे हुए पुराणों को छाप २ कर उनका प्रचार करने वाली संस्थायें एवं पण्डित मण्डल आज भी भोली भाली धर्म प्राण जनता में ऐसी धासलेटी साहित्य प्रचारित करके उसे मूर्ख बनाने में निरन्तर प्रयत्नशील हैं। भागवत पुराण में स्कन्द ९ अ० १ में लिखा है कि राजा सुद्युम्न भूल से एक वार उस बन में चला गया तो वह तत्काल औरत बन गया, उसका घोड़ा घोड़ी बन गया, तथा साथ के नौकर सब औरतें बन गये। इससे अनुमान होता है कि ऐसा देश इसी पृथ्वी पर ही कहीं है। इन मिथ्या पुराणों को सही मानने वालों को इस पौराणिक गल्प को उस स्थान का पता लगा कर प्रमाणित करना चाहिये।

इसी प्रकार शिवजी के चरित्र को कलंकित करने के लिये उनके वेश्यागमन की कथा शिव पुराण में दी है। वेश्यागमन करने से शिवजी को 'वेश्या नाथ' की उपाधि से विभूषित किया गया है कथा निम्न प्रकार है।

शंकर का वेश्या नाथ अवतार व वेश्या गमन

नन्दीश्वर बोले—हे तात ! मैं परमात्मा शिव के वेश्यानाथ अवतार का आनन्ददायक वर्णन करता हूँ ॥१॥ पहिले कोई नन्द-ग्राम में अति सुन्दरी महानन्दा नाम की वेश्या रहती थी ॥२॥ एक समय उस वेश्या के घर स्वयं शिवजी वैश्य बनकर पहुंचे ।३। उस सेठ को आया हुआ देखकर सुन्दरी वेश्या ने बड़े आनन्द के साथ आदर सत्कार करके बड़े आदर से अपने स्थान पर बैठाया ॥१६॥ ।उसके हाथ में अति मनोहर कंकण देकर लोभित हुई वह वेश्या उस वैश्य से बोली ।१७। महानन्दा बोली—यह रत्न जटित आपके हाथ में स्थित हुआ, स्त्रियों के आभूषणों में उचित कंकण मेरे मन को लुभाता है ॥१८॥ शिवजी बोले—यदि इस दिव्य श्रेष्ठ कंकण ने तुम्हारा मन लुभाया है तो तुम प्रेम से इसे धारण करो। पर इसका मूल्य क्या दोगी ॥२०॥ वेश्या बोली—

वयं हि स्वैरचारिण्यो वेश्यास्तु न पतिव्रताः ।
अस्मत्कुलोचितो धर्मो व्यभिचारो न संशयः ॥२१॥
यद्येतदखिलं चित्तं ग्रहणाति कर भूषणम् ।
दिनत्रयमहोरात्रं पत्नी तवभवाम्यहम् ॥२२॥

वेश्या बोली—हम व्यभिचारिणी वेश्या हैं पतिव्रता नहीं हैं, हमारे कुल का व्यभिचार कराना ही धर्म है, इसमें कुछ संशय नहीं है ।२१। यदि यह हाथ का आभूषण आप मुझे दे देंगे, तो मैं तीन दिन व रात तुम्हारी स्त्री बन कर रहूँगी ॥२२॥

शिव बोले—तथास्तु यदि ते सत्यं वचनं वीर वल्लभे ।

ददामि रत्न वलयं त्रिरात्रं भव मे वधू ॥२३॥
एतस्मिन्व्यवहारे तु प्रमाणं शशिभास्करौ ।
त्रिवारं सत्यमित्युक्त्वा हृदयं मे स्पर्श प्रिये ॥२४॥

हे वीर वल्लभे ! बहुत अच्छा यदि तेरा वचन सत्य है तो अपना रत्नों का कङ्कण तुझे देता हूँ। तुम तीन दिन व रात मेरी स्त्री रहो ।२३। हे प्रिये ! इस व्यवहार में चन्द्रमा व सूर्य साक्षी हैं। तीन बार सत्य वचन कहकर मेरे हृदय को स्पर्श करो ।२४।

वेश्या बोली – दिनत्रयमहोरात्रं पत्नी भूत्वा तव प्रभो ।
सहधर्मचरामीति सत्यं सत्यं न संशयः ॥२५॥

नन्दी बोला—इत्युक्त्वा हि महानन्दा त्रिवारं शशिभास्करौ ।
प्रमाणीकृत्य सुप्रीत्या सातद्धृदयमस्पृशत् ॥२६॥
सातेन सङ्गता रात्रौ वैश्येन विटधर्मिणा ।
सुखं सुष्वापपर्यंके मृदुतल्पोप शोभिते ॥३०॥
(शिव पुराण शतरुद्र संहिता अ० २६)

अर्थ—वेश्या बोली–हे प्रभो तीन दिन व तीन रात तुम्हारी भार्या होकर तुम्हारे साथ विषय करूंगी, इसमें कुछ संशय नहीं है ।२५। नन्दीश्वर बोले–यह महानन्दा वेश्या ने तीन बार सत्य २ कह सूर्य चन्द्र को साक्षी कर प्रसन्नता पूर्वक उस वैश्य के हृदय को स्पर्श किया ।२६। तब वह वेश्या उस व्यभिचारी वैश्य (शिव) के साथ रात्रि में मिलकर कोमल गद्दे व तकिये वाले सुन्दर पलङ्ग पर चैन के साथ सानन्द सो गई ।३०।

वेश्या गमन के ही समान पुराणों में शिवजी को अप्राकृतिक व्यभिचार का भी दोष लगाया है। हम एक उदाहरण उसका भी पुराण से उपस्थित करते हैं–

अन्धि वध की कथा

अन्धक दैत्य शिवजी का बेटा था। उसे शिवजी ने हिरण्याक्ष दैत्य को गोद दे दिया था। हिरण्याक्ष को वाराह अवतार लेकर विष्णु ने मार डाला था। उसके बाद अन्धक को गद्दी मिली थी। अन्धक से शिवजी का युद्ध हुआ। शिवजी ने

बड़ी कठिनता से अन्धक को मार पाया था । यह कथा शिव पुराण रुद्र संहिता युद्ध खण्ड में विस्तार से दी गई है । अन्धक के मरने के बाद उसके पुत्र आडि ने शिवजी से पिता की मृत्यु का बदला लेने का निश्चय किया एक दिन वह शिवजी के यहां गया । पार्वती वहां पर नहीं थीं । उसने पार्वती का वेष बना लिया । बात चीत में शिवजी को पता चल गया कि वह पार्वती नहीं हैं वरन् दैत्य पुत्र आडि है । तो शिवजी ने अपनी शिश्नेन्द्रिय पर वज्र रखकर उसके साथ सम्भोग किया—

मेढ्रे वज्रास्त्रमादाय दानवन्तं शातयत् ।२७।
अबुध्यद्वीर कोनैव दानवेन्द्रं निषूदितम् ।२७।

(नवल किशोर प्रेस लखनऊ का सटीक मत्स्य पुराण अ० १५५)

अर्थात्—शिवजी ने अपनी शिश्नेन्द्रिय पर वज्रास्त्र को रख कर उस दैत्य पुत्र के साथ सम्भोग किया जिससे वह मर गया ।

शिवजी के चरित्र पर चाहे पुराणकारों की या उनके मानने वाले पौराणिक पण्डितों की दृष्टि में उपरोक्त घटना आभूषण हो पर वर्तमान युग में यह घटना शिव चरित्र पर काला धब्बा लगाती है । और यदि पुराण वर्णित इस घटना को सत्य माना जावे तो प्रश्न होता है कि क्या अप्राकृतिक व्यभिचार के आदि प्रचारक शङ्करजी तो नहीं थे ? क्या वज्रास्त्र के उपयोग करने का यह भी वध प्रकार था ? शिवजी दैत्य पुत्र को गला घोटकर क्या नहीं मार सकते थे ? उनका अमोघ अस्त्र त्रिशूल उस समय कहां चला गया था ? हमारे विचार से यह सब गन्दी घटनायें वाममार्गीय लोगों की धूर्ततापूर्ण कल्पनायें हैं । इनको पुराणों में से निकाल देना चाहिए । और यदि शिवजी द्वारा किया गया यह काण्ड सत्य घटना है तो शिवजी को पतित साबित करने के लिए यह एक बड़ा भारी सबूत है । पौराणिकों ! या तो पुराणों का

संशोधन करो, वरना शिव का चरित्र कलङ्कित होने से बचाया नहीं जा सकेगा।

इसी प्रकार ब्रह्मवैवर्त पुराण में एक कथा दी है कि एक बार विष्णुजी गणेशजी को देखने को शिवजी के घर गये। वहां पार्वती जी विष्णु के सौंदर्य को देखकर उन पर मुग्ध हो गईं। शिवजी ने जब यह चरित्र देखा तो पार्वती से कहा–

शंकर का पार्वती को विष्णु से कुकर्म कराने का आदेश

दुर्गाञ्चनिर्जनीभूयं तमुवाचहरः स्वयम्।
बोधया मास विविधं हितं तथ्यम् अखण्डितम् ॥१६०॥
निवेदनं मदीयं च निबोध शैल कन्यके।
शृङ्गारं देहिभद्रं ते हरये परमात्मने ॥१६१॥

अर्थ—पार्वती को एकान्त में बुलाकर शिवजी ने स्वयं अनेक प्रकार के अकाट्य एवं हितकारी वाक्यों का बोध कराया और कहा।१६०। हे पार्वती, तेरा कल्याण हो। तू मेरे निवेदन को सुन और विष्णु को शृङ्गार दान दे दे।१६१।

इस पर पार्वती ने कहा—

तव वाक्यं महादेव पालयिष्यामि सर्वथा।
देहान्तरे जन्मलब्ध्वाभजिष्यामि हरि हर ॥१६७॥

(ब्रह्म वैवर्त पु० कृष्ण जन्म खं० अ० ६)

अर्थ—हे शंकर जी! आपकी बात को मैं अवश्य पालन करूँगी और दूसरे जन्म में मैं विष्णु को प्राप्त करूँगी।

पुराण में आगे लिखा है कि पार्वती ने इस प्रतिज्ञा को पूरा कर दिया था।

यह घटना शिवजी की चारित्रिक श्रेष्ठता एवं पार्वती के पर पुरुष से बचने एवं उसके पतिव्रत धर्म का खुला उपहास नहीं तो क्या है? क्या कोई भी भला आदमी अपनी पत्नी को पर पुरुष से शौकिया सम्भोग कराने को आग्रह कर सकता है?

हमारे विचार से कोई भी भारतीय नारी ऐसी बात कहने वाले पति के सर पर चप्पल मारते-मारते एक भी बाल नहीं रहने देगी। मगर पार्वती ने शिवजी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया क्योंकि वह स्वयं विष्णु पर आसक्त थीं। पौराणिक शिव पार्वती की महिमा निराली है। इसी प्रकार शिवजी ने एक स्त्री को अपने अण्डकोष खाने का आदेश देदिया था। कथा इस प्रकार है।

शिव दूती को अण्डकोष खाने का आदेश

एक बार शिवजी ने दावत की। दावत समाप्त हो गई। उसके बाद वहां शिव दूती आई। उसे वहां आने में देर हो गई थी इधर शिवजी की भोजन सामिग्री समाप्त हो गई थी। तो उन्होंने शिव दूती को आदेश दिया—

आस्वादितं न चान्येन भक्ष्यार्थं च ददाम्यहम् ॥१२५॥
अधोभागे च मेना भेर्वातुलौ फल सन्निभौ।
भक्षयध्वं हि सहिता लम्बौ मे वृषणाविभौ।१२६।
अनेन चापि भोज्येन परातृप्तिर्भविष्यति ॥१२७॥
(पद्मपुराण सृष्टि खण्ड ६ अ० ३१)

अर्थ—अन्यों ने जिसका स्वाद नहीं लिया है, भोजन के लिए मैं देता हूँ। मेरी नाभि के नीचे दो गोल फल के समान आलम्ब रहित (उपस्थेन्द्रिय सहित) दो वृषण हैं उनको खाओ। इस भोज्य वस्तु से पूर्ण तृप्ति हो जायेगी।

एक गैर स्त्री को भोजन के स्थान पर अण्डकोष (वृषण) व लिंग खाने का आदेश देना शंकर जी के लिये शोभा की बात है या कलंक की ? यह निर्णय करना हम पाठकों के ऊपर छोड़ते हैं। पौराणिक ग्रन्थों की अधिकांश बातें ऐसी बेतुकी हैं जिन्हें पढ़कर विधर्मी सदा हिन्दू धर्म की मजाक बनाते रहे हैं। इसी प्रकार वाल्मीकि रामायण में लिखा है।

शङ्कर का १०० वर्ष तक पार्वती से रति करना

दृष्ट्वा च भगवान्देवी मैथुनायोपचक्रमे ।
तस्य संक्रीड़मानस्य महादेवस्य धीमतः ।
शिति कण्ठस्य देवस्य दिव्यं वर्ष शतं गतम् ॥६॥

(बाल्मीकि रामायण बाल सर्ग ३६)

अर्थ--विवाह के उपरान्त पार्वती देवी को देखकर शंकर उनके साथ मैथुन करने लगे, और उस मैथुन को करते हुए सौ वर्ष बीत गये।

न चापि तनयोराम तस्यामासीत्परन्तप ॥

(बाल्मीकि रामायण बालकाण्ड सर्ग ३६)

अर्थ—उस महा मैथुन से भी पार्वती के कोई पुत्र नहीं हो सका।

शिवजी का १००० साल तक पार्वती से रमण करना

मत्स्य पुराण अ० १५७ में तथा शिव पुराण रुद्र सं० कुमार खण्ड अ० १ श्लोक १५ में लिखा है कि शिवजी पार्वती के साथ १००० दिव्य वर्षों तक निरन्तर रमण करते रहे।

इन प्रमाणों से शिवजी के अत्यधिक विषयी होने का प्रमाण मिलता है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि शिवजी के पार्वती की कोख से कोई औलाद भी न हो सकी थी। अथवा यह मानना चाहिये कि पौराणिक ग्रन्थकारों ने जहां शिवजी को अत्यधिक विषयी लिखा है वहां उनकी सम्भोग शक्ति को भी अत्यधिक दिखाने के लिये शिव-पार्वती की सहस्त्र वर्ष पर्यन्त विषय करने की कल्पना की है। जनता के सामने शिव को ऊँचे चरित्र का व्यक्ति या देवता प्रस्तुत करने के स्थान पर पुराणकारों ने उसे ऊँचे दर्जे का विषयी, व्यभिचार प्रचारक, अत्यधिक स्त्रियों वाला एवं अत्यन्त भयानक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है।

आज जितने तांत्रिक शैव-शाक्त, वाम मार्गी, दुर्गा के भक्त, देवी के पूजने वाले भैरव काली के उपासक आदि सम्प्रदाय वाले लोग हैं, वे सभी शिव-पार्वती-दुर्गा-भैरव-काली आदि के रूप में (शिव पार्वती को) बड़े कुत्सित रूप में जनता के सामने रखते हैं उन पर बकरे, भैंसे आदि पशु काटते हैं, शराब गांजा, भांग, आदि का सेवी उन्हें बताते हैं। अपनी भी आकृतियां भयानक बनाये फिरते हैं। भस्म लपेटे, त्रिपुण्ड तिलक लगाये हड्डियों के ढेर धारण किये, मुर्दों की खोपड़ी हाथों में लिये, चिमटा, डमरू मोरपङ्खी धारण किये, बम २ आदि शब्द चिल्लाते ये लोग सर्वत्र देखे जा सकते हैं।

यदि शिव को इन लोगों की कल्पना व कथनानुसार हम ऐसा ही मान लेवें जैसा पुराणों में लिखा है तो हम निःसंकोच यह कहने पर विवश हैं कि यह शिव जो दुराचार का गन्दा आदर्श पेश करता है कभी भी वैदिक धर्म का ईश्वर नहीं माना जा सकेगा। इस शङ्कर को मानने से हमारे देश में घोर व्यभिचार का प्रसार हुआ है। इन्हीं तान्त्रिकों एवं वाम मार्गियों ने शिव के वीर्य तक को पीने का विधान 'केदार कल्प' पुराण में किया है, हम ग्रन्थ विस्तार भय से उन सब बातों को यहां नहीं देना चाहते हैं। शिव के सम्पूर्ण चरित्र में हमको एक भी आदर्श बात देखने को नहीं मिल सकी। जब हम पुराणों में देखते हैं कि शिव लोक में शिवजी हर समय कामिनी पाशों में फंसे रहते हैं, असंख्यों औरतें उन्हें हर समय घेरे रहती हैं, तो हमें सोचना पड़ता है कि क्या शिवजी को चौबीसों घण्टे सिवाय स्त्रियों में व्यभिचार द्वारा ऐन्द्रिक विषय भोग भोगने के और कोई काम धन्धा शेष नहीं है ? हमने मत्स्य पुराण में एक स्थान पर देखा है कि पार्वती जी ने इसीलिये शिवजी को लम्पट शब्द से सम्बोधित किया है और निम्न शब्द उनके लिये प्रयोग किये हैं—

शंकर के लिये लम्पट व धूर्त शब्दों का प्रयोग

'एष स्त्री लम्पटो देवो–(मत्स्य पु० अ० १५४ श्लोक ३१)

अर्थात्—यह (शिव) परनारियों के लम्पट हैं।

एक अन्य पुराण–'महा भागवतकार' ने शिवजी के उपनामों में उनके लिये 'धूर्त' शब्द का प्रयोग अ० ६७ श्लोक १५ में किया है। यथा–

"व्याघूर्णनयनो धूर्तो व्याघ्रचर्माम्बवृतः ॥"

यह सब शंकर के वीभत्स स्वरूप एवं दूषित आचरणों के कारण हुआ है। शंकर का वास्तविक चरित्र एवं स्वरूप क्या था या क्या हो सकता है, इसे जनता के सामने रखने के लिए हमारे या किसी भी अन्य अन्वेषक के पास केवल पुराणों का ही साहित्य है पुराणों में ही गाथायें संग्रहीत की गई हैं। जो कि लगभग सारी की सारी शंकर को अत्यन्त पतित एवं घृणा के योग्य सिद्ध करती हैं। यह निर्णय करना पुराणों के मानने वाले विद्वानों का कार्य है कि शंकर से सम्बन्धित गाथायें सत्य हैं या मिथ्या हैं। हम यदि उनको मिथ्या कपोल कल्पित घोषित करते हैं तो भी पौराणिक विद्वान उन्हें सत्य ही मानते रहेंगे। पुराणों के कारण समस्त फर्जी पौराणिक देवताओं के चरित्रों पर सदैव आक्षेप होते रहे हैं। पौराणिक विद्वान उल्टे सीधे तरीके से कोशिश करके सदैव उनके दुश्चरित्रों का समर्थन ही किया करते हैं। कभी किसी पौराणिक उत्तरदायित्व पूर्ण संस्था ने पुराणों को गलत एवं संशोधन योग्य घोषित नहीं किया है। अतः हमने उनके आधार पर शंकर चरित्र को प्रस्तुत करते हुए आपको बताया है कि किसी भी रूप में अनुकरणीय एवं उपासना योग्य देवता नहीं है तथा पुराण भी प्रमाणिक ग्रन्थों की कोटि के शास्त्र नहीं एक पुराणकार ने तो डंके की चोट पुराणों को धूर्तों के बनाये ग्रन्थ तक लिख दिया है।

पुराण बनाने वालों को धूर्त बताया है

प्राप्ते कलावहह दुष्टतर च काले ।
नत्वां भजन्ति मनुजा ननु वैचितास्ते ॥
धूर्तैः पुराण चतुरैः हरि शंकराणाम् ।
सेवा पराश्च विहितास्तव निर्मितानाम् ॥

(देवी भागवत स्क० ५ अ० १६)

अर्थात्—हे देवी ! दुष्टतर इस घोर कलियुग में लोग तेरा भजन नहीं करते हैं। बल्कि धूर्त पुराण बनाने में चतुर लोगों ने शिव और विष्णु की पूजा की श्रेष्ठता लिख मारी है और लोगों को तेरी सेवा से वंचित कर दिया है। यहां धूर्त शब्द बहु वचन में प्रयुक्त हुआ है, जो यह सिद्ध करता है कि पुराण बहुत से धूर्त लोगों ने बनाये हैं। किसी एक व्यक्ति के बनाये हुए नहीं हैं।

पुराण बनाने वालों को उपाधियां

पौराणिका नाम व्यभिचार दोषो,
न शंकनीयः कृतिभिः कदाचित् ।
पुराण कर्ता व्यभिचार जातः,
तस्यापि पुत्रो व्यभिजार जातः ॥

(सुभाषित रत्न भण्डागार)

अर्थ—पुराणों में व्यभिचार का दोष भरा पड़ा है, इसमें कोई शंका नहीं करनी चाहिए। पुराण बनाने वाला व्यभिचार से पैदा हुआ था, उनकी औलाद भी व्यभिचार से पैदा हुई थी।

भ्रष्ट लोग भागवत पढ़ते हैं

वेदैर्विहीनाश्च पठन्ति शास्त्रं,
शास्त्रेण हीनाश्च पुराण पाठाः ।

पुराण हीनाः कृषिणो भवन्ति,
भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति ॥
(अत्रि स्मृति श्लोक ३८२)

अर्थ—जो लोग वेद नहीं पढ़ सकते, वे शास्त्र पढ़ते हैं। जो शास्त्रों को भी नहीं पढ़ सकते वे खेती करते हैं। और जो महा भ्रष्ट लोग खेती भी नहीं कर सकते वे जहां तहां भागवत बांचते फिरते हैं।

इन चन्द प्रमाणों से स्पष्ट है कि भागवतादि पुराण कोई उत्तम ग्रन्थ नहीं हैं। इन पुराणों की रचना घोर साम्प्रदायिक लोगों ने मानव जाति में पाखण्ड प्रसार करके उसे लूटने खाने के लिये तथा इन ग्रन्थ का प्रमाण देकर उसे मूर्ख बनाने के लिए की थी। यह बात हम ही नहीं कहते हैं वरन् पुराणों में इसके लिये स्पष्ट प्रमाण विद्यमान हैं, कि उस समय के ब्राह्मण वर्ग ने स्वार्थान्ध होकर नाना प्रकार के मतमतान्तर जनता को गुमराह करने के ही लिये चलाये थे। महाभारत के बाद देश की पतित दशा में उस समय के धर्माचार्यों की क्या स्थिति थी यह पुराणकार के ही शब्दों में देखिये। आजकल के वे पौराणिक विद्वान जो स्वार्थान्ध होकर जनता को धर्म के नाम पर कुमार्ग गामी बनाते व नये २ सम्प्रदाय चलाते रहते हैं व आर्य समाज को बुरा भला कहते हैं वे इस दर्पण में अपना मुंह देखें—

पौराणिक पण्डितों का सच्चा स्वरूप

पूर्वं योराक्षसा राजन् ते कलौ ब्राह्मणाः स्मृताः ॥४२॥
पाखण्ड निरताः प्रायो भवन्ति जन वंचकाः ।
असत्यवादिनः सर्वे वेदधर्म विवर्जिताः ॥४३॥
दाम्भिका लोक चतुरा मानिनो वेद वर्जिताः ।
शूद्र सेवा पराः केचित् नाना धर्म प्रवर्तकाः ॥४४॥

वेद निन्दा कराः क्रूराः धर्म भ्रष्टाति वादुकाः ।
शूद्र धर्म रता विप्राः प्रतिग्रह परायणाः ॥४७॥
(देवी भागवत स्क० ६ अ० ११)

अर्थ—हे राजन् ! पूर्व काल में जो राक्षस थे वे ही कलियुग के ब्राह्मण हैं। जो पाखण्डी, ठग, असत्य वादी, सारे के सारे वेद विरोधी, दम्भी लोक व्यवहार में चतुर अभिमानी वेदों से वर्जित शूद्रों की सेवा करने वाले, शैव-वैष्णव आदि धर्म (सम्प्रदाय) चलाने वाले, वेद निन्दक (नास्तिक), धर्म से सर्वथा भ्रष्ट, अति क्रूर और अत्यन्त बकवादी होते हैं। वे शूद्रों के धर्म कर्म में लगे रहते हैं, और दान लेने में चतुर होते हैं।

पुराण पाठक का पूर्ण बहिष्कार करने का आदेश

ज्योतिर्विदोऽथर्वणाः कीराः पौराण पाठकाः ।
श्राद्धे यज्ञे महादाने वरणीयाः कदाचन ॥३८३॥
यज्ञे च फल हानिः स्यात् तस्मात्तान् परिवर्जयेत् ॥३८४॥
(अत्रि स्मृति)

अर्थ—ज्योतिषी, अथर्ववेदीय कीर तथा 'पुराण पढ़ने' वाले ब्राह्मणों को यज्ञ, दान व श्राद्ध में नहीं बुलाना चाहिए। श्राद्ध में इनको बुलाने वाले के पितर नरक में जाते हैं तथा दान का फल निष्फल हो जाता है और यज्ञ का फल भी नष्ट हो जाता है।

पौराणिक विद्वान देखें और सोचें कि इन पुराणों व स्मृतियों में जिन्हें वे शास्त्र मानते हैं, किस कदर उनकी निन्दा की है। क्या पौराणिक विद्वानों में साहस है कि वे इन पुराणों का हमारी तरह बहिष्कार करने की घोषणा कर सकें।

इन प्रमाणों को देने से हमारा तात्पर्य यह दिखाना है कि धर्म के विषय में पुराणों को प्रमाणिक नहीं मानना चाहिए।

और न मिथ्या देवताओं के चक्कर में पड़कर मानव जीवन को खराब करना चाहिये। पौराणिक विद्वानों को भी चाहिए कि वे पुराणों का त्याग कर वेदों के स्वाध्याय में प्रवृत्त होवें। इन पुराणों का रचना काल महाभारत के बहुत बाद से अंग्रेजों के भारत में आगमन तक है। हम चन्द प्रमाण इस विषय में उपस्थित करते हैं—

पुराणों में अंग्रेजी

रविवारे च सण्डे च फाल्गुने चैव फरवरी।
षष्टिश्च सिक्सटी ज्ञेया तदु दाहरणमीदृशम् ॥३७॥
(भविष्य पुराण प्रतिसर्ग खं० १ अ० ५)

अर्थ—रविवार को सण्डे, फाल्गुन को फरवरी तथा साठ को सिक्सटी अंग्रेजी में कहते हैं। यह अंग्रेजी का उदाहरण है। इसी प्रकार—

बाबर-तैमूरलङ्ग-हुमायूँ-अकबर—रैदास-मीरा—बीरबल तुलसीदास-कबीरदास—सूरदास-शिवाजी—तानसेन-आदि का वर्णन भविष्य पुराण प्रतिसर्ग खं० ४ अ० २२ में सविस्तार किया गया है प्रायः सारे ही पुराणों में बौद्ध व जैन धर्म का विशद् खण्डन किया गया है। इन बातों से पुराणों के रचनाकाल का पाठक अनुमान लगा सकते हैं।

पुराण शूद्रों के लिये बने हैं

विशेषतश्च शूद्राणां पावनानि मनीषिभिः ॥५४॥
अष्टादश पुराणानि चरितं राघवस्य च ॥५६॥
(भविष्य पुराण ब्राह्म पर्व अ० १)

अर्थ—१८ 'पुराण और राम का चरित्र (रामायण) विशेष कर शूद्रों (मूर्खों) को पवित्र करने के लिये बनाये गये हैं।' इससे सिद्ध है कि पुराण व रामायण ब्राह्मण-क्षत्रिय व वैश्यों के लिए न होकर केवल शूद्रों को ठगने खाने के लिए बनाये गये हैं।

अतः अन्य तीनों वर्णों व शिक्षित वर्ग को इनका बहिष्कार कर देना चाहिए।

क्या शिवजी ने कामदेव को भस्म किया था

शङ्कर के बारे में बहुधा यह कहा जाता है कि उन्होंने कामदेव को भस्म कर दिया था। इस विषय में अनेक प्रकार की कहानियां भी गढ़ ली गई हैं। पर हमारा कहना है कि शिवजी के जीवन चरित्र की घटनाओं को देखकर कोई भी व्यक्ति इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता है। कामदेव के प्रभावों को योगी-संयमी व ब्रह्मचारी जन ही जीत सकते हैं। शिवजी का जीवन तो पुराणों के अनुसार अत्यधिक कामुक शृङ्गार रस से पूर्ण एवं विलासितामय रहा है। जिसके हमने चन्द उदाहरण गत पृष्ठों में दिये हैं—

कहा जाता है कि शिवजी कैलाश पर रहते हैं। और वह कैलाश हिमालत पर्वत पर है। यह भी अन्ध विश्वासी धर्म भक्त जनता को बहकाने के लिए पौराणिक विद्वानों द्वारा उड़ाई गई बे सर पैर की गल्प है, क्योंकि गीता प्रेस गोरखपुर के प्रकाशित ग्रन्थ में इस प्रकार लिखा है—

बैकुण्ठ और कैलाश की स्थिति का निर्णय

बैकुण्ठ धाम पृथ्वी से १६ करोड़ योजन ऊपर स्थित है। जहां सबको अभयदान करने वाले साक्षात् भगवान लक्ष्मी पति निवास करते हैं। बैकुठ की अपेक्षा १६ गुनी ऊँचाई पर शिवजी का निवास स्थान कैलाश धाम अवस्थित है। अर्थात् पृथ्वी से २ अरब ५६ करोड़ योजन की दूरी पर स्थित है। जहां गिरिराज नन्दिनी उमा, गणेश जी, कार्तिकेय जी तथा नन्दी आदि के साथ कल्याण स्वरूप भगवान विश्वनाथ (शिवजी) विराजमान है।

(संक्षिप्त स्कन्द पु० काशी खण्ड पूर्वार्ध पृष्ठ ५७६)

एक योजन बराबर चार कोस के होता है। इस प्रकार पृथ्वी से १० अरब २४ करोड़ कोस यानी प्रायः २० अरब मील ऊपर आकाश में कहीं शिवजी, अपने कुनबे के पास रहते हैं। हमारे भोले पौराणिक बन्धु मन्दिरों में घण्टे पीटते-पीटते थक जावें 'नमः शिवाय' चिल्लाते २ मर भी जावें तो भी विष्णु व शङ्कर या गणेशजी उनकी पुकार नहीं सुन सकते। स्कन्द पुराण के इस लेख पर एक प्रश्न पैदा होता है। यह जमीन प्रतिक्षण घूमने से आकाश में अपनी स्थिति बदलती रहती है। प्रातःकाल जो तारे हमारे सर पर होते हैं, दोपहर को हमारा सर उनसे हटकर दूसरे तारों की सीध में हो जाता है। सायंकाल व रात्रि में हम नई दिशा में होते हैं, और प्रातःकाल जमीन घूमकर हमें पुनः पहिले की दिशा में लाकर खड़ा कर देती है। इस प्रकार आकाश की और हमारी स्थिति प्रतिक्षण बदलती रहती है। पुराणकार लिखता है कि विष्णु लोक व कैलाश इतनी ऊँचाई पर हैं। यहां 'ऊपर' शब्द का कोई अर्थ नहीं है जब तक कि सूर्य की अपेक्षा से समय व दिशा का निर्देश न किया जावे। स्पष्ट है कि पुराण-कार की यह गप्प अधूरी है, क्योंकि उसे ज्ञान नहीं था कि पृथ्वी के घूमते रहने से 'ऊपर' की दिशा हर समय बदलती रहती है।

फिर ऐसे दूर रहने वाले विदेशी देवता की पूजा से लाभ भी क्या है जो १००० साल तक पार्वती के साथ विषय भोग में तल्लीन रहा करे जैसा कि पुराण में लिखा है। और उस व्यसन में फँसे रहने के कारण दिन रात पुकारने वाले अपने भक्तों की खबर भी न ले सके। जिस बुलन्द तकदीर वाले शङ्कर को अरबों खरबों बेहद खूबसूरत औरतें (बकौल भागवत पुराण के) हर समय घेरे फिरती हों वह इस जमीन के काले कलूटे जीने मरने वाले पौराणिक हिन्दुओं की क्या परवाह करेगा।

खामखां यह लोग शङ्कर पर मोहित होकर उसका शिवलिंग पूज कर अपना जीवन बरबाद करते हैं। जब शिवजी सर्व व्यापक एवं घट-घट वासी नहीं हैं तो अपने भक्तों के हृदय की बात भी नहीं जान सकते हैं। फिर ऐसे देवता का ध्यान करने से लाभ भी क्या है? ईसाईयों का खुदा चौथे आसमान पर, मुसलमानों का खुदा सातवें आसमान पर रहता है, तो हमारे पुराणों का खुदा शङ्कर प्रायः २० अरब मील ऊँचा आसमान में निवास करता है। आखिर हमारे पौराणिक खुदा लोग फर्जी, (देवता गण) ईसाई व मुसलमानों के खुदाओं से किसी बात में कम क्यों रहें। बहुत सम्भव है कि यह गप्प भी यवनों के खुदा से अपने देवता को ऊँचा सिद्ध करने को स्कन्द पुराण में गढ़ी गई हो। सच्चाई क्या है यह पुराणों को मानने वाले या उनकी प्रकाशक पौराणिक संस्थायें अथवा शिव लिंग पूजने वाले भक्त लोग बता सकेंगे। क्योंकि सम्भव है उन्होंने वास्तविकता की तहकीकात कर ली होगी।

एक विचित्र मूर्ति

भारत में शिव मन्दिरों में प्रायः दो प्रकार की मूर्तियां मिलती है। एक तो गोल लम्बी जो शिव लिंग कही जाती है दूसरी चार मुंह वाली मूर्ति होती है। यह सिद्ध किया जा चुका है कि जल हरी शिव पत्नी पार्वती का गुप्तांग है। सर्वत्र तो उस जलहरी में शिव लिंग को स्थापित करके पूजा जाता है पर बहुत से शिव मन्दिरों में जल हरी में शिवजी का चार मुंह वाला सर स्थापित करके पूजा जाता है पता नहीं शिवजी का बाकी सम्पूर्ण धड़ पार्वती के गुप्तांग जलहरी में कब कैसे और क्यों समा गया व सर ही उसके बाहर कैसे निकला रह गया? अथवा शङ्कर का सर काट कर (जल हरी) में किस विधान से स्थापित किया गया है।

इस विचित्र पहेली का कोई समाधान हमको तो अब तक मिला नहीं है। उस संगमरमर की मूर्ति के पास बैठे गणेश जी (पार्वती के विलक्षण पुत्र) मां बाप की इस अजीब मजाक को देखते रहते हैं। यदि पौराणिक शिवोपासक विद्वान् इस रहस्य का स्पष्टीकरण कर सकेंगे तो हम उनके कृतज्ञ होंगे।

इसी प्रकार की कुछ प्राचीन मूर्तियां मथुरा के अजायब घर में मौजूद है. जिनमें शिव लिंग में शिवजी का मुंह बना हुआ है। यह मूर्तियां मध्यकाल में भारत में पूजी जाती रही हैं। पाठक इस बात पर हँसेंगे कि शिव लिंग में शिवजी का मुंह बना देना कितने पागलपन की बात है। पर ये मूर्तियां इस बात की साक्षी हैं कि जनता को मूर्ख बनाने के लिए कारीगर ने जैसी भी मूर्ति बनाकर दे दी लोग उसे ही पूजने लगे। प्रमाण स्वरूप डाकोर जी व जगन्नाथ जी की बेतुकी काली कलूटी भद्दी तस्वीरें बाजारों में बिकती हुई देखी जा सकती हैं भोला हिन्दू उन्हें भी भगवान का चित्र मानता है बुतपरस्ती करने वालों की बुद्धि भी बुत जैसी अड़ हो जाती है। उपास्य के गुण उपासक में आते ही है। जड़-वस्तुओं की उपासना करने वाले जड़ होने ही चाहिये। आत्मा परमात्मा के बारे में किसी बात को सोचना और सत्यान्वेषण करना यह मूर्ति पूजकों की अक्ल में नहीं आ सकता है। इसीलिये चाणक्य ने लिखा है—

मूर्ति पूजा कम अक्लों के लिये है

'प्रतिमा अल्प बुद्धिनाम्'।

(चाणक्य नीति अ० ४ श्लोक १९)

अर्थात् मूर्ति पूजा अल्प बुद्धि वालों के लिये है। कम अक्ल वालों को लोग क्या समझते हैं, पाठक समझलें।

पत्थर का लिंग शूद्र पूजते हैं

'शिवलिंगतु शूद्राणाम् ।

(शिव पु० विन्धेश्वर सं० १-१८)

अर्थ—पत्थर का लिंग शूद्रों के लिये है शूद्र का अर्थ ही मूर्ख होता है। द्विजातीयों को और बुद्धिमानों को ये पत्थर के शिव लिंग नहीं पूजने चाहिये, यह पुराण का स्पष्ट आदेश है।

मूर्ख लोग मूर्ति को ईश्वर समझते हैं

मृच्छिला धातुदार्वादिमूर्ताविश्वर बुद्धयः ।
क्लिश्यन्ति तपसा मूढाः परां शान्ति न यान्ति ते ॥

(महानिर्वाणतन्त्र)

अर्थ—मूर्ख लोग मिट्टी, पत्थर, धातु अथवा लकड़ी की मूर्तियों को ईश्वर समझते हैं। इनको कभी शान्ति प्राप्ति नहीं हो सकती है।

जलमय तीर्थ व मिट्टी के देवता नहीं होते

न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः ।

(भागवत स्कं० १० अ० ८४ श्लोक ११)

अर्थ—जलमय स्थान तीर्थ नहीं कहलाते और मिट्टी और पत्थर की प्रतिमायें देवता नहीं होती हैं।

मूर्ति में पूज्य बुद्धि व जल में तीर्थ बुद्धि रखने वाले गधे हैं, भागवत की खुली घोषणा

यस्यात्म बुद्धिः कुणपे त्रिधातुके ।
स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः ॥
यत्तीर्थ बुद्धिः सलिलेनकर्हिचित ।
जनेषुभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥

(भागवत स्कन्द १० अ० ८८ श्लोक १३)

अर्थ—जो व्यक्ति इस शरीर को आत्मा समझता है स्त्री पुत्रादि को अपना समझता है, मिट्टी पत्थर, काष्ठ आदि से बनी मूर्तियों को इष्टदेव मानता है तथा जो जल को तीर्थ समझता है वह मनुष्य होने पर भी पशुओं में नीच गधा ही है (गधे के समान है)।

उपरोक्त चन्द प्रमाणों में हमने दिखाया है कि मूर्ति पूजा चाहे वह शिव लिंग रूप में हो और चाहे विष्णु आदि फर्जी देवताओं के रूप में हो पीपल के पेड़ की हो या गङ्गा आदि की जलधारा की ही हो, अत्यन्त ही बुरी चीज है। सनातन धर्म के मान्य ग्रथों में उसके निषेध के सैकड़ों प्रमाण भरे पड़े हैं। अतः समझदार लोगों को मूर्ति पूजा या शिव लिंग पूजा की दूषित प्रथा का परित्याग कर देना चाहिए। मूर्ति पूजा का निराकरण उस समय तक नहीं होगा जब तक कि भारत में से हिन्दुओं के इन कल्पित विष्णु व शिव जैसे देवताओं के भ्रष्ट जीवन चरित्रों से जनता को अवगत नहीं कराया जावेगा। वैसे तो सारे ही देवताओं के चरित्र गन्दे हैं। वे देवता तो नहीं है, वरन् चरित्रों की दृष्टि से राक्षस ही सिद्ध होते हैं, परन्तु उन सब में ब्रह्मा विष्णु व महादेव ये तीन जितने बड़े देवता माने गये हैं पुराणों ने उनके चरित्र उतने ही अधिक खराब बताये हैं। यदि इन प्रमुख देवताओं को सनातन धर्म से निकाल दिया जावे तो वर्तमान पौराणिक सनातन धर्म ही समाप्त हो जावेगा, क्योंकि सम्पूर्ण पौराणिक धर्म का पूर्ण आधार ये तीन ही भ्रष्ट देवता हैं। हमारा मुख्य विषय यहां केवल शिव लिंग पूजा पर लिखना अतः हम अन्य देवताओं के चरित्र के दिग्दर्शन की बात छोड़ते हैं। हमें तो यहां यह बताना है कि शङ्कर जैसे कल्पित विदेशी देवता की उपासना करने से किसी का कल्याण नहीं हो सकेगा।

सदाचारी की उपासना से भक्त में सदाचार के भाव उदय होंगे और दुराचारी की भक्ति से जीवन में दुराचार के गन्दे परमाणु प्रवेश करेंगे। यह बात भी किसी-किसी पुराण बनाने वालों के दिमाग में घूम गई थी। इसीलिये पुराणों में निम्न व्यवस्थायें दी हैं।

शिव पूजकों के लिये व्यवस्था

ब्राह्मणः कुलजो विद्वान भस्मधारी भवेद्यदि।
वर्जयेतादृशं देवि! मद्योच्छिष्टं घटं यथा॥

(पद्म पु० उ० खण्ड अ० २५३ पूना व अ० २३५ कलकत्ता)

अर्थ—यदि कोई कुलीन विद्वान ब्राह्मण माथे पर भस्म आदि लगावे, जैसा कि शिव के भक्त लगाते हैं, तो उसका ऐसे ही दर्शन न करना चाहिये जैसे शराब से भरे घड़े का।

त्रिपुण्ड्रधारी पतित होता है

त्रिपुण्ड्रं शूद्रे कल्पानां शूद्राणां च विधीयते।
त्रिपुण्ड्रधारणाद्विप्रः पतितः स्यान्नसंशयः॥२०॥

(पद्म पु० उ० खण्ड अ० २५३ पूना व अ० २३५ कलकत्ता)

अर्थ—जो कोई ब्राह्मण त्रिपुण्ड्र (शिव का तिलक) माथे पर धारण करता है वह पतित हो जाता है, क्योंकि यह विधि केवल शूद्रों की है।

शिव भक्त पाखण्डी-भ्रष्ट तथा नरकगामी हैं.

खुद शिवजी की घोषणा

देवानां हितार्थाय वृत्तिः पाखण्डिनां शुभे।
कपाल चर्म भस्मास्थि धारणं तत्कृतंमया॥
येमेमतमाश्रित्य चरन्ति पृथ्वी तले।
सर्व धर्मैश्च रहिताः पश्यन्ति निरयं सदा॥

(पद्म पु० उ० खण्ड अ० २३३ पूना व अ० २३५ कलकत्ता)

अर्थ—शिवजी कहते हैं (घोषणा करते हैं) हे पार्वती ! देवताओं के हित के लिये कपाल भस्म और अस्थि धारण करने वाली पाखण्डी लोगों की वृत्ति मैंने धारण की है। जो मेरे मत को ग्रहण करके पृथ्वी पर आचरण करेंगे वे सारे धर्मों से भ्रष्ट होकर नरक को देखेंगे।

शिव लिंग पूजकों को घोर दुःख मिलेगा

शम्भो पपात भुवि लिंगमिदं प्रसिद्धं ।
शापेन तेन च भृगोर्विपिने गतस्य ॥
तं ये नराः भुवि भजन्ति कपालिनंतु ।
तेषां सुखं कथ निहापि परत्र मातः ॥
(देवी भागवत स्क० ५ अ० १६ श्लोक १६)

अर्थ—जिस शिव का लिंग भृगु के शाप से कट कर गिर पड़ा और जो हाथ में मनुष्यों की खोपड़ियां रखता है उस शिव की जो लोग उपासना करते हैं, उनको इस लोक और परलोक में कहीं सुख न मिलेगा ।

यह फतवे हमारे नहीं हैं, सनातन धर्म के परम मान्य पुराणों के हैं। बात भी ठीक है। आज प्रकाश एवं ज्ञान विज्ञान के युग में पढ़ा लिखा हिन्दू धर्म के मामले में अन्धा बनकर पोप-पुजारी एवं पण्डित के पीछे चलता है। शिव लिंग को हाथ जोड़ता है। उससे मिन्नतें मांगता है। उसके लिए मन्दिर बनवाता है। जमीन आसमान के सारे भौतिक विज्ञान को समझने वाला वैज्ञानिक कानून की बाल की खाल खींचने वाला वकील, व्यौपार में भूमण्डल भर के हिसाब की जोड़ तोड़ लगाने वाला गणितज्ञ व्यौपारी, समस्त शास्त्रों को घोटकर पी जाने वाला संस्कृत का सनातनी पण्डित, कठिन से कठिन मामलों को तय करने को सूक्ष्म

बुद्धि रखने वाला न्यायाधीश इन पत्थर पुजारियों के हाथ सारी बुद्धि बेचकर शिवजी की मूत्रेन्द्रिय के सामने सर नवाता फिरता है। वह नहीं सोचता कि आखिर यह शङ्कर की मूत्रेन्द्रिय की नकल (शिव लिंग) ही तो है इसे पूजने से क्या मिलेगा। संसार का विद्वान आकाश में उड़ने को हवाई जहाज बनाता है, चन्द्रमा व मङ्गल लोक में जाने को राकेट जहाज बना रहा है, अपार सागर की छाती पर जहाज दौड़ाता है रेडियो टेलिविजन आविष्कार करता है, संसार में वैज्ञानिक आविष्कारों के बल पर व्यापारिक व सैनिक साम्राज्य स्थापित करता है अपने देश की जनता को समृद्ध बनाता है और मानव जाति की उन्नति का यत्न करता है। पर हमारा हिन्दू समाज महादेव के पत्थर के लिंग को पानी से रगड़-रगड़ कर धोने में ही अपनी खोपड़ी खपाता रहता है। इस भोले हिन्दू को इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि इसके इन्हीं पाखण्डों के कारण ११ करोड़ हिन्दू मुसलमान बन गया एक करोड़ ईसाई हो गया, चालीस लाख सिक्खों में चला गया, २० लाख जैनी हो गया, लाखों अछूत कहा जाने वाला दलित वर्ग अब बौद्ध बना जा रहा है। नीलकण्ठ शास्त्री जैसे लाखों शिक्षित हिन्दू लिंग पूजा के पाखण्डों के कारण हिन्दू धर्म से घृणा होने से विधर्मी बन गये। पढ़ा लिखा शिक्षित नौजवान इन्हीं गन्दी बातों के कारण ईश्वर व धर्म से विमुख होकर घोर नास्तिक बनता जा रहा है। पर इस भोले हिन्दू को न अपने घर की फिकर है न अपने समाज की। न उसे अपने स्वास्थ्य की चिन्ता है, न अपनी सन्तान को उन्नत बनाने की, न उसे सत्यासत्य का विवेक करने की जरूरत है और न देश की अवनति उन्नति का उसे कुछ ध्यान है। उसे यदि ध्यान है तो शिव लिंग के लिए मन्दिर बनाने का है, खप्त है तो हर समय यह है कि शिव लिंग पर जल छोड़ता

रहे ताकि उस पत्थर के लिंग में से ज्वालामुखी फिर न फूट निकले जिससे सनातनी संसार में तबाही आ जावे। बेल पत्र चढ़ाता है तो इसलिये कि शिवजी का वीर्य पुष्ट होता रहे। अरे पागल ! तुझे शिव वीर्य से क्या करना है। पुष्ट हो या न हो। तुझे यदि पत्थर के लिंग में ज्वालामुखी फूटने का भय का भूत हर समय घेरे रहता है, तो क्यों नहीं उखाड़कर ऐसे लिङ्ग को किसी गहरे समुद्र, कुऐ, नदी या तालाब में डाल आता, जहां हर समय वह पानी से तर रहे, और तेरी पानी चढ़ाने की मेहनत बच जावे। यदि तुझे गङ्गा प्यारी है तो इन शिव लिंगों को ले जाकर गंगा की बीच धारा में छोड़ आ और अपने बेश कीमती समय को प्रभु भक्ति में लगा। या देश व समाज की सेवा का कोई काम करने में लगा दे तेरा जीवन सफल होगा और देश समाज का कल्याण होगा। इन शिव व विष्णु के मन्दिरों को गरीब बे घर-बार लोगों को रहने को दे दे, ताकि गरीबों का भला हो और देश की मकानों की समस्या के हल होने में सहायता मिले। मन्दिर के नाम लगी जायदादों को शिक्षा संस्थाओं को दे दे, ताकि मेरे देश के लाखों गरीब बच्चे अज्ञानान्धकार से मुक्त होकर स्वतन्त्र देश के शिक्षित नागरिक बन सकें। और इन सबका पुण्य, हे शिव के पुजारी ! तेरा लोक और परलोक सुधार देंगे। तेरे लिए ईश्वर का ध्यान करने को कोई शोर गुल रहित एकान्त स्थान उपयुक्त होगा।

मेरी हिन्दू कौम ! आंख खोलकर देख एक खुदा के मानने वालों ने संसार में साम्राज्य स्थापित कर लिये और खुदा ने उनकी मदद की। तुझे सदियों तक गुलाम बनाये रखा और तू सैकड़ों ईश्वर व देवी देवताओं के चक्कर में पड़ी पिटती रही। तू शिव के लिंग को ही पकड़े बैठी रही, और यह बुतपरस्ती ही तेरी सचमुच बरबादी का कारण हुई। सोमनाथ जैसे लाखों

विशाल मन्दिर इसी शिव लिंग पर अन्ध विश्वास के कारण बरबाद हुए। सारा देश इन पण्डे पुजारियों के चक्कर में आकर देवताओं की मदद की आशा और विश्वास में बरबाद हो गया। जो देवता अपनी मूर्ति की रक्षा यवनों की मार से न कर सके, मन्दिरों में चोरों से जो देवता अपने गहनों और कपड़ों की रक्षा नहीं कर सकते, खाना पानी और हवा के लिये जो देवता पुजारियों के मौहताज हैं, जो देवता पुजारियों के द्वारा तालों में हर समय इसलिये बन्द (कैद) रखे जाते हैं कि उन्हें कोई न चुरा ले जावे, या कुत्ते बिल्ली उनको अपवित्र न कर दें, वे भी क्या देवता हैं ? तुम्हें क्या देंगे ? कभी सोचा करो। आखिर मनुष्य हो। तुमको प्रभु ने बुद्धि दी है कि हर काम सोच समझकर करो। मनुष्य का अर्थ ही मनन शील होता है। जरा तो अक्ल से काम लिया करो। मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता है। इसे अन्ध-विश्वासों में बरबाद कर देना बुद्धिमानों की बात नहीं है।

क्या राम ने शिव लिंग पूजा की थी

जनता को भ्रम में डालने के लिये एक बेतुकी गल्प यह उड़ाई गई है कि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी महाराज ने सेतु-बन्ध रामेश्वर पर शिव लिंग पूजा की थी, तथा उसे स्थापित किया था। पर यह बात सर्वथा निराधार है। बाल्मीकि रामायण में जो कि राम का प्राचीनतम जीवन चरित्र है इस प्रकार का कोई लेख नहीं है जिससे इस गल्प का समर्थन हो सके। तस्वीरें छापने वाली फर्मों ने ऐसे चित्र अवश्य बनाकर बाजार में प्रचारित कर दिये हैं, जिनमें रामचन्द्रजी घड़े से शिवलिंग पर जल की धारा छोड़ते दिखाये गये हैं। पर यह एक बड़ी शरारत की बात है। जिन अज्ञानियों ने राम के द्वारा शिव लिंग पूजने की बात उड़ाई है, वे समझते हैं कि रामचन्द्रजी से शिवजी बड़े थे,

राम के पूज्य परमात्मा थे। उन लोगों ने कभी अपने घर के मान्य ग्रन्थों को नहीं देखा है जिनमें स्पष्ट लिखा है कि—

शंकर व पार्वती राम का चिन्तन करते हैं

इदमेव सदा मे स्यान्मानसे रघुनन्दनः ।
सर्वज्ञः शङ्कर साक्षात्पार्वत्या सहितः सदा ॥५०॥
(अध्यात्म रामायण अरण्य का० सर्ग ८)

श्री रामचन्द्रजी के स्वरूप का शङ्कर और पार्वती मन में सदा चिन्तन किया करते हैं।

शंकर द्वारा राम की स्तुति

अहं भवन्नाम गृणन्कृतार्थो ॥
बसामि काश्याम निशंभवान्या ॥
मुमूर्ष माणस्य विमुक्तयेऽहं ।
दिशामि मन्त्रं तव राम नाम ॥६२॥
(अध्यात्म रामायण युद्ध का० सर्ग १५)

रामचन्द्रजी के दर्शन से शिवजी तर गये

राम के राज्याभिषेक के अवसर पर शङ्कर ने राम की स्तुति करते हुए कहा—'प्रभो ! आपके नामोच्चारण से कृतार्थ होकर मैं दिन रात पार्वती के साथ काशी में रहता हूँ, और वहां मरणासन्न पुरुषों को उनके मोक्ष के लिए आपके तारने वाले मन्त्र 'राम नाम' का उपदेश किया करता हूँ।'

राघवः सर्व देवानां पावनः पुरुषोत्तम ॥१२१॥
स्पृष्ट्वा द्रष्ट्वा ते नैव विमलाः शङ्करादय ॥१२२॥
(पद्मपुराण उ० खण्ड अ० २५५ कलकत्ता)

अर्थ—सबसे पवित्र रामचन्द्रजी हैं जिनके स्पर्श और दर्शन से शङ्करादि देवता निर्मल (पवित्र) हो गये।

इन श्लोकों में यह स्पष्ट रूप से बताया है कि शङ्कर से रामचन्द्र जी का स्थान बहुत ऊँचा है रामचन्द्र जी अति पवित्र हैं। शंकर अति अपवित्र हैं। शङ्कर जैसे न जाने कितने सनातन धर्म के पतित कल्पित देवता रामचन्द्रजी के दर्शन व स्पर्श व नाम जपने से तर गये पवित्र हो गये। जब पुराण ही राम के दर्शन व उनका नाम जपने से शङ्कर का पवित्र होना बताता है तो यह कहना मूर्खता नं० १ नहीं तो क्या है कि वह महान् राम उस पतित शंकर को भी नहीं वरन् उसके लिंग की पूजा करते थे, उस पर जल चढ़ाते थे। पर कौन देखने वाला है। यही तो हमारे सनातन धर्म की पोल है कि जो चाहो बाहियात बात महापुरुषों के जीवन में घुसेड़ दो, उनके पवित्र निष्कलंक अति श्रेष्ठ जीवन चरित्रों को कलंकित करने के लिये किसी भी प्रकार की गन्दी बातें उनके बारे में उड़ा दो, उनको चाहे जैसी स्वांगियों जैसी गन्दी तस्वीरें बनाकर जनता में प्रचारित करके अल्पज्ञ जनता में मिथ्या ज्ञान का (ढोंग बाजी का) प्रसार करो। मर्यादा पुरुषोत्तम महान राम को बदनाम करने के लिए उन्हें भी 'शिवलिंग पूजक' बताकर दुनियां में कलङ्कित करो।

अरे ओ पोप लोगो! तुमको बिल्कुल लाज नहीं रही और न तुमसे कोई कुछ कहने वाला है, हिन्दू धर्म इसीलिये बदनाम हुआ और वैदिक धर्म इसीलिए इस हिन्दू धर्म के नाम से कलङ्कित हुआ है। कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति यह देखने का यत्न नहीं करता है कि शिव लिंग पूजा का असली स्वरूप क्या है। वास्तविक बात यह है कि कुछ पुराणों ने व उनके भक्तों ने शिव की प्रशंसा में कुछ ऐसे पुलन्दे बांधे हैं कि उनकी चकाचौंध में किसी को असलियत जानने की बात सूझती ही नहीं। आपको आश्चर्य होगा कि स्वराज्य मिलने पर प्रायः ६०० वर्ष के बाद

सोमनाथ के भग्न मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया गया और उसमें फिर एक ऊँचा सा शिवलिंग स्थापित किया गया तो भारत के सनातन धर्मी विचार के तत्कालीन राष्ट्रपति महामाननीय श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद जी भी उसे सर नवाने पहुंचे थे इससे सिद्ध है कि राजनीति के महान पण्डित भी धर्म के मामले में जानकारी शून्य के बराबर रखते हैं, और पण्डा पुजारियों का अन्धानुपन करते हैं। बहुत कम लोग धर्म के विषय में सत्यासत्य का अन्वेषण करते हैं। बाजार में दो पैसे की हांडी खरीदते समय दस दुकानों पर देखते हैं, कि कहीं फूटी तो नहीं है। किन्तु धर्म जिसका सम्बन्ध 'यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः सधर्म' इस लोक में अभ्युत्थान एवं जीवन के अनन्तर अन्य जन्म के सुख और अन्त में निःश्रेयस (मोक्ष) से होता है, उसके बारे में इतनी लापरवाही बरतते हैं यह कितने दुःख की बात है। जिसका जन्म जिस कुल में हो गया वह उस कुल के पैतृक धर्म से चिपटा रहना पसन्द करता है, फिर चाहे वह कितनी ही रूढ़ियों से युक्त एवं गलत क्यों न हो।

दृष्टान्त के लिए शिवलिंग पूजा को ही ले लीजिए। चन्द हजार वर्षों से लोग इस वाममार्गीय सभ्यता के आदर्श "योनि लिंग पूजा" को करते चले आ रहे हैं। पर कितने लोग इतिहास में ऐसे हुए हैं, जिन्होंने शैवमतानुयायी होते इस कुप्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई है। वैष्णवों ने यदि शैवों की या शैवों ने वैष्णवों की निन्दा की है, तो द्वेष वश की है। दोनों दल अपने चेलों का गिरोह बढ़ाने में प्रयत्नशील रहे हैं। भारत के गत ५ हजार वर्षों के लम्बे इतिहास में केवल एक ही सत्यान्वेषी आदर्श व्यक्ति दृष्टिगोचर होता है, जिसने कट्टर ब्राह्मण शैव कुल में जन्म लेकर इस कुप्रथा के वास्तविक स्वरूप को समझकर सच्चे परमात्मा की

खोज की और सारे संसार के मतमतान्तरों के घनघोर घटाटोपों को नष्ट करके एक वेदोक्त परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को संसार के सामने रख कर धर्म के विषय में मानव का मार्ग प्रदर्शन किया है। वह महान व्यक्ति युगसृष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज थे। जिन्होंने अद्वितीय विद्याबल, योगबल एवं अजेय तर्कबल के सहारे सारे मतमतान्तरों के अन्धकार को नष्ट करके अमर ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" के द्वारा मनुष्यों को सत्य बात समझने की बुद्धि प्रदान की। ऋषि दयानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित आर्य समाज धर्म के विषय में जनता को निरन्तर मार्ग प्रदर्शन करने में यत्नशील हैं। आवश्यकता इस बात की है कि पौराणिक बन्धु हटधर्मी छोड़कर आर्यसमाज की बात को सुनें, ऋषि के ग्रन्थों को पढ़ें उस पर मनन करें, और असत्य को छोड़ कर सत्य को ग्रहण करें जो कि मनुष्यता का धर्म है।

शिवलिंग पूजा का विधान भारत और उसकी आदर्श सभ्यता के लिये महान् कलंक है। यह पाठकों ने गत पृष्ठों में देखा है। अब हम एक प्रमाण पौराणिक शङ्कर के जुआ खेलने की घटना का और देते हैं। जिससे आपको पता लगेगा कि भारत में सारे ही कुकर्मों का प्रचार इन पौराणिक देवताओं के गन्दे चरित्रों के कारण ही हुआ है. जिनका पुराणों में निर्लज्जता पूर्वक वर्णन किया है। सरकार को चाहिये कि राष्ट्र के चरित्र को सुरक्षित रखने के लिये इन दूषित पुराणों को जब्त कर ले।

नैतिक पतन की पराकाष्ठा

हमने पीछे दिखाया है कि 'लिंग पुराण' में शिव जी ने ब्रह्मा को अपने दाहिने अङ्ग (पसली) से पैदा हुआ बताया हैं अर्थात् ब्रह्माजी शिवजी के बेटे हैं। संक्षिप्त स्कन्ध पुराण गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित के पृष्ठ १७ पर लिखा है कि—

"ब्रह्माजी निरन्तर मणिमय शिवलिंग का पूजन करते हैं।"

अगर शिव में जरा भी शरमो-हया बाकी होती तो अपने सासु ल्लास बेटे को ऐसा पाप कर्म अपने साथ करने से अवश्य ही रोक देते। हमारे विचार से इन दोनों पतित देवताओं में नैतिकता सर्वथा नहीं है।

शंकर का जुआ खेलना

शङ्करश्च भवानी च क्रीडयाद्यूतमास्थितौ।
भवान्याऽभ्यर्चिता लक्ष्मीर्धेनु रूपेण संस्थिता ॥२५॥
गौर्य्या जित्वापुरा शम्भुः नग्नो द्यूते विसर्जितः।
अतोऽयंशङ्करो दुःखी गौरी नित्यं सुखेस्थिता ॥२२॥
पराजये विरुद्धं स्यात् प्रतिपद्युदितेरवौ।
प्रातर्गोधनः पूज्यो द्यूतंरात्रौ समाचरेत् ॥२६॥

(पद्म पुराण उत्तर खं० अ० १२२ कलकत्ता)

अर्थ—महादेव ने जुआ खेला था। पार्वती ने शङ्कर को जुये में पूरी तरह जीत लिया और उन्हें नङ्गा करके छोड़ दिया। इसलिए शङ्कर सदा दुःखी व पार्वती सदा सुखी रहती हैं। प्रतिपदा के दिन सूर्य निकलने पर पराजय विरुद्ध पड़ता है। अतः प्रातःकाल गोवर्धन पूजा करे और जुआ खेले।

जिस जुए के कारण महाभारत का विनाशकारी संग्राम हुआ जिस जुए को सारा संसार बुरा कहता है। जिसके कारण नित्य हजारों घर बरबाद होते हैं, तथा जिसका निषेध 'अक्षैर्मादीव्यः' कहकर ऋग्वेद ने किया है, उसी जुए के प्रचार की आज्ञा पुराण दे रहा है। क्योंकि महादेव ने जुआ खेला था और पुराण की व्यवस्था है अतः यह घृणित कर्म भी सनातन धर्म है। जब देवता कुकर्मों के प्रचारक होंगे तो अन्ध भक्त जनता भी क्यों न उनके दुराचरणों का अनुगमन करेगी। जैसे गुरू वैसे चेला बनेंगे।

जब पुराण जुए का आदेश दे रहा है तो भक्तों में क्यों न जुए का गन्दा प्रचार व्याप्त होगा। बाजार में शङ्कर व पार्वती के जुआ खेलते हुए चित्र बनाकर बेचे जाते हैं, और भक्त लोग उनको खरीद कर आदर से घर ले जाते हैं। हमारे हिन्दू समाज में किस कदर मूर्खता धर्म के नाम पर छा रही है, यह देखकर दुःख होता है।

रावण द्वारा शिवलिंग की पूजा

रावण ने बालुकामय शिवलिंग की पूजा की थी, इस विषय में बाल्मीकि रामायण में एक वर्णन आता है जिसे बहुधा शिव लिंग पूजा के समर्थन में प्रस्तुत किया जाता है। हमारा कहना है कि बाल्मीकि रामायण में प्रारम्भ में ६५०० श्लोक थे। बाद को लोगों ने उसमें मिलावटें कर करके २४००० श्लोक कर दिये हैं। दक्षिण में रावण की ठीक वैसे ही पूजा की जाती है जैसे उत्तर भारत में राम की की जाती है। शिवलिंग की पूजा की कल्पना—प्रारम्भ व प्रचार दक्षिण भारत से हुआ। अतः वहां के लोगों ने रावण को शिवलिंग पूजक बताकर इस कार्य का महत्व बढ़ाने के लिए बहुत बाद को बाल्मीकि रामायण में यह श्लोक प्रक्षिप्त जोड़ दिये हैं। यदि कोई इन्हें प्रक्षिप्त मानने को तैयार नहीं होवे तो भी हमारा कहना है कि राक्षस लोग विषयी व दुराचारी होते हैं। रावण तो राक्षसेश्वर था। वह तो अत्यधिक दुराचारी व विषयी होना ही चाहिये था। यदि उसने लिंग पूजा की हो तो भी उसका कार्य धर्म विषय में प्रमाणिक व उचित नहीं माना जा सकता है, और न उसका अनुकरण ही किया जाना चाहिये। शिवलिंग पूजा के औचित्य में रावण का उदाहरण देना शिवलिंग पूजा को रावण वंशीयों का राक्षसी कर्म स्पष्टतया स्वीकार करना है—

हनूमानजी द्वारा शिवलिंग पूजने की गप्प

गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त स्कन्द पुराण पृष्ठ ४४४ पर लिखा है।

"तदनन्तर वायु पुत्र हनूमानजी ने रामेश्वर के उत्तर भाग में भगवान रामचन्द्र जी की अज्ञानुसार अपने द्वारा लाये गये शिवलिंग को स्थापित किया।"

पुराणों की सारी ही बातें वे सिर पैर की होती हैं। हनूमान जी महाराज महान योद्धा, संस्कृत एवं व्याकरण के महान पण्डित थे। वे स्वयं साक्षात् विष्णु के अवतार (जैसा कि पुराण मानते हैं) भगवान राम के सेवक थे, जिनके दर्शन व स्पर्श से शङ्कर जी पवित्र हुये थे। भगवान राम हर समय हनूमान जी को प्राप्त थे, तो फिर वे राम को छोड़ कर शिवलिंग काहे को पूजने बैठे थे। हनूमानजी को भगवान विष्णु (रामचन्द्र जी) से बढ़कर किस चीज की या सद्गति की आवश्यकता शेष थी जिसके लिए वे शिवलिंग जैसी दूषित चीज को पूजने या उसे स्थापित करने का पागलपन करते ? क्या शिवलिंग रामचन्द्र जी से भी अधिक महत्व रखता था ? इसके अतिरिक्त जब महाभारत अनुशासन पर्व अ० १४ में स्पष्ट लिखा है (प्रमाण पीछे देखो) कि पुरुष चिन्ह व शिवलिंग में कोई अन्तर नहीं है। पुल्लिंग होने से सारे ही मर्द शङ्कर हैं व स्त्री लिंग होने से सारी ही स्त्रियां पार्वती है। तो फिर अपने पुरुष चिन्ह को छोड़कर पराया शरीर (शिव लिंग) पूजने में या रुद्राभिषेक करने में कौन सी अक्लमन्दी की बात है। प्रत्येक पाठक इस पर गम्भीरता से विचार करे।

राम के युग में मूर्ति पूजा नहीं थी

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से हमारी मान्यता है कि मूर्ति पूजा

का विधान बौद्ध या जैन काल से भारत में प्रचलित हुआ है। किन्तु यदि विवक्षता में दुर्जनतोषन्याय से हम पुराण की ही बात थोड़ी देर को मान लेवें तो भी राम के युग (त्रेतायुग) में मूर्ति पूजा का विधान भारत में नहीं था। देखिए प्रमाण—

सत्येषु मानसी पूजा देवानां तृप्ति कारिणी।
त्रेतायां वन्हिपूजा च यज्ञदानादिक क्रिया ॥११॥
द्वापरे मूर्ति पूजा च देवानां वै प्रियंकरी।
कलौतु दारुणे प्राप्ते ब्रह्मपूजन मुत्तमम् ॥१२॥

(भविष्य पु० प्रति सर्ग ३ अ० २२)

अर्थ—सत्युग में मानसी पूजा देवों को प्रसन्न करने वाली थी, त्रेता में यज्ञ व दान आदि मुख्य धर्म कार्य थे। द्वापर में मूर्ति पूजा देवों को सन्तुष्ट करने वाली थी। और कलियुग में इन सबको छोड़कर केवल निराकार ब्रह्म की उपासना ही सर्व श्रेष्ठ विधि ईश्वर पूजा की है।

इससे सिद्ध है कि राम के त्रेता युग में मूर्ति-पूजा नहीं की जाती थी व वर्तमान कलियुग में मूर्ति पूजा सनातन धर्म के अनुसार महा पाप है, क्योंकि उनके शास्त्र के विरुद्ध है। अतः स्कन्द पुराण की हनुमानजी द्वारा शिवलिंग पूजा की बात उड़ाना खरी पण्डूखाने की गप्प है।

अब शिवलिंग पूजा के बारे में खुद शिवजी महाराज का चेले फांसने के लिए ४२० का धोखे का बयान भी देखिये, भोली जनता को किस कदर पण्डितों द्वारा धर्म के नाम पर बेवकूफ बनाया जाता है।

शिवलिंग पूजा के महात्म्य व चेले फांसने का जाल

बयान हलफी के साथ बजात खुद शिवजी फरमाते हैं कि—

१—जो मेरे लिंग की स्थापना करता है और उसके लिये सुन्दर मन्दिर बनवाता है, वह कल्प भर मेरे लोक में निवास करता है।

२—जो मेरे मन्दिर में झाड़ू देता है और धूल मिट्टी आदि हटाकर शुद्ध करता है। वह सब रोगों से छूट जाता है।

३—अखण्ड बेल-पत्रों से और भांति-भांति के पुष्पों से शिव लिंग की पूजा करके एक लाख वर्षों तक स्वर्ग में निवास करता है।

४—देव मन्दिर को चूने से पुतवाने वाले का शरीर दृढ़ होता है।

५—मैं (शङ्कर) शिवलिंग को प्रणाम करने पर १५, उसे स्नान कराने पर २० तथा उसकी विधि पूर्वक पूजा करने पर १०० अपराधों को क्षमा कर देता हूँ।

(संक्षिप्त स्कन्द पुराण गीता प्रेस का पृष्ठ १०५)

जब शंकर के कथनानुसार उसके लिङ्ग पूजने का इतना फल होता है तो उसके सारे शरीर को पूजने का कितना बड़ा फल न मिलता होगा। पौराणिक हकीम व डाक्टरों को चाहिये कि सवेरे ही झाड़ू व डलिया लेकर शिव लिंग वाले मन्दिर के द्वार पर बैठ जाया करें और हर सनातनी रोगी से मन्दिर में झाड़ू लगवाया करें। शिवजी का वचन है सब रोगी अच्छे हो जाया करेंगे। कितना सस्ता नुस्खा है। पौराणिको ! बेल-पत्र शिव लिंग पर चढ़ाये जाओ और स्वर्गवासी हो जाओ। जप तप योग वेदाध्ययन ज्ञान विज्ञान की तुम्हें कोई जरूरत नहीं। पढ़ने लिखने पर धूल डालो येन केन प्रकारेण पेट भरकर जीवन काट लो। अज्ञानी बने रहो और केवल शिवलिंग पर बेल-पत्र चढ़ाते रहो। दिन भर में २० बार रोज खूब पाप करो और शाम को

केवल १ लोटा पानी शिवलिंग पर चढ़ाते रहो। बस सीधा स्वर्ग का तुम्हें टिकट मिल जावेगा। शिवजी ने तुम्हें स्वर्ग भेजने की गारन्टी कर दी है। यही तो तुम चाहते हो, तुम्हारे पाखण्डी पुराण व उनके प्रचारक पोप लोगों की दृष्टि में सारे वेद, शास्त्र उपनिषद्-दर्शन गलत रहे। सदाचार पवित्र जीवन, उच्च चरित्र श्रेष्ठ शिक्षा दीक्षा सब व्यर्थ हैं। उनकी निगाह में सारे ऋषि मुनि अज्ञानी रहे जो इतना सस्ता नुस्खा न बता सके। सनातन धर्मी संस्था वालो! यदि तुम इन बातों पर विश्वास करते हो तो सब मिलकर भारत सरकार से एक कानून बनवा लो, कि शिवलिंग पर जल छोड़ने वाले के २० गुनाह माफ फरमाये जावें। जब तुम्हारा शङ्कर जैसा फर्जी देवता गुनाह माफ कर देता है, तो सरकार को भी कानून बनाने में अड़चन न होगी देश के सारे गुनहगार तब तुम्हारे गिरोह में भर्ती हो जावेंगे और पौराणिक पण्डितों की आमदनी खूब बढ़ जावेगी। और यदि तुम्हें इन गप्पों पर विश्वास नहीं है तो कलकत्ता व गोरखपुर व मथुरा वालों से कहो कि वह पुराणों का घासलेटी साहित्य छापकर अन्धविश्वासी भारतीय जनता में प्रचारित करके उसे धर्म के नाम पर गलत मार्ग पर डालने का कार्य न करें।

वास्तव में ऐसे ही मूर्खता पूर्ण प्रलोभन दे देकर व ईश्वर के स्थान पर कंकण पत्थर पुजवा कर हमारी धर्म ज्ञान से शून्य हिन्दू जनता को स्वार्थी लोगों, पाखण्ड प्रसार की ठेकेदार संस्थाओं व पुराणों ने मध्ययुग से आज तक बेवकूफ बनाया है। और उसे खूब लूटा खाया है। इसी प्रचार का प्रभाव है कि आज भी इस प्रकार एवं ज्ञान विज्ञान के युग में पौराणिक भोला हिन्दू शिवलिंग की बट्टी को दक्षिण के लिंगायत सम्प्रदाय

की तरह गले में बांधे फिरता है, और अपनी खोपड़ी उससे रगड़ता रहता है। न जाने मेरी इस भोली हिन्दू कौम को कब अक्ल आवेगी।

राजनैतिक दृष्टि से भारतीय हिन्दू मंगोल, हूण, शक यूनानी यवन, अंग्रेज, फ्रान्सीसी व पुर्तगाल वालों की गुलामी में सदियों से पीसा जाता रहा है। और धार्मिक गुलामी में इस जमीन से २० अरब मील ऊपर आकाश में बैठे फर्जी शिव को अपनी खोपड़ी बेच चुका है व उसके त्रिशूल के डर के मारे उसके शिव लिंग को पूजता रहता है दिन रात उसकी खुशामद में लगा रहता है। मेरे देश का कैसा दुर्भाग्य है कि चिरकाल से भारत की इस पवित्र भूमि पर व इसके रहने वालों के दिमागों पर विदेशियों का अधिकार रहा है। हमारा देश तो लम्बे संघर्षों के बाद स्वतन्त्र हो चुका देश की भूमि पर से विदेशी शासन हट चुका, पर पौराणिक हिन्दुओं की खोपड़ियों में से फर्जी परदेशी देवता शिव के भय का भूत न निकल सका। आज भी इन विदेशी देवताओं की गुलामी की निशानियां शिव लिंग व विष्णु के मन्दिरों के रूप में हमारे स्वतन्त्र देश की जमीन पर कलंक स्वरूप विद्यमान है। क्या हम आशा करें कि अपने पवित्र भारत देश की भूमि पर से यह बौद्धिक पराधीनता के अपमान जनक चिन्ह, ये विदेशी देवों की मूर्तियां जल्द दूर कर दी जावेंगी, ताकि पूर्णांश में भारत के हम नागरिक विश्व में सर्वथा सर्वांश स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में गर्व के साथ अपना मस्तक ऊँचा कर सकें।

संसार के देश-भक्त लोगों ने अपने देश के महापुरुषों को अपनी पूजा का आधार बनाया है अरबी मुसलमानों ने अपने देश के महापुरुष मौहम्मद को खुदा का पैगम्बर माना, योरोप वालों ने

ईसा को साक्षात् खुदा का बेटा मानकर उपासना की। ये सभी महापुरुष उनके देश वासी थे। परन्तु पौराणिक हिन्दू ने अपना उपास्य देव ऐसों को माना जो उसके देश के तो क्या कभी उसकी जमीन के भी निवासी नही रहे। इन विदेशी शिव गणेश व विष्णु आदि देवताओं के भक्त सदा इसीलिए गैरों की मार खाते रहे कि इनको कभी सर्व व्यापक जगदाधार परमेश्वर का विश्वास नहीं रहा। परमात्मा से विमुख लोगों की जो दुर्दशा होनी चाहिये सदा विदेशियों ने उनकी वही की। खेद है, कि अब भी इन अन्धविश्वासी धर्म भक्त भोले हिन्दुओं को समझ नही आती है। आर्य समाज सदा इनको सन्मार्ग का प्रदर्शन करता है उसे ये लोग अपना शत्रु समझते हैं। मेरे भोले शिवलिंग पूजक भक्तो ! यदि तुम शिवलिंग के स्थान पर अपने शरीर को पूजा करो, सदा अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो जितना समय तुम शिवलिंग पर पानी चढ़ाने में लगाते हो, उतना समय अपने शरीर पर तेल मालिश करने में लगाओ, अपनी उपस्थेन्द्रिय पर शीतल जल की धारा छोड़ा करो, तो तुम्हारा शरीर दृढ़ बनेगा ब्रह्मचर्य की साधना होगी प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्र पतन का नाश होगा। समस्त शरीर की व वीर्य कोष की गरमी शान्त होगी। शरीर के समस्त रोग जल चिकित्सा विज्ञान के 'सिट्जबाथ' के अनुसार दूर होकर चित्त में स्फूर्ति उत्पन्न होगी। तुमने देखा होगा कि छोटे-छोटे बालकों को भारत की प्राचीन संस्कृति में पली हुई पुरानी मातायें अपने पैरों पर बिठला कर उनकी उपस्थेन्द्रिय पर शीतल जल की धारा छोड़ती हैं। इससे उन बालक, बालिकाओं के गर्भ तक की गरमी व रोग दूर होकर उनका शरीर फूलता चला आता है। ऐसे बालक बालिकाओं को कभी चेचक, खसरा, सूखा मोतीझला, फोड़े, फुन्सी आदि

रोग नहीं होते। शरीर का समस्त विजातीय द्रव्य निकलकर उनकी काया सर्वथा निरोगी बन जाती है। जो नई रोशनी की स्त्रियां ऐसा नहीं करती हैं, उनके बालक सदा रोगी बने रहते हैं। इसी विज्ञान के अनुसार यदि बड़ी उम्र के (स्त्री-पुरुष) भी इस क्रिया को करें तो वह पूर्ण स्वस्थ बन सकते हैं। इस विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिये 'जल चिकित्सा' के ग्रन्थ देखे जा सकते हैं।

उपसंहार

यहां तक हमने शिवजी के व्यक्तित्व चरित्र के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है। उसे पढ़कर विचारशील विद्वान यह देखेंगे कि आचरण की दृष्टि से शिवजी बहुत पतित व्यक्ति हैं। उनकी भक्ति करने, उनके जीवन चरित्र का मनन करने तथा अनुगमन करने वाले व्यक्तियों पर शिवजी के दूषित कारनामों का प्रभाव पड़े बिना न रहेगा इसके साथ ही एक बात और भी विचारणीय है, और वह यह कि कोई व्यक्ति यदि संसार में स्वयं खराब चीज खाता है, खराब आचरण रखता है और वह समाज से पृथक रहता है तो इससे संसार की कोई हानि नहीं होती है। केवल उन बुराइयों के कारण उस व्यक्ति का जीवन दूषित एवं कलङ्कित हो जाता है, उसका स्वभाव खराब हो जाने से वह व्यक्ति केवल अपनी ही हानि करने वाला होता है। पर यदि वही दूषित आचार विचार एवं संस्कार वाला व्यक्ति समाज के मध्य में रहने लगे तथा दूसरे लोगों के ऊपर अपनी माया फैला कर अथवा दूसरों की प्रेरणा देकर उन्हें भी अपने जैसा कुमार्ग गामी बनाने लगे तो इससे सारे समाज की हानि होती है। यदि वह दुष्टाचारी व्यक्ति एक साधारण कोटि का होता है तो उसका प्रभाव थोड़े एवं निम्न कोटि के व्यक्तियों पर पड़ता है, पर यदि वह कोई उच्च पदस्थ शक्तिशाली, गिरोहबन्द व्यक्ति हो अथवा जनता द्वारा पूजनीय स्थिति का व्यक्ति अथवा देवता हो तो उसके निजी आचरणों का सारे समाज पर भयानक प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता है। उस पर भी जब वह स्वयं दुराचार के लिए दूसरों को प्रेरणा करके समाज में दुराचार फैलाने पर उतर आवें तो वह बहुत ही खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

जहां तक शङ्कर जी के व्यक्तिगत चरित्र एवं कार्य कलापों का सम्बन्ध है, हमें केवल यही कहने का अधिकार है कि वह अनुकरणीय एवं उपासना के योग्य देवता नहीं सिद्ध होता है। हम यहां एक ऐसा प्रमाण हिन्दू धर्म की शैव शाखा के परममान्य शास्त्र शिव पुराण से उपस्थित करते हैं जिसे पढ़कर प्रत्येक चौंक पड़ेगा और सोचने पर विवश होगा कि क्या यही वह शङ्कर महान देवता है जिसकी भक्ति में हमारा हिन्दू समुदाय लाखों करोड़ों की संख्या में दिन रात व्यस्त रह कर आत्म कल्याण की भावना से तन्मय रहता है। हम समझते हैं कि पौराणिक शङ्कर का सत्य स्वरूप इस प्रमाण से सूर्य के प्रकाश के समान स्पष्ट हो जावेगा। आशा है कि हमें शैव शास्त्र में से सत्य के प्रकाश के लिये इस उदाहरण को ज्यों का त्यों उद्धृत करने के लिए क्षमा करेंगे शिव पुराण उमा संहिता अ० ४ में लिखा है:—

शिव की माया का चमत्कार

सनत्कुमार जी बोले, हे व्यास जी—

श्रृणु व्यास महाबुद्धे शांकरीं सुखदां कथाम्।
यस्याः श्रवण मात्रेण शिवे भक्तिः प्रजायते ॥७॥

अर्थ—शिवजी की सुखदायक कथा सुनो, जिसके सुनने मात्र से शिवजी में भक्ति उत्पन्न होती है।

शिव माया प्रभावेण बृद्धरिः काममोहितः।
पर स्त्री घर्षणं चक्रे बहुवारं मुनीश्वरं ॥१७॥
इन्द्रस्त्रिदशपोभूत्वा गौतम स्त्री विमोहितः।
पापं चकार दुष्टात्मा शापं प्राप मुनेस्तदा ॥१८॥
पावकोऽपि जगच्छ्रेष्टो मोहितश्शिवमायया।
कामाधीनः कृता गर्वात्ततस्ते नैव चोदधृतः ॥१९॥
जगत्प्राणोऽपि गर्वेण मोहितश्शिवमायया।

कामेन निर्जितो व्यास चक्रेऽन्यस्त्रीरतिं पुरा ॥२०॥
चण्ड रश्मिस्तु मार्तण्डो मोहितश्शिवमायया ।
कामा कुलो बभूवाशु दृष्ट्वाश्वीं हयरूपधृक् ॥२१॥
चन्द्रश्च मोहितश्शंभोर्मायया काम संकुलः ।
गुरुपत्नीं जहाराथ युतस्तेनैव चोद्धृतः ॥२२॥
पूर्वंतु मित्रावरुणौ घोरे तपसि संस्थितौ :
मोहितौ तावपि मुनी शिव माया विमोहितौ ॥२३॥
उर्वशीं तरुणीं दृष्ट्वा कामुकौ संबभूवतुः ।
मित्रः कुम्भे जहौ रेतोवरुणोऽपि तथा जले ॥२४॥
ततः कुम्भात्समुत्पन्नो वसिष्ठो मित्र संभवः ।
अगस्त्यो वरुणाज्जातो वडवाग्नि समद्युतिः ॥२५॥

अर्थ—हे मुनीश्वर ! शिवजी की माया के प्रभाव से विष्णु ने काम में मोहित हो अनेक बार पर स्त्री प्रसङ्ग किया ॥१७॥ इन्द्र देवताओं का स्वामी हो के गौतम मुनि की स्त्री पर मोहित हो पाप करने लगा तो उस दुष्टात्मा ने गौतम का शाप पाया ॥१८॥ जगत में श्रेष्ठ अग्नि भी शिव की माया से मोहित होने से गर्व से काम के वशीभूत हुए, और फिर शिव ने ही उनका उद्धार किया ॥१९॥ हे व्यास जी ! जगत के प्राण विष्णु भी शिव की माया से मोहित होके काम के वशीभूत होने से पर स्त्री में प्रेम करने लगे ॥२०॥ तीव्र किरणों वाले सूर्य भी शिव की माया से मोहित हो काम में व्याकुल होके घोड़ी को देखकर शीघ्र ही घोड़े का रूप धारण करने वाले हुए ॥२१॥ शिव की माया से मोहित हुए काम से व्याकुल चन्द्रमा ने भी गुरु पत्नी को हरण किया और शिव ने ही उनका उद्धार किया ॥२२॥ पहिले घोर तप में प्रवृत्त हुए मित्रा वरुणा नामक दोनों मुनि भी शिव की माया से मोहित हो ।२३। उर्वशी अप्सरा को देख वे दोनों काम से पीड़ित

हुए। तब मित्र ने घड़े में अपना वीर्य छोड़ा और वरुण ने जल में छोड़ा ॥२४॥ तब उस कुम्भ से मित्र के पुत्र वशिष्ठजी उत्पन्न हुए वरुण से बड़वानल के समान कान्ति वाले अगस्त जी उत्पन्न हुए ॥२५॥

दक्षश्च मोहितश्शंभोर्मायया ब्राह्मणास्सुतः ।
भ्रातृभिस्स भगिन्यां वै भोक्तुकामोऽभवत्पुरा ॥२६॥
ब्रह्मा च बहुवारं हि मोहितश्शिवमायया ।
अभवद्भोक्तुकामश्च स्वसुतायां परासु च ॥२७॥
च्यवनोऽपिमहायोगी मोहितश्शिवमायया ।
सुकन्यया विजह्रेस कामासक्तो बभूवह ॥२८॥
कश्यपः शिवमायातो मोहितः काम संकुलः ।
ययाचे कन्यकां मोहाद्धन्वनो नृपतेः पुरा ॥२९॥
गरुणः शांडिली कन्यां नेतु कामस्समोहितः ।
विज्ञातस्तु तया सद्यो दग्धपक्षी बभूवह ॥३०॥
विभाण्डको मुनिर्नारीं दृष्ट्वा कामवशं गतः ।
ऋष्य शृङ्ग सुतस्यस्य मृग्यां जातश्शिवाज्ञया ॥३१॥
गौतमश्च मुनिश्शंभोर्मायया मोहित मानसः ।
दृष्ट्वा शरद्वती नग्नां रराम क्षुभितस्तया ॥३२॥

अर्थ—शिव की माया से मोहित ब्रह्मा के पुत्र दक्ष भी अपने भाइयों सहित बाणी के साथ भोग करने की इच्छा वाले हुए ।२६। ब्रह्माजी ने अनेक बार शिव की माया से मोहित हो आसक्त हुई अपनी पुत्रियों से भोग करने की इच्छा की थी ।२७। शिव माया से मोहित हुए महायोगी च्यवन ऋषि ने भी काम में आसक्त हो अपनी कन्या में आसक्ति की ।२८। शिव माया से मुग्ध हो कश्यप ने भी काम के वश में हो अज्ञान से धन्वा राजा की कन्या मांगी ।२९। मुग्ध हुए गरुण ने भी शांडिली की कन्या लेने की इच्छा

की, फिर उस कन्या के ज्ञात होने पर उनके पक्ष भस्म हो गये ।३०। विभांडक मुनि भी स्त्री को देख कर काम के वशीभूत हुए, ऋष्य शृङ्ग का पुत्र शिव की आज्ञा से हरिणी में पैदा हुआ ।३१। शम्भु की माया से मुग्ध हुए गौतम मुनि ने भी शरद्वती को नग्न देख काम से व्याकुल हो उसके साथ रमण किया ।३२।

रेतः स्कन्नं दधार स्वं द्रोण्णां चैव स तापसः ।
तस्माच्चकलशाज्जातो द्रोणश्शस्त्रभृतां वरः ॥३३॥
पराशरो महायोगी मोहितश्शिवमायया ।
मत्स्योदर्य्यां च चिक्रीड़े कुमार्यां दासकन्यया ॥३४॥
विश्वामित्रो बभूवाथ मोहितश्शिवमायया ।
रेमेमेनकया व्यास वने काम वशं गतः ॥३५॥
वसिष्ठेन विरोधं तु कृतवान्नष्टचेतनः ।
पुनः शिव प्रसादाच्च ब्राह्मणोऽभूत्स एव वै ॥३६॥
रावणो वैश्रवाः कामी बभूव शिव मायया ।
सीतां-जह्रे कुबुद्धिस्तु मोहितो मृत्युमाप च ॥३७॥
बृहस्पतिः मुनिवरो मोहितः शिवमायया ।
भ्रातृ पत्न्यां वशी रेमे भारद्वाजस्ततोऽभवत् ॥३८॥
इतिमाया प्रभावो हि शङ्करस्य महात्मनः ॥३९॥

अर्थ—फिर उस तपस्वी ने निकले हुए अपने वीर्य को दौने में रखा तो उससे कलश से शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य उत्पन्न हुए ।३३। शिव की माया से मोहित हुए महायोगी पाराशर ने दास की कन्या कुमारी मत्स्योदरी से विहार किया ।३४। विश्वामित्र ने शिव माया से मोहित होकर बन में मैनका से रमण किया व काम के वशीभूत हुए ।३५। चेतना रहित हो उन्होंने वशिष्ठ से विरोध किया फिर वह शिव के प्रसाद से ब्राह्मण हुए ।३६। शिव माया के वश में रावण वैश्रवा ने कामी हो कुबुद्धि

से सीता को हरण किया और वह मृत्यु को प्राप्त हुआ ।३७। शंकर की माया से मोहित हुए मुनि श्रेष्ठ बृहस्पति ने काम के वश हो भ्राता की स्त्री से रमण किया और उससे भारद्वाज उत्पन्न हुए ।३८। सनत्कुमार बोले हे व्यास जी ! मैंने यह महात्मा शिवजी की माया का प्रभाव वर्णन किया है ।३९।

यह वह कथा है जिसे सुनकर शिवजी में भक्ति उत्पन्न होने की बात कही गई है। कोई भी समझदार व्यक्ति यह सोच सकता है कि इस कथा से शिवजी के प्रति भक्ति उत्पन्न होगी या उनके सम्पूर्ण चरित्र स्वभाव एवं प्रभाव का कच्चा चिट्ठा जनता के सामने आ जावेगा जिससे बुद्धिमान जन शिवजी से इसलिए नफरत करने लगेंगे कि कहीं शिवजी की माया के प्रभाव से वे व्यभिचारी न बन जावें। यदि शिवजी की वास्तव में यही माया है तब तो ऐसे महा व्यभिचार प्रचार के ठेकेदार देवता का हैड क्वार्टर (मन्दिर) वेश्याओं के मुहल्लों में बनाना उचित होगा ताकि वेश्याओं को ही कुछ लाभ हो सके।

हमने इस पुस्तक के गत पृष्ठों में शिव के चरित्र से चन्द नमूने देखे हैं। तथा यह भी देखा है कि शिवलिंग की पूजा व्यभिचारी लोगों द्वारा किस आधार पर व क्यों देश में प्रचलित की गई है। सबसे अन्त में हमने शिव माया के चमत्कार भी देखे हैं। इन सबको पढ़ कर हम देख व समझ सकते हैं कि पुराणों के शिवजी कौन हैं, कैसे हैं, व उनकी उपासना करने से हानि होगी या लाभ होगा। शिवजी जमीन से प्रायः २० अरब मील ऊपर कहीं रहते बताये गए हैं, जहां केवल औरतें ही रहती हैं। मर्द जो भी भक्ति करके वहां जाता है वह भी औरत बन कर शिवजी की सेवा करता है। शिवजी कामिनी पाशों से नित्य बंधे रहते हैं। शिव लोक में असंख्य अप्सरायें भोगने को रहती हैं। शिवजी की माया में जो भी फँसे वे सब व्यभिचारी बन गये। इसलिए

शिव व पार्वती के भयानक रूप को देखकर हर व्यक्ति को उनका भक्त बनने से पहले १००-१०० बार सोच लेना चाहिए कि उनका रास्ता सही है या गलत। उसे व्यभिचार का मार्ग पसन्द है या सदाचार का। हमारे अपने विचार से हर व्यक्ति को इन शिव आदि देवताओं के झमेले से बचकर एक ईश्वर की उपासना वैदिक विधि से करनी चाहिये। इसी में उसके मानव जीवन की सफलता है।

हमने यह पुस्तक सर्व साधारण को शिवलिंग पूजा की वास्तविकता जताने को लिखी है। स्वतन्त्र भारत में सामाजिक दोषों को हमारी राष्ट्रीय सरकार कानून बनाकर दूर कर रही है, धार्मिक दोषों व अन्ध-विश्वासों को दूर करना धार्मिक विद्वानों का काम है। यह काम धर्म निरपेक्ष सरकार से नहीं होगा। महाभारत के बाद ५००० वर्ष से हमारे पवित्र वैदिक धर्मी समाज में स्वार्थी मतवादियों के विषैले गन्दे फोड़े चले आ रहे हैं। इनका आपरेशन करना, और सत्य वैदिक धर्म को प्रचारित करना स्वाध्यायशील आर्य विद्वानों का कर्त्तव्य है। हमारे इस ग्रन्थ को पढ़ कर हमारे शिवलिंग पूजक बन्धु ज्ञान प्राप्त करें यही हमारी कामना है। वे इस कुमार्ग को छोड़कर ईश्वरीय ज्ञान वेद के सत्य धर्म की शरण में आवें। और इन कल्पित देवी देवताओं के झमेले से बचकर एक सर्व व्यापक परमात्मा की भक्ति करना सीखें, यही हमारी प्रार्थना है।

ईश्वरोपासना का वैदिक प्रकार

अब अन्त में हम अपने पाठकों को ईश्वरोपासना का वैदिक प्रकार बताते हैं। मनुस्मृति के इस सम्बन्ध में निम्न आदेश हैं।

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नो पास्ते पश्चिमाम्।
स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः ॥१०३॥

अपां समीपे नियतो नैत्यकंविधिमास्थित ।
सावित्री मप्यधीयीत गत्वारण्यं समाहितः ॥१०४॥
(मनु अ० २)

अर्थ—जो प्रातःकाल की सन्ध्या न करे और सायं को भी न करे, उसका सम्पूर्ण द्विज कर्मों से शूद्र के समान बहिष्कार कर देना चाहिए ।१०३। जल के समीप एकाग्रचित से बन या एकान्त में कहीं जाकर सन्ध्या बन्दन आदि नित्य कर्म और गायत्री का जाप करे ।१०४। सन्ध्या का शब्दार्थ है, अच्छे प्रकार से प्रभु का ध्यान करना । इसके लिये प्रातः एवं सायंकाल के समय दोनों (दिन व रात्रि) सन्धि बेलाओं में किसी भी एकान्त जगह में, नदी के तट पर या बन में, नहा धोकर शुद्ध पवित्र स्थान में पद्मासन आदि किसी भी स्थिर आसन से बैठ जावे। सर्व प्रथम पवित्र जल से तीन आचमन करे । चोटी में गांठ लगाले ताकि ध्यान के समय बाल हवा से उड़कर चित्त को न बटावें । आचमन से गले मुँह की शुद्धि हो जाती है, साधारण कफ आदि गले में हो तो दूर हो जाता है । इसके अतिरिक्त एक मनोवैज्ञानिक रहस्य और है । उपासक दाहिने हाथ की हथेली में आचमन के लिए जल लेता है। फिर 'शंनोदेवी' का आचमन मन्त्र पढ़ता है । उसकी दृष्टि जल पर होती है । यह दृढ़ संकल्पात्मक मन से भावना करता है कि "यह जल मुझको कल्याणकारी हो, मुझको सुखों का दाता हो, सब ओर से मेरे ऊपर सुख की वर्षा करे, मैं सुखों व निरोगता की प्राप्ति के लिए इस अमृत जल का पान करता हूँ ।" तो उपासक की संकल्प शक्ति हाथ की हथेली में प्रवाहित होकर व दृष्टि पथ द्वारा उस जल में प्रवेश करके उसको वास्तव में अमृत बना देती है और उसका शरीर पर वही प्रभाव होता है जो भक्त मन्त्र द्वारा चाहता है।

जिन लोगों ने मनोविज्ञान के ग्रन्थों को पढ़ा है वे इस रहस्य को समझते हैं। इसके बाद बायें हाथ की हथेली में जल लेकर मार्जन मन्त्रों से आत्मा में पूर्ण विश्वास एवं सात्विक संकल्पात्मक मन के साथ भिन्न-भिन्न अङ्गों पर जल छिड़के। जिससे शारीरिक आलस्य की निवृत्ति होती है और शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न होती है। मन की एकाग्रता के निमित्त ओं भूः भुवः स्वः के प्राणायाम मंत्र को मन में उच्चारण करते हुए प्राणायाम करे। उसके आगे ऋषि दयानन्द प्रणीत वैदिक सन्ध्या विधि के अनुसार ईश्वर को हृदय में सर्वव्यापक अनुभव करते हुए आंख बन्द करके बाहरी जगत से ध्यान को हटाकर प्रभु प्रेम में मग्न होकर ईश्वर का स्मरण करे। ईश्वर प्रार्थना के तीन अङ्ग है। पहिले मन को प्रभु में तल्लीन करने के लिये उसके गुणों का बार-बार वर्णन करे। इसे स्तुति कहते हैं। फिर अन्तःकरण में ऐसा अनुभव करे कि मैं और प्रभु एक हैं। प्रभु मेरे अन्दर समाया हुआ है, बिल्कुल मुझमें व्याप्त है, मुझमें और उसमें कोई दूरी नहीं है। प्रभु सर्व शक्तिमान दयालु है। मुझ पर कृपा कर रहा है, मेरे अवगुणों को दूर कर रहा है, मेरे ऊपर सुखों की वर्षा कर रहा है। मैं ईश्वर से बल व सद्गुण प्राप्त कर रहा हूं। इसे उपासना कहते हैं। उसी समय ईश्वर से उपासक प्रार्थना करे कि प्रभो! आप मुझे बल देवें, बुद्धि देवें, मुझे ज्ञान-वान बनावें, मेरे अमुक-अमुक कष्टों को दूर करें। और भी जो कुछ याचना करनी हो प्रभु से उपासक दृढ़ मन एवं शुद्ध संकल्प के साथ आन्तरिक पूर्ण विश्वास से प्रार्थना करे। इसे तीसरा अङ्ग प्रार्थना कहते हैं। जब तक स्थिरता पूर्वक मन लगे इसी प्रकार ईश्वर की स्तुति, उपासना तथा प्रार्थना भक्त नित्य दोनों समय किया करें।

स्तुति से ईश्वर में प्रीति उत्पन्न होती है। उपासना से ईश्वर के गुण उपासक में आते हैं प्रार्थना से चित्त का अहङ्कार दूर

होकर मन में सौम्यता आती है। शुद्धहृदय से की गई आवश्यक प्रार्थना फलवती होती है। मनोबल दृढ़ होता है, शारीरिक एवं मानसिक दोष दूर होते हैं। प्रार्थना के लिये प्रातः ऊषाकाल के प्रारम्भ से लेकर सूर्योदय तक का समय होता है व सायंकाल को अस्त होते सूर्य के समय से तारागणों के दर्शन तक का समय सर्वोपयुक्त है। सूर्य के उदय अस्त होने की किरणें खुले शरीर पर पड़ने से रोगों का नाश करके स्वास्थ्य देती हैं। सूर्योदय के पश्चात् व सूर्यास्त से पूर्व अग्निहोत्र का समय होता है।

जो लोग इस वैदिक विधि से ईश्वर की स्तुति, उपासना व प्रार्थना नित्य किया करते हैं वह सफल मनोरथ होते हैं। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्व व्यापक, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि कर्ता है। वह प्रभु अनन्त विश्व में एक रस व्याप्त है, सारे लोक लोकान्तरों को धारण करता, रचता व प्रलय कर्ता है। सब मनुष्यों को उसी की उपासना करनी चाहिये मिथ्या देवी देवताओं की अनेक ईश्वरवाद की अथवा अवतार वाद की झूंठी भ्रमपूर्ण कल्पनायें ईश्वर के सत्य स्वरूप को न समझने वाले अज्ञानियों ने की हैं। यह सब गलत हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं। अतः वेदों के आधार से ही प्रभु की उपासना करना योग्य है।

ईश्वर की भक्ति करने के लिए न मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों की जरूरत है, न घण्टा घड़ियाल बजाने की। न मूर्ति की जरूरत है न ईश्वर से मिलाने को पीर, पैगम्बर देवता या अवतार रूपी एजेन्टों (दलालों) की जहां जी चाहे जब जी चाहे, कोई भी ध्यान को एकाग्र करके सच्चे प्रेमी भक्त की तरह

ईश्वर के ध्यान में तन्मय हो सकता है। कोई आडम्बर नहीं करने की आवश्यकता है। भक्त ध्यान करेगा, अपने प्रभु से अपने दिल की बात कहेगा और प्रभु सर्व व्यापक घट-घट वासी होने से उसकी बात जानेगा और उसे पूरा करेगा। इसमें किसी दलाल व मध्यस्थ का क्या काम।

यजुर्वेद में आदेश है 'ओम् कृतो स्मरः' अर्थात् 'हे कर्मशील मनुष्य! तू ओ३म् नाम से ईश्वर का स्मरण कर।' योगदर्शन कहता है 'तस्य वाचकः प्रणवः' उस ईश्वर का नाम ओम् है। 'तज्जपस्तदर्थ भावनम्' उस ओम के अर्थ का स्मरण, करते हुए बार-बार मानसिक जाप करो। बिना अर्थ को समझे कोरी तोता रटन्त बेकार होती है। इन वैदिक आदर्शों के विपरीत किसी भी प्रकार की मूर्ति पूजा या अन्य प्रकार से ईश्वर का ध्यान नहीं करना चाहिये। क्योंकि शेष सब प्रकार अवैदिक एवं गलत हैं।

मूर्ति पूजा के द्वारा ईश्वर का ध्यान अथवा उससे आत्मा का मेल नहीं होता है। कारण यह है कि उपासक का आत्मा तो शरीर में बन्द रहता है और ईश्वर के सर्व व्यापक होने से यह माना कि ईश्वर मूर्ति में भी व्यापक होता है, पर उस प्रभु से सान्निध्य स्थापित करने के लिये, उससे उपासना (नैकट्य) प्राप्त करने के लिये जीवात्मा शरीर को छोड़कर मूर्ति में व्यापक ईश्वर से मिलने के लिये उसमें प्रवेश नहीं कर सकता है। सच्ची उपासना ईश्वर व आत्मा का मेल, अज्ञानता के परदे को दूर करने से उपासक के अन्तःकरण में ही सम्भव होता है। जहां कि दोनों ही व्यापक व्याप्य रूप से वर्तमान रहते हैं। यह एक रहस्य है, जिसे मूर्ति पूजक पौराणिक भाई नहीं समझते हैं।

यह विषय बहुत बड़ा है। इस पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखा

जा सकता है। परन्तु यहां हमें संक्षेप से ईश्वरोपासना का वैदिक प्रकार दर्शाना इष्ट था जो हमने ऊपर दिखाया है। साधारणतया इतना ही पर्याप्त है। जो लोग विशेष जानना चाहें वे आर्य साहित्य के अनेक ग्रन्थों को देख सकते हैं और अपने ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं। इस विषय में हमारी पुस्तक 'ईश्वर सिद्धि' को देखना उचित होगा।

परिशिष्ट

[इस पुस्तक के दूसरे संस्करण तक कुछ प्रमाण देने से रह गये थे, उनको बाद के संस्करण में पाठकों एवं शास्त्रर्थी विद्वानों के लाभार्थ हम दे रहे हैं।]

अनेक जिद्दी पौराणिक विद्वान पुराणों के श्लोकों के अर्थ तोड़ मरोड़ कर शिव लिंग को ज्योतिर्लिङ्ग तथा जलहरी को वेदी सिद्ध करने का कुप्रयास किया करते हैं और कहते हैं कि शिवजी ने दारुवन में जाकर ऋषि पत्नियों के साथ कोई व्यभिचार नहीं किया था। वे केवल ऋषि पत्नियों की परीक्षार्थ वहां गये थे।

लिंग शब्द का अर्थ पौराणिक लोग 'लयनाल्लिङ्गम्' अर्थात् जिसमें सारा विश्वलीन हो जाता है, उस परमात्मा को लिङ्ग कहते हैं, ऐसा करते हैं। इनके पाखण्ड का भण्डा फोड़ करने के लिये यद्यपि यथेष्ट प्रमाण हमने इस ग्रन्थ में पीछे दिये हैं, पर कुछ विशेष प्रमाण हम यहां और देते हैं, जिनको देखकर सारे ही विपक्षी विद्वानों के मुँह बन्द हो जावेंगे।

शिवजी का ऋषि पत्नियों से व्यभिचार व मारपीट

ऋषयः ऊचु—व्यभिचाररता भार्याः सन्त्याज्याः पतिनेरिता ॥२९॥
दृष्ट्वा व्यभिचरन्तीह ह्यस्माभिः पुरुषाधम ॥३१॥
ताड्याञ्चक्रिरेदण्डैर्लोष्ठिभिर्मुष्टिभिर्द्विजाः ॥३८॥
दृष्ट्वाचरन्तं गिरिशं नग्नं विकृति लक्षणम् ।
प्राचुरेतद्भवल्लिंगमुत्पाट्य सुदुर्मते ! ॥३९॥
अस्माभिर्विविधाः शापाः प्रवृत्तास्ते पराहताः ।
ताडितोऽस्माभिरत्यर्थं लिंगन्तु विनिपातितम् ।५४॥
(कूर्मपुराण उत्तरार्ध अ० ३८)

ऋषियों ने कहा —हमने अपनी पतिव्रता पत्नियों को पुरुषाधम (महानीच) शिवजी के साथ व्यभिचार करते हुए देखा। हमने उस शिव को डण्डे, लोहे व लात घूसों से खूब पीटा। हमने शिव को नंगा विकृति आकृति वाला देखकर उसे शाप दिया कि हे दुर्मति (मूर्ख) तेरी यह लिंगेन्द्रिय कटकर गिर पड़े। हमारे उन अनेक शापों से रति कार्य के लिये जो लिंगेन्द्रिय होती है, वह कटकर गिर पड़ी।

उसी शिव मूत्रेन्द्रिय की पूजा का आदेश

ब्रह्मोवाच—यद्दृष्टं भवता तस्यलिंगं भुवि निपातितम् ।
तल्लिङ्गानुकृती शस्य कृत्वा लिङ्गमनुत्तमम् ॥२॥
पूजयध्वं व सपत्नीका सादरं पुत्र संयुताः ॥३॥
(कूर्म पुराण उत्तरार्ध अ० ३९)

ब्रह्माजी ने ऋषियों को आदेश दिया—तुमने जिस शिवलिंग को काटकर पृथ्वी पर पतित हुआ देखा है उसी लिंगेन्द्रिय की आकृति का लिंग बनाकर अपनी पत्नी व पुत्रों के साथ आदर से तुम लोग पूजा करो—

इन प्रमाणों से प्रगट है कि शिवजी ने दारुवन में जाकर ऋषि पत्नियों के साथ धमासान व्यभिचार किया था जिस पर ऋषियों ने उनकी लात घूसों व लाठी आदि से पिटाई की थी क्रोधित होकर उन्होंने शिवजी के व्यभिचार के काम में आने वाले लिंग को शाप देकर काटकर भूमि पर गिरा दिया था। शिवजी जब दारुवन में गये थे तो वेः—

दिगम्बरोऽतितेजस्वी भूति भूषण विभूषितः।
सचेष्टां सकदक्षां च हस्ते लिंगं विधारयन् ॥१०॥

(शिवपुराण कोटि रुद्र सं० अ० १२)

देह पर भस्म रमाये सुन्दर तेजस्वी वेष बनाकर तथा अपनी लिंगेन्द्रिय को हाथ में पकड़े हुए वहां गये थे। वहां जाकर उन्होंने माया फैलाकर स्त्रियों को मोहित व कामोत्त जित कर दिया था।

योऽन्तः पुरुषो योनिर्लोकानामव्ययो हरिः।
स्त्रीवेषं विष्णु रास्थाय सोऽनुगच्छति शूलिनम् ॥९॥
पूर्णचन्द्र वदनं पीनोन्नत पयोधरम्।
शुचिस्मितं सुप्रसन्नंरणन्नूपुरकद्वम् ॥१०॥
सुपीत वसनं दिव्यं श्यामलञ्चारुलोचनम्।
उदार हंस गमनं विलासि सुमनोहरम् ॥११॥
एवं स भगवानीशो देवदारुवनं हरः।
चचार हरिणा साद्धं मायया मोहयञ्चजगत् ॥१२॥
दृष्ट्वा चरन्तं विश्वेशं तत्र तत्र पिनाकिनम्।
मायया मोहिता नार्योदेवदेवंसमन्वयुः ॥१३॥
विस्त्रस्ताभरणाः सर्वास्त्यक्तवा लज्जां पतिव्रता।
सहैव तेन कामार्त्ता विलासिन्यश्चरन्ति हि ॥१४॥
ऋषीणां पुत्रकाये स्युर्युवानो जित मानसाः।

अन्वागमन्हृषी केशं सर्वे कम प्रपीडिताः ॥१५॥
(कूर्म पुराण उत्तरार्ध अ० ३८)

अर्थ—शिवजी स्वयं तथा विष्णु को सुन्दरी औरत बना कर दारुवन में गये। विष्णु जी का (स्त्री वेष में) चन्द्रमा जैसा सुन्दर मुख था, छातियां खूब उठी हुई थीं, देखने में बड़ी खूब सूरत, प्रसन्न वदन, पैरों में नूपुरों की झंकार करते हुए, पीले वस्त्र पहिने, कजरारे चञ्चल नेत्र, हंस की सी मस्त मन को हर लेने वाली चाल से वहां गये। वहां शिवजी व विष्णु को इन वेषों में विचरते देखकर उनकी माया से स्त्रियां मोहित हो गईं। उन्होंने अपने आभूषण व वस्त्र उतार कर फेंक दिये, लज्जा त्याग दी और कामातुर होकर शिवजी के पास गईं। ऋषियों के पुत्र भी कामातुर होकर विष्णु स्त्री रूपी विष्णु से जाकर भिड़ गये।

उक्त सारे विवरण से स्पष्ट है कि विष्णु ने ऋषि पुत्रों से अपने साथ व्यभिचार कराया तथा शिवजी ने ऋषि पत्नियों से स्वयं व्यभिचार किया था। शिवजी का व्यभिचार करना व उनकी मूत्रेन्द्रिय का कटकर गिरना तथा उसी की नकल बनाकर पूजी जाने वाली वर्तमान शिव लिंग का मूत्रेन्द्रिय होना यह सब पूर्णतया सिद्ध है।

शिव उपस्थेन्द्रिय का लिंग नाम पड़ने का कारण

दारुवन में व्यभिचार करने पर मुनियों ने शिव को निम्न शब्दों में शाप दे दिया—

यस्मात्कलत्रहर्ता त्व तस्मात्षण्ढोभवत्वरम् ।
एवं शप्तः समुनिभिर्लिगं तस्या पतद्भुवि ।
भूमि प्राप्तं च तल्लिगं ववृधे तरसा महद् ॥२५॥

आवृत्य सप्त पातालान्क्षणाल्लिङ्ग मधोर्ध्वतः ।
व्याप्य पृथिवीं समग्रांच अन्तरिक्ष समावृणोत् ॥२६॥
स्वर्गाः समावृताः सर्वे स्वर्गातीतमथाभवत् ।
न मही न च दिक्चक्रं न तोयं नच पावकः ॥२७॥
न च वायुर्नवाऽऽकाशं नाहंकारो न वा महत् ।
न चाव्यक्तं न कालश्च न महा प्रकृतिस्तथा ॥२८॥
नासीदद्वैत विभागं च सर्वलीनं च तत्क्षात् ।
यस्माल्लीनं जगत्सर्वं तस्मिंल्लिंगे महात्मनः ॥२९॥
लयनाल्लिङ्गमत्येवं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥३०॥

(स्कन्द पु० माहेश्वर खण्ड अ० ६)

अर्थ —'क्योंकि तुमने हमारी पत्नियों को भ्रष्ट व हरण किया है अतः 'षण्ड' अर्थात् हिजड़े (लिङ्गहीन) हो जाओ।" मुनियों के इस प्रकार शाप देते ही शिव का लिङ्ग (उपस्थेन्द्रिय) कटकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। भूमि पर गिरते ही वह अत्यन्त बढ़ गई। उसने सात पाताल तथा ऊपर के लोक एक क्षण में ढक लिये। सारी पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग सभी उससे ढक गये। वह स्वर्ग से भी ऊपर तक बढ़ गई, पृथ्वी, दिशायें, जल, अग्नि वायु आकाश, अहङ्कार, महतत्व, अव्यक्त, काल, महा प्रकृति, परमाणु एवं सारे लोक उससे आवृत हो गये कुछ भी शेष नहीं बच सका। क्योंकि शिव की उस कटी हुई उपस्थेन्दिय ने सारे जगत् को अपने में लीन कर लिया अतः महात्मा शिव की उस उपस्थेन्द्रिय को ही 'लिङ्ग' कहा जाने लगा। विद्वान लोग कहते हैं कि जिसमें सब कुछ लीन हो जावे उसे 'लिङ्ग' कहते हैं।

इस प्रमाण से यह प्रमाणित है कि शिव लिंग शब्द शिव की

उपस्येन्द्रिय का ही वाचक है। शिवजी को 'षण्ड' अर्थात् लिंग-हीन शब्द भी बड़े महत्व का प्रयुक्त किया गया है। उससे भी शिवलिङ्ग को अन्य कुछ नहीं बताया जा सकता है। इसी सिलसिले में आगे के श्लोकों में स्पष्ट किया गया है कि शिवलिंग को ज्योतिर्लिङ्ग बताना भी मूर्खता की बात है।

जब शिव के उस कटे हुए लिङ्ग का विस्तार बहुत हो गया तो देवताओं ने विष्णु व ब्रह्मा से उसकी लम्बाई का पता लगाने को कहा—

देवाः ऊचुः

अस्यमूलं त्वया विष्णो ! पद्मोद्भव ! चमस्तकम् ।
युवाभ्यां च विलोक्यं स्यात्स्थानेस्यात्परि पालकौ ॥३३॥
श्रुत्वा तु तौ महाभागौ वैकुण्ठ कमलोद्भवौ ।
विष्णुर्गतो हि पाताल ब्रह्मा स्वर्गं जगामह ॥३४॥
स्वर्गं गतस्तदा ब्रह्मा अवलोकनतत्परः ।
ना पश्यत्तत्र लिंगस्य मस्तकं च विचक्षणः ॥३५॥

(स्कन्द पु० माहेश्वर खण्ड अ० ६)

देवताओं ने कहा कि विष्णु ! तुम इस लिंग की लम्बाई का पता लगाने नीचे की ओर जाओ तथा ब्रह्माजी ! तुम ऊपर की ओर जाओ विष्णु जी पाताल की ओर गये और ब्रह्माजी ऊपर स्वर्ग की ओर गये लेकिन ब्रह्मा को कहीं भी उसका अन्त न दिखाई दिया:—

इसी कथा में आगे दिया है कि विष्णु ने नीचे से वापिस लौटकर बताया कि उनको उस लिंगेन्द्रिय का अन्त नहीं मिला। ब्रह्मा ने ऊपर से लौटकर झूठ बोला कि उनको अन्त मिल गया और गवाही में केतकी का फूल पेश कर दिया। इस झूठ बोलने पर केतकी के फूल व ब्रह्मा को शाप दिये गये।

यही कथा अन्य पुराणों में कुछ भिन्न प्रकार से दी गई है। वहां लिखा है कि ब्रह्मा व विष्णु में एक दिन विवाद उठ खड़ा हुआ कि दोनों में कौन बड़ा है। दोनों ही अपने को बड़ा बताते थे। उसी समय उनके बीच में एक लिंग प्रकट हो गया। वहां यह निश्चय हुआ कि जो भी इस लिंग के सिरे का पता लगा लावे वही बड़ा माना जावेगा। तदनुसार विष्णु जी नीचे को व ब्रह्मा ऊपर को गये इसके आगे की कथा एक समान है—पौराणिक विद्वान् उस लिंग को 'ज्योतिर्लिङ्ग' बताकर धोखा दिया करते हैं। स्कन्द पुराण सभी पुराणों में सबसे बड़ा व माननीय पुराण है। उसमें ऊपर के प्रमाणों के आधार पर डंके की चोट यह घोषणा कर दी है कि शिवलिंग शिव की मूत्रेन्द्रिय ही थी। उसे अन्य कुछ भी बताने वाले लोग कोरे जालसाज हैं। वे पुराणों को तो देखते ही नहीं हैं केवल उत्तर देने के लिए उल्टे सीधे अर्थ भिड़ाया करते हैं।

अब हम सनातन धर्म के एक प्रसिद्ध विद्वान द्वारा शिवलिंग पूजा के समर्थन में लिखे गये लेख को उद्धृत करते हैं जो कि काफी मनोरंजक है–

दिल्ली के एक पौराणिक विद्वान ने 'सनातन धर्मालोक' नाम से अपनी एक ग्रन्थमाला निकाली है, उसके खण्ड ६ में पृ० ६५३ पर वह हमारी पुस्तक शिवलिङ्ग पूजा क्यों ? के सम्बन्ध में लिखते हैं–

"जो कि वादी लिखते हैं—परमात्मा के स्थान पर महादेव का लिंग (मूत्रेन्द्रिय) जनता से पुजवा डाला' तो क्या वादी महादेव के सिर की पूजा करेंगे—यदि हम इसकी आज्ञा दे दें। क्या वादी लिंग का अर्थ केवल शिश्न ही जानते हैं ? महादेव महान देव परमात्मा ही तो है, उनका लिंग ब्रह्माण्ड का प्रतीक

है। .....अथवा शिव लिंग को शिव का लिंग तथा जलहरी को पार्वती का 'भग' भी आप लोगों के अनुसार मान लिया जावे, और उनके पूजनीय होने में शङ्का की जावे तो उस पर वादी यह जाने कि—"जगत पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ" गौरीशङ्कर परमात्मा होने से जगत के जननी (माता) जनक (पिता) हैं। जननी जनक को पूजनीय कौन नहीं मानता ? वादी भी तो माता पिता को पूजनीय मानते हैं। (देखिए स० प्र० का पञ्चायतन–देव पूजा प्रकरण.) यदि ऐसा है तो उनकी पूजा किस अङ्ग के द्वारा ही तो होगी। बताइये कि पिता का जनकत्व वस्तुतः किस अङ्ग में होता है ? और माता का जननीत्व वस्तुतः किस अङ्ग में होता है ? आपका उत्तर भी यही होगा कि यही दो अङ्ग भग लिंग ही वस्तुतः जननी जनक हैं। तब माता पिता को यदि पूजनीय माना जाता है, और उनकी पूजा उनके किसी अङ्ग की पूजा से होती है तो उनकी वास्तविक पूजा उन्हीं अङ्गों की पूजा से सम्पन्न होगी। पर प्राकृतिक शरीर होने से अपवित्रतावश लोक में इन अङ्गों की पूजा व्यवहार में नहीं होती, अतः नहीं की जाती। परः जगत के जननी जनक पार्वती परमेश्वर पवित्र देवता होने से उनके यह दोनों अङ्ग भी पवित्र हैं, अतः उनकी पूजा में भी न तो कोई दोष है, और न उपहासनीयता। यहां लिंग योनि अङ्गों में लज्जा मानी जाती है, अन्यत्र यहीं। इस प्रकार देवताओं के अङ्ग कहां नहीं है ? सर्वत्र हैं, पर उनके इन अङ्गों में भी कुछ उपहासनीयता वा लज्जा की बात नहीं, क्योंकि वे मनुष्य नहीं हैं।"

उपरोक्त लेख से स्पष्ट है कि पौराणिक विद्वान शिव लिंग को महादेव की मूत्रेन्द्रिय तथा जलहरी को पार्वती की भग स्वीकार करते हैं वे तो यहां तक आगे बढ़ गये हैं कि सन्तान को माता पिता की पूजा उनकी मूत्रेन्द्रियों की पूजा करके ही उनकी

वास्तविक पूजा करने का आदेश दे रहे हैं। हमारा निवेदन है कि वे पौराणिक सन्तानों को माता पिता के गुप्ताङ्गों पर रोली चावल चढ़ा कर मूत्रेन्द्रिय पूजा करने की कोई पुराण समर्थित शास्त्रीय पद्धति बनवाकर छपवा देवें, तो सनातनी लोग उनके अति कृतज्ञ होंगे।

सनातनी विद्वानों के मूर्खतापूर्ण तर्कों का यह एक उत्तम दृष्टान्त है जो ऊपर दिया गया है।

अन्त में कामुक शिवजी की चतुर्मुखी मूर्ति का रहस्य भी पाठक देख लेवें जो कि मन्दिरों में पूजी जाती है—

शिवजी के चार मुंह

तिलोत्तमा नाम पुरा ब्रह्मणायोषिदुत्तमा।
तिलं तिलं समुद्धृत्य रत्नानां निर्मिता शुभा ॥१॥
यतो यतः सुदती मामुपाधावदन्ति के।
ततस्ततो मुखं चारु ममदेवि विनिर्गतम् ॥३॥
तां द्विद्रक्षुरहं योगाच्चतुर्मूर्तित्वमागतः।
चतुर्मुखश्च संवृत्तो दर्शयन् योगमुत्तमम् ॥४॥

(महाभारत अनु० अ० १४१)

अर्थ—शिवजी ने कहा—पूर्व काल में ब्रह्मा ने एक सर्वोत्तम नारी की सृष्टि की थी। उन्होंने सम्पूर्ण रत्नों का तिल-तिल भर सार उद्धृत करके उस शुभ लक्षणा सुन्दरी के अंगों का निर्माण किया था। इसलिये वह तिलोत्तमा नाम से प्रसिद्ध हुई ॥१॥ वह सुन्दर दांतों वाली सुन्दरी निकट से मेरी परिक्रमा करती हुई जिस-जिस दिशा की ओर गई उस उस दिशा की ओर मनोरम मुख प्रकट होता गया ॥३॥ तिलोत्तमा के रूप को देखने की इच्छा से योगबल से मैं चतुर्मुख हो गया। इस प्रकार मैंने लोगों को उत्तमोत्तम योग शक्ति का दर्शन कराया ॥४॥

समीक्षा—तिलोत्तमा नाम की सुन्दरी स्त्री के रूप पर शिवजी इस कदर मोहित हो गये कि उनकी आंखें उस पर चिपक कर रह गईं। वह उनके चारों ओर जब घूमने लगीं तो अन्य देवता लोग उनकी मजाक न बनावें इसलिए उन्होंने सर घुमाकर उसे देखते रहने के बजाय अपने तीन तरफ तीन मुँह और बना लिये व उसके सौन्दर्य को तबियत भरकर देखते रहे। शिवजी की उसी कामातुर अवस्था में प्रगट हुए चार मुँह की नकल बनाकर चतुर्मुखी शिवजी की शिव मन्दिरों में आज भी पूजा होती है। यह शिवजी का रहस्य जब पाठकों पर प्रगट होगा तो वे इस पर हँसे बिना न रहेंगे। अपने ही पूज्य कामुक शिवजी की मजाक उड़ाने में पौराणिक विद्वानों ने कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है।

आशा है इन प्रमाणों से सभी को स्थिति स्पष्ट हो जावेगी और वे समझ सकेंगे कि शिव लिंग शिव मूत्रेन्द्रिय की नकल है। दारुवन में शिवजी ने व्यभिचार किया था। शिव लिंग को ज्योति लिङ्ग बताना गलत है तथा व्यभिचार के कारण शिवजी पर भारी मार पड़ी थी, यह भी पुराण ने स्पष्ट कर दिया है।

परिग्रहण क्रमांक 2.8.89
जिला वेद प्रचारिणी सभा,
होशियारपुर

देशबन्धु प्रेस, हाथरस

खंडन मंडन ग्रन्थ माला के ग्रन्थों की सूची

वैदिक यज्ञ विज्ञान	१.८०
कुरान दर्पण	२.००
गीता विवेचन	२.७५
मुनिसमाज मुख मर्दन	१.५०
टांक का शास्त्रार्थ	१.२५
अद्वैतवाद मीमांसा	१.००
वैदिकव्याख्यान माला(भाग१)	१.००
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	७५
पुराण किसने बनाये ?	७५
मूर्ति पूजा खण्डन	१.३५
संसार के पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न	१२
कुरान की विचारणीय बातें	४०
मृतक श्राद्ध खण्डन	३०
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	२५
बाइबिलपर सप्रमाण ३१प्रश्न	२५
ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	६०
अर्थ सहित वैदिक संध्या	२५
हनुमान जी बन्दर नहीं थे	१५
सनातन धर्ममें नियोग व्यवस्था	२५
अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	१०
नृसिंह अवतार वध	१२
ईसा मुक्ति दाता नहीं था	१०
विभिन्न मतों में ईश्वर	३०
स्वर्ग विवेचन	२०
माता पुत्री का सम्वाद	१.२०
खुदा का रोजनामचा	१५
दुर्गा पर नरबलि	२०

बाइबिल दर्पण	२.५०
भागवत समीक्षा	३.००
अवतार रहस्य	१.५०
जैन मत समीक्षा	१.६०
शिवलिंग पूजा क्यों ?	१.३५
प्रार्थना भजन भास्कर	१.००
ईश्वर सिद्धि	२.५०
माधवाचार्यको डबल उत्तर	७५
पौराणिक गप्प दीपिका	५५
कबीर मत गर्व मर्दन	६०
सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदड़ का उत्तर	४०
पुराणों के कृष्ण	४०
शिवजी के चार विलक्षण बेटे	३७
शास्त्रार्थ के चेलेन्ज का उत्तर	२५
मरियम और ईसा	१०
पौराणिक मुख चपेटिका	२०
खुदा और शैतान	१५
इसामत का पोलखाता	२०
गुरुडम के पाखण्ड	४०
मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	१०
ईसाईमत का पोलखाता	१०
कुरान खुदाई किताब नहीं है	१५
कुरान की छानबीन	
गीता पर ४२ प्रश्न	२५
भारतीय शिष्टाचार	१.००
नारी पर मजहबी अत्याचार	२०

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (एटा) उ० प्र० भारतवर्ष